द्वितीय अंक 2024-25

सुरभि

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

राजभाषा अनुभाग

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
पशुपालन और डेयरी विभाग
भारत सरकार

राजभाषा पत्रिका

सुरभि

द्वितीय अंक 2024

यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने का एक प्रयासमात्र है। इसमें व्यक्त विचार संबंधित रचनाकारों के अपने विचार हैं जिसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के आलोक में देखा जाए। इसके लिए विभाग, मंत्रालय या भारत सरकार उत्तरदायी नहीं है।

'सुरभि के अगले अंक के लिए पशुपालन और डेयरी विभाग के कार्मिकों की रचनाएं आमंत्रित हैं। रचनाएं भेजते समय अपना नाम, पदनाम, फोटो, कार्यालय का पूरा पता और टेलीफोन नं. भेजें।

सम्पर्क सूत्र : मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय

पशुपालन और डेयरी विभाग, कमरा नं. – 557,

'एच' विंग, कृषि भवन, नई दिल्ली–110001

टेलीफोन : 011–23070319

ई–मेल : ad-ol557@dahd.nic.in

नोट : सुरभि के द्वितीय अंक के बारे में आप अपने बहुमूल्य सुझाव डाक या ई–मेल द्वारा भेज सकते हैं।

मुख व पश्च पृष्ठ परिकल्पना : अमित शंकर, राघवेन्द्र नाथ त्रिपाठी और मनीष कुमार मीणा

राजभाषा पत्रिका

सुरभि

द्वितीय अंक 2024

प्रधान संरक्षक

डॉ. सुपर्णा शर्मा पचौरी
संयुक्त सचिव (राजभाषा)

संरक्षक

सर्बेश्वर माझी
निदेशक (राजभाषा)

प्रधान संपादक

स्वाति मेल्टी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सहायक संपादक

डॉ. नसीम अहमद
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
अमित शंकर
परामर्शदाता
राघवेन्द्र नाथ त्रिपाठी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संपादन सहयोग

मधुबाला
निजी सहायक
मनीष कुमार मीणा
आशुलिपिक

राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह
RAJIV RANJAN SINGH ALIAS LALAN SINGH

सत्यमेव जयते

पंचायती राज मंत्री
एवं मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री
भारत सरकार
Minister of Panchayati Raj and
Minister of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying
Government of India

संदेश

भाषा अभिव्यक्ति की प्राण शक्ति है। किसी भी भाषा के लिए यह आवश्यक है कि उसमें एक-दूसरे तक सहजता से बात पहुंचाने और भावों को अभिव्यक्त करने का अमूल्य गुण होना चाहिए। हमारी राजभाषा इस कसौटी पर खरी उतरती है। विधि, प्रशासन आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त विभिन्न शब्दों की अभिव्यक्ति के लिए तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म विचारों को प्रकट करने के लिए हिंदी भाषा में शब्दों, पदबंधों और अभिव्यक्तियों का अपार भंडार है जो निरंतर बढ़ता जा रहा है। प्रयोग से ही भाषा की क्षमता में वृद्धि और विकास होता है। अपने व्यक्तिगत कार्यों में नियमित रूप से हिंदी का प्रयोग करते रहने से राजभाषा हिंदी सहज ही जन-मानस की भाषा बन जाएगी।

2. पशुपालन और डेयरी विभाग की वार्षिक गृह पत्रिका 'सुरभि' के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे जानकारी मिली है कि 'सुरभि' पत्रिका के प्रथम अंक को काफी सराहा गया है और यह पत्रिका हिंदी के उत्तरोत्तर प्रचार एवं प्रसार में हर संभव योगदान दे रही है। ऐसी ही गतिविधियों से हिंदी का भविष्य उज्ज्वल और श्रेयस्कर होगा।

3. पत्रिका में साहित्य की विविध विधाओं के समावेश के साथ केंद्र सरकार की राजभाषा नीति का समुचित अनुपालन सराहनीय है। आशा है कि 'सुरभि' पत्रिका की पाठ्य सामग्री सुधी पाठकों के मन-मानस को अभिभूत करने एवं राजभाषा हिंदी की पूर्णरूपेण प्रतिष्ठा में अहम भूमिका निभाएगी।

शुभकामनाएं सहित।

(राजीव रंजन सिंह)

नई दिल्ली
30 सितम्बर, 2024

प्रो. एस. पी. सिंह बघेल
राज्य मंत्री
मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी
एवं
पंचायती राज मंत्रालय
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

Prof. S. P. Singh Baghel
Minister of State
Fisheries Animal Husbandry & Dairying
and
Ministry of Panchayati Raj
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि पशुपालन और डेयरी विभाग अपनी वार्षिक गृह पत्रिका **'सुरभि'** का द्वितीय अंक प्रकाशित कर रहा है।

भाषा और साहित्य के द्वारा विचारों की क्रांतियां हुआ करती हैं। जिस देश में अपनी भाषा में साहित्य रचना होती है, उस देश में, राष्ट्र की आत्मा में उच्च मूल्यों का सूत्रपात होता है। हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। अब तो हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा और जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। अतः इस भाषा का अधिकाधिक प्रयोग हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य ही नहीं नैतिक दायित्व भी है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन ही राजभाषा कार्यान्वयन का मूल तत्व है जिसके अनुपालन का दायित्व हम सब पर है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में **'सुरभि'** जैसी वार्षिक गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन काफी महत्वपूर्ण है। इस पत्रिका में प्रकाशित आलेख बहुत ज्ञानवर्धक और रचनाएं बेहद सुरुचिपूर्ण और संग्रहणीय हैं। मैं इस अवसर पर **'सुरभि'** पत्रिका के सफल और सतत प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

शुभकामनाओं सहित ।

(प्रो. एस. पी. सिंह बघेल)

नई दिल्ली
30 सितम्बर, 2024

अलका उपाध्याय, भा.प्र.से.
ALKA UPADHYAYA, IAS
सचिव
SECRETARY

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय
पशुपालन एवं डेयरी विभाग
Government of India
Ministry of Fisheries, Animal Husbandry & Dairying
Department of Animal Husbandry & Dairying
218, A-Wing, Krishi Bhawan
New Delhi-110001

संदेश

राष्ट्र की उन्नति का सीधा संबंध उसकी भाषा से होता है। लोकतंत्र में भाषा, सरकार और जनमानस के बीच संपर्क सूत्र का कार्य करती है। इसलिए लोकतंत्र को शक्तिशाली और प्रगतिशील बनाने के लिए, संघ सरकार के काम-काज में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग होना चाहिए।

राजभाषा हिंदी में कार्य करना राष्ट्र की सच्ची सेवा है। जो राष्ट्र अपनी भाषा में कार्य करते हैं वे सफलता के हर शिखर पर अपना परचम लहराते हैं। कारण यह है कि अपनी भाषा में संप्रेषण से हम एक-दूसरे के कथनों, सुझावों और विचारों को समझ कर उन्हें कार्य क्षेत्र में कार्यान्वित कर पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप कार्य की गुणवत्ता और मात्रा में सकारात्मक सुधार होता है और देश का सर्वांगीण विकास होता है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग में वृद्धि के लिए सतत प्रयासशील पशुपालन और डेयरी विभाग की वार्षिक पत्रिका 'सुरभि' का नया अंक, नव उत्कर्ष तथा ज्ञान भंडार का अतुलनीय संग्रह है जिसमें कहानी, कविता, लेख, साक्षात्कार और संस्मरणों का समुचित समन्वय किया गया है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में ऐसी साहित्यिक पत्रिका के प्रकाशन से विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि के कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने का सुअवसर मिलता है और अपनी हिंदी भाषा के प्रति गर्व की अनुभूति होती है। मुझे आशा है कि पाठक इस सुरुचिपूर्ण पठनीय सामग्री से लाभान्वित होंगे और राजभाषा हिंदी के प्रति अपने दायित्व को समझेंगे।

मैं विभाग की वार्षिक पत्रिका 'सुरभि' के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर सभी को और विशेष रूप से राजभाषा अनुभाग के समस्त अधिकारियों/ कर्मचारियों को उनके इस महती प्रयास के लिए बधाई देती हूँ और इसके अनवरत और सफल प्रकाशन की कामना करती हूं।

शुभकामनाओं सहित।

नई दिल्ली
7 अक्टूबर, 2024

अलका
(अलका उपाध्याय)

डॉ. सुपर्णा शर्मा पचौरी
Dr. Suparna Sharma Pachouri
संयुक्त सचिव
Joint Secretary

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय
पशुपालन एवं डेयरी विभाग
कृषि भवन, नई दिल्ली–110001
Government of India
Ministry of Fisheries Animal Husbandry & Dairying
Department of Animal Husbandry & Dairying
Krishi Bhawan, New Delhi-110001

संदेश

'सुरभि' पत्रिका का दूसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में विशेष रूप से सचिव (एएचडी) और अपने-अपने क्षेत्र के सफल प्रबुद्धजनों के साक्षात्कारों को संकलित किया गया है, जो अत्यंत ज्ञानवर्धक हैं। इस बार 'खबरों में हम' शीर्षक के अंतर्गत प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी) की प्रेस विज्ञप्तिओं के माध्यम से विभाग की महत्वपूर्ण गतिविधियों का ब्यौरा भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। साथ ही इस अंक में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित काव्य-पाठ में पुरस्कृत कविताओं तथा अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध को भी शामिल किया गया है।

मैं उम्मीद करती हूँ कि जितना हर्ष हमें इस अंक को संकल्पित करते हुए हुआ है, उतने ही उत्साह एवं रूचि से इसे पढ़ा जाएगा। राजभाषा हिन्दी को समर्पित हमारी यह एक छोटी पहल आपके सहयोग से ही सफल हो सकती है। इस अंक पर आपके सुझाव हमें आने वाले अंक को और बेहतर बनाने में उपयोगी साबित होंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ. सुपर्णा शर्मा पचौरी)

नई दिल्ली
07 अक्तूबर, 2024

संपादक की कलम से...

भाषा भावों और विचारों की संवाहक होती है। भारत जैसे बहुभाषाई और बहुविध संस्कृति वाले देश में निज भाषा का महत्व यूं भी बहुत बढ जाता है। भाषाविदों द्वारा सर्वाधिक रूप से बोली और समझी जाने वाली हिंदी भाषा की अपार लोकप्रियता और प्रयोग के स्तर पर इसकी वैज्ञानिकता व प्रचुर शब्द संपदा के आधार पर इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया था।

सफल भाषा वही है जो अन्य भाषाओं को स्वयं में आत्मसात करते हुए आगे बढ़ती है। हमारी हिंदी में भी अरबी, फारसी और उर्दू जैसी अन्य भाषाओं के शब्द यूं ही समा गए और हिंदी का परिवार बनकर उसको सम्पन्न कर गए। भाषा का हर शब्द सार्थक होता है और हर शब्द के पीछे एक स्मृति और संस्कार तो होता ही है, एक गहरा सरोकार भी होता है।

वैश्वीकरण के इस दौर में बेशक आज अंग्रेजी का वर्चस्व देखने को मिलता हो पर आज भी हमारी राजभाषा हिंदी, अंग्रेजी शब्दों को अपने अभ्यास, व्यवहार और प्रकृति के अनुसार ढालने में पूर्ण समर्थ है। यह कहना गलत न होगा कि इसके विराट स्वरूप को पहचान कर ही विभिन्न भाषा-भाषी विद्वानों, चिंतकों और राजनीतिज्ञों ने हिंदी भाषा को राजभाषा बनाने की सिफारिश की। किसी ने कहा भी है कि जिस देश की जो भाषा है उसी भाषा में वास्तव में देश का न्याय, कानून और राजकाज होना चाहिए।

हिंदी स्नेह की भाषा है, हिंदी हृदय की भाषा है और यही उसकी शक्ति है। इसी शक्ति के बल पर ही वह राजभाषा के गौरवशाली पद पर आसीन हुई है। राजभाषा हिंदी की विरासत समृद्ध है और भविष्य उज्ज्वल और श्रेयस्कर पर इस भविष्य की नींव को सुदृढ़ बनाने का दायित्व हम पर है। यह चिरंतन सत्य है कि नियमों/अधिनियमों के जोर पर नहीं बल्कि अंत:करण की प्रेरणा से अपनी राजभाषा हिंदी में कार्य करने के प्रति उत्साह से ही यह और निखरेगी।

भाषा को आसान बना कर जन-जन तक पहुंचाने के अपने प्रयास की एक कड़ी के रूप में 'सुरभि' का द्वितीय अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। साहित्य की विविध विधाओं जैसे साक्षात्कारों, सारगर्भित मनोरंजक लेखों, कविताओं के साथ-साथ विभाग की उपलब्धियों को भी शामिल किया गया है। आशा है कि 'सुरभि' का नया कलेवर आपको पसंद आएगा|

शुभकामनाओं सहित।

(स्वाति मेल्टी)

नई दिल्ली
07 अक्टूबर, 2024

विषय सूची

सुरभि के इस अंक में...

क्र.सं.	रचना का शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ
	साक्षात्कार		
1.	सचिव डीएएचडी के साथ एक साक्षात्कार	रूपांतरण–राघवेन्द्र नाथ त्रिपाठी	1
2.	गिर नस्ल के प्रगतिशील पशुपालक श्री रामनारायण सिंह चौधरी जी का साक्षात्कार	संपादन– बलबीर गैना	6
3.	नराकास के संबंध में एक परिचय –साक्षात्कार डॉ. जिमली सरमाह से	संपादन– अमित शंकर	9
	लेख		
4.	डेयरी फार्मिंग में सेक्स–सॉर्टेड सीमन का उपयोग	डॉ. अतुल्या एम.	13
5.	अनुवाद के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली नवीन प्रौद्योगिकियां	डॉ. नसीम अहमद	15
6.	मोबाइल पशु चिकित्सा इकाईयां (एमवीयू): एक दूरदर्शी पहल	संपादन व अनुवाद– वर्तिका राय	21
7.	पशु कल्याण क्षेत्र में भारतीय जीव–जन्तु कल्याण बोर्ड का योगदान	डॉ. सुजीत कुमार दत्ता	24
8.	गौमूत्र फिनाइल ने बदली जिंदगी– डॉ. सुनील कुमार भांडेकर से बातचीत	संपादन– डॉ. सुनील कुमार भांडेकर	28
	कविताएं		
9.	जिंदगी कैद है सीता की तरह	पंकज कुमार सिंह	31
10.	कुछ अपनी, कुछ साहब की	सुनील कुमार	32
11.	नारी पीडा– संघर्ष और सम्मान	अंतिमा सोनी	33
12.	नारियाँ उपेक्षित हैं	आले अहमद	34
13.	क्षीर गंगा	डॉ. आशुतोष सिंह	35
14.	मेरा उत्तराखंड	डॉ. शीतल पन्त	36
15.	धरा का करो सिंगार	डॉ. हिमांशु शर्मा	37
16.	बात हिंदी की	मधुबाला	38
	निबंध		
17.	**भविष्य दर्पण–भारत/2047(मेरी दृष्टि से)**	डॉ. विवेक कुमार सरोज	39
	विविध		
18.	यात्रा वृतांत	स्वाति मेल्टी	41
19.	आपको देखने आये हैं साहब	डॉ. मनीष कुमार मौर्य	44
20.	सर्पदंश	डॉ. विवेक कुमार सरोज	47
21.	राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार में प्रथम स्थान	मनीष कुमार मीणा	49
	खबरों में हम		
22.	पशुपालन और डेयरी विभाग संबंधी मंत्रीमंडल के निर्णय		51
23.	पीआईबी		53
	चित्र दीर्घा	सोनू कुमार	78

सचिव डीएएचडी के साथ एक साक्षात्कार

सुश्री अलका उपाध्याय, सचिव पशुपालन और डेयरी विभाग का साक्षात्कार डॉ. पी. महेश, संयुक्त आयुक्त एवं निदेशक, पशुपालन उत्कृष्टता केंद्र, बेंगलूरु द्वारा पॉडकास्ट के लिए किया गया। प्रस्तुत है उसी साक्षात्कार के कुछ मुख्य अंश.....

रूपांतरण–राघवेन्द्र नाथ त्रिपाठी,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
(मुख्यालय)

• नमस्कार! मेरा नाम डॉ. महेश है, मैं पशुपालन उत्कृष्टता केंद्र, बेंगलुरु, पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार में संयुक्त आयुक्त एवं निदेशक हूं। मुझे गर्व है कि मुझे भारत सरकार की वरिष्ठ आईएएस अधिकारी मैडम सुश्री अलका उपाध्याय से वार्तालाप करने का सौभाग्य मिला। आप इस विभाग का नेतृत्व कर रही हैं और विकास के कई कदम उठा रही हैं। मैं पशुपालन उत्कृष्टता केन्द्र की ओर से इस ऐतिहासिक पॉडकास्ट के लिए आपका स्वागत करता हूं। मैडम, आप अपने अनुभव के बारे में कुछ बताएं?

सर्वप्रथम डॉ. महेश, इस पॉडकास्ट के लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। बेंगलूरु की मेरी पिछली यात्रा के दौरान जब आपने मुझे अपने पॉडकास्ट के बारे में बताया तो मैं यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित और बहुत खुश हुई थी कि इस पॉडकास्ट को कितनी अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। मेरी सिविल सेवक के रूप में एक लंबी यात्रा रही है। सबसे पहले महाराष्ट्र कैडर फिर मध्य प्रदेश कैडर और 2016 से मैं भारत सरकार में कार्यरत हूं। मैंने जिलाधिकारी के रूप में, क्षेत्रीय पोस्टिंग में भी काम किया है। उसके बाद मैंने राज्य के स्वास्थ्य मंत्रालय और वित्त विभाग में काम किया है। मध्य प्रदेश सरकार में ग्रामीण सड़कों से संबंधित लगभग 5 साल का लंबा कार्यकाल रहा। ग्रामीण विकास मंत्रालय, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय में भी रही। अतः आप देख सकते हैं कि अवसंरचना से संबद्ध क्षेत्र में मेरा बहुत लंबा कार्यकाल रहा है और हमेशा मैंने समुदायों के साथ काम किया है, चाहे वह राज्य में स्वास्थ्य सचिव और स्वास्थ्य आयुक्त के रूप में मेरा कार्यकाल हो या यहाँ एनआरएलएम के सीईओ के रूप में। यह मेरे लिए एक बहुत सुखद यात्रा रही है। पिछले एक साल में मुझे इस विभाग में सचिव के रूप में नियुक्त किया गया। कृषि और पशुधन के बारे में मेरा कोई पूर्व अनुभव नहीं था लेकिन अब मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि मैं इस क्षेत्र में पूरी तरह से तल्लीन हो गई हूँ और मुझे लगता है कि यह वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण (उभरता हुआ) क्षेत्र है।

• मैडम, बहुत–बहुत धन्यवाद, हम भाग्यशाली हैं कि आप हमारा नेतृत्व कर रही हैं। 'उभरते हुए' क्षेत्र के बारे में बात करें तो बहुत से लोग सोचते हैं कि पशुपालन एक छोटा क्षेत्र है, जबकि हमारा क्षेत्र ऑटोमोबाइल क्षेत्र से दोगुना योगदान (लगभग 15 लाख करोड़ रु.) कर रहा है, जो एक रिकार्ड है। अतः मेरी जिज्ञासा है कि भारत की आजादी के 100वें वर्ष में विभाग की प्राथमिकताएं क्या हैं?

जहां तक कृषि और संबंधित क्षेत्र का संबंध है, वास्तव में इस क्षेत्र ने सबसे अधिक सकारात्मक वृद्धि दिखाई है। हम पिछले 10 वर्षों में प्रति वर्ष लगभग 6 से 7 प्रतिशत की दर से बढ़ रहे हैं। जहां तक जीवीए का संबंध है, हम लगभग 30 प्रतिशत की दर से विकास कर रहे हैं। मत्स्यपालन के क्षेत्र में भी हम नीली क्रांति के कगार पर हैं। यह क्षेत्र भी लगभग 7 प्रतिशत की दर से वृद्धि कर रहा है। अतः मैं यह बहुत गर्व से दावा करती हूं कि हम (भारत) पूरी दुनिया की डेयरी हैं, हम दूध के सबसे बड़े उत्पादक हैं। हमारा उत्पादन अब लगभग

23.2 मिलियन मीट्रिक टन है। भारत अंडे का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और मांस का पांचवा सबसे बड़ा निर्यातक है और यह यात्रा अभी भी जारी है। 70 के दशक में श्वेत क्रांति के रूप में शुरू हुआ विकास निरंतर और बहुत सकारात्मक रूप में जारी रहा है। एक और बात जिसका मैं यहां उल्लेख करना चाहूंगी वह यह भी है कि अंतिम छोर पर सामाजिक आर्थिक सशक्तीकरण कैसे हो रहा है? इस क्षेत्र में लगभग 10 करोड़ ग्रामीण परिवार शामिल हैं और लगभग 70 प्रतिशत डेयरी कार्य या डेयरी उद्योग में महिलाओं की भागीदारी है। यह कार्य व्यापक क्रांति के साथ शुरू हुआ। अब महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। लगभग 48,000 डेयरी सहकारी समितियां महिलाओं द्वारा संचालित हैं और वे महिलाओं के स्वामित्व वाली डेयरी सहकारी समितियां हैं। महिलाओं के हाथों में दिन–प्रतिदिन जो नकदी आती है, वह इसी क्षेत्र से आती है। कृषि से होने वाली आय के उपयोग का निर्णय पुरूषों के पास होता है। लेकिन दिन प्रतिदिन के आधार पर

लाख करोड़ रुपये का है। आप इस दैनिक क्रांति के बारे में कुछ बताएं। यह भारत में कैसे घटित हुई है?

हाँ, यह आपने एक अच्छी बात उठाई है। यह कुछ ऐसा है जिसका उपयोग हमें अपने पक्ष में अधिक से अधिक बजट का लाभ उठाने के लिए करना चाहिए। क्योंकि डेयरी उद्योग में दूध का उत्पादन मूल्य आज लगभग 12 लाख करोड़ रुपये है, लेकिन डेयरी उद्योग में सकल भागीदारी अब लगभग 16 लाख करोड़ रुपये की है जोकि बहुत बड़ी है। जैसा कि आपने स्वयं कहा कि चीनी चावल, गेंहू आदि से जो योगदान आता है वह इससे बहुत कम है जो हम अभी उत्पादन कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य आज 23.2 मिलियन मीट्रिक टन का है। हमने नीतियों को इस तरह से तैयार किया है कि हमारा आकार वर्ष 2030 तक लगभग 300 मिलियन मीट्रिक टन का हो। जिस दर से हम आज बढ़ रहे हैं, उत्पादकता में मामूली वृद्धि के

महिलाओं के हाथ में आने वाले पैसे से वे अपने बच्चों की शिक्षा, उद्यम स्थापित करने, खुद को आर्थिक रूप से स्वतन्त्र बनाने और बचत करने का कार्य करती हैं। यही श्वेत क्रांति की सच्ची सफलता है।

• मैं कहूंगा कि यह दैनिक राजस्व मॉडल है, क्योंकि इससे लोगों को प्रतिदिन पैसा मिलता है, यही इसकी खूबसूरती है। मैडम, बहुत से आम लोग यह नहीं जानते कि भारत में उत्पादित दूध का मूल्य वास्तव में चावल, गेहूं और चीनी के मूल्य से भी अधिक है। हम जानते हैं कि दूध का क्षेत्र लगभग 10

साथ यह उद्योग वर्ष 2047 तक 40 लाख करोड़ रुपये का उद्योग बन जाना चाहिए। यह एक बहुत बड़ी छलांग होगी। हमें लगातार किसानों के साथ जुड़ने की जरूरत है, हमें वैज्ञानिक स्तर पर उत्पादकता में सुधार करने की जरूरत है। उत्पादन के मामले में हम बहुत ऊंचे हैं लेकिन अगर आप आज डेयरी क्षेत्र की उत्पादकता को देखें या यहां तक कि पोल्ट्री में भी देखें तो हम उतने अच्छे नहीं हैं या हम उतने कुशल नहीं हैं। इसलिए हमें यह दक्षता लाने की जरूरत है, इस दक्षता को लाने का तरीका थोड़ा आनुवंशिक इंजीनियरिंग के माध्यम से भी होकर जाता है जैसे कि हमारी देशी नस्लों के संरक्षण के माध्यम से। संकर नस्ल ने निश्चित रूप से बहुत

अधिक उत्पादन हेतु आश्वस्त किया है लेकिन साथ ही हम यह भी देख रहे हैं कि वे रोगों से भी प्रभावित हैं। आने वाले समय में उत्पादकता में गिरावट आ सकती है। हमने जो बहुत दिलचस्प बात देखी वह यह थी कि जबकि हमारी वृद्धि लगभग 6 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से है, पश्चिमी दुनिया या प्रगतिशील देश जहां बहुत अधिक दूध उत्पादन कार्य हो रहा था वे केवल 2 प्रतिशत की दर से बढ़ रहे हैं, इसलिए यह हमारे लिए एक बड़ा लाभ है। इसलिए अब, अगर हमारे पास ऐसी चीजें हैं, तो हमें गायों और भैंसों की बोवाइन आबादी में वृद्धि करनी चाहिए। सेक्स सॉर्टेड सीमेन, कृत्रिम गर्भाधान, इनविट्रो फर्टिलाइजेशन आदि तकनीकें हमारे पास हैं। हम लगातार इन तकनीकों पर काम कर रहे हैं तथा इन्हें किसानों के बीच लोकप्रिय बनाया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि जहां तक उत्पादकता का सवाल है, हम इसमें भी आगे बढ़ेंगे।

• बहुत बहुत धन्यवाद मैडम ! यदि हम बात करें तो डेयरी और कुक्कुट पालन के अलावा पशुपालन में अन्य आजीविका वाले क्षेत्र भेड़, बकरी और सुअर हैं जो व्यवसाय और आय दोनों प्रदान कर रहे हैं। मैडम इसके लिए क्या – क्या योजनाएं हैं, जो भारत सरकार ने हमारे ग्रामीण युवा महिलाओं और उद्यमियों के लिए शुरू की हैं।

इस हेतु अनिवार्य रूप से हमारे पास राष्ट्रीय पशुधन मिशन है। राष्ट्रीय पशुधन मिशन छोटे रूमिनेंट्स के लिए है। हमारे देश में कुल पशुधन आबादी लगभग 54 करोड़ है जिसमें से 20 करोड़ छोटे रूमिनेट्स हैं। वर्ष 2019–20 में हम राष्ट्रीय पशुधन मिशन लेकर आए। राष्ट्रीय पशुधन मिशन के उद्यमिता कार्यक्रम में हम किसानों को 50 प्रतिशत सब्सिडी देते हैं। पिछले 3–4 वर्षों में भेड़ और बकरी उद्योग में निवेश बहुत बढ़ गया है। हमारे पास बड़ी संख्या में परियोजनाएं हैं जो शुरू की गई हैं। फिर से इसमें से बहुत सारी सफलता की कहानियां सामने आई हैं। इसके साथ–साथ ही हम आनुवंशिक सुधार भी कर रहे हैं। पहले कृत्रिम गर्भाधान इन छोटे रूमिनेंट्स के बीच नहीं हो रहा था हमने इसे भी शुरू किया है। छोटे रूमिनेंट्स के लिए टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किया गया है। जहां तक सुअर का संबंध है आप अच्छी तरह से जानते हैं कि पूरा उत्तर–पूर्व काफी हद तक इस क्षेत्र पर निर्भर है और इस क्षेत्र में अच्छे सुअर फार्म भी हैं।

पिछले वर्ष बीमारी के फैलने की घटनाओं के कारण कुछ आबादी कम हो गई, लेकिन अब हम फिर से उस क्षेत्र में अधिक सुअर इत्यादि को शामिल करने की प्रक्रिया में हैं। मुझे लगता है कि यह क्षेत्र और भी महत्वपूर्ण है, सबसे पहले तो, ऊन के प्रयोजनों के लिए हमारी अच्छी गुणवत्ता वाली भेड़ों का महत्व और दूसरा बकरी के दूध के बारे में तो आप जानते हैं कि इसके बहुत बड़े उपचारात्मक या स्वास्थ्य लाभ हैं। अतः हम कुछ छोटे–छोटे प्रयास कर रहे हैं, यहां काम करने की बहुत गुंजाइश है। हमें उद्यमियों के साथ काम करने और बकरी के दूध की एक मूल्य श्रृंखला बनाने की जरूरत है। एनएलएम इसमें बहुत उपयोगी होगा। राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अलावा हमारे पास पशुपालन अवसंरचना विकास निधि (एआईडीएफ) भी है जिसमें हम 3 प्रतिशत की ब्याज सब्सिडी देते हैं। कुछ उद्यमियों ने इसके तहत भेड़ और बकरी फार्म भी बनाए हैं। कपड़ा मंत्रालय के साथ अब हम एक ऐसी प्रणाली बनाने के लिए बहुत प्रबलता से काम करने की कोशिश कर

रहे हैं जहां हम अपने विभाग के माध्यम से अच्छी गुणवत्ता वाली मैरिनो भेड़ और अच्छी गुणवत्ता वाली पश्मीना बकरियां भी शामिल कर सकें, ताकि हम जो बहुत अच्छी गुणवत्ता वाली पश्मीना (जो कि लद्दाख का जीआई टैग है) का उत्पादन करते हैं, उसके उत्पादन में हम और अधिक सक्षम हों। एक हस्तशिल्प उद्योग के रूप में इसका बहुत अधिक विकास होना तय है।

• **बहुत बहुत धन्यवाद मैडम, एक अलग मंत्रालय बनने के बाद हम आगे बढ़ रहे हैं, पशुपालन क्षेत्र पर फोकस भी बढ़ा है। हम आप भारत सरकार के बजटीय प्रावधानों और फ्लैगशिप योजनाओं के बारे में जानना चाहते हैं ?**

मैं सबसे पहले आपको यह बताना चाहूंगी कि हमारे पास बजट की कोई बाधा नहीं थी। हालांकि हम अपने बजट का उपयोग नहीं कर पाए हैं, क्योंकि हमारे कार्यक्रम अभी विकसित हो रहे थे, वे लोगों के लिए नए कार्यक्रम थे। वित्तीय प्रक्रियाओं, बजटीय प्रक्रियाओं की समझ बनाने के लिहाज से इसमें कुछ समय लगा, इसी वजह से हम अपने फंड का पूरी तरह से उपयोग नहीं कर पाए। लेकिन मुझे यकीन है कि अब हम एक तरह से अच्छी स्थिति में होंगे क्योंकि हमारी योजनाएं लोकप्रिय हो गई हैं, लोग इसके बारे में जानते हैं। मैं सिर्फ इतना कहना चाहूंगी कि यह निर्भर करता है कि हम कितना व्यय कर सकते हैं और भारत सरकार की योजनाओं पर हम कितनी जल्दी इसका व्यय कर सकने में सफल रहते हैं। हमारे पास मोटे तौर पर तीन या चार बड़ी योजनाएं हैं। एक पशुधन स्वास्थ्य कार्यक्रम है, मानव स्वास्थ्य की तरह ही पशुधन स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण है और विशेष रूप से जूनोटिक रोगों आदि के उद्भव के संदर्भ में देखें तो 'कोविड' अभी हाल की घटना है जिसने वास्तव में दुनिया को हिला दिया है। इसलिए हम पशुधन स्वास्थ्य कार्यक्रम में निवेश कर रहे हैं। इसमें दो घटक हैं; पहला रोग नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम, जिसमें तीन प्रकार के रोगों जैसे पीपीआर, एफएमडी, ब्रूसेला से टीकाकरण हेतु 100 प्रतिशत सहायता प्रदान करते हैं। इसमें हमारे सामने चुनौतियां थीं क्योंकि वैक्सीन उत्पादन और वैक्सीन की गुणवत्ता चिंता का विषय थीं। उसके बाद जब हमने एफएमडी के लिए टीकाकरण के लिए यह कार्यक्रम शुरू किया तो हमारे पास गुणवत्ता की समस्याएं थीं। लेकिन मुझे यहां साझा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि इस दौरान दो चीजें हुई हैं, एक विभाग के रूप में हमें पिछले साल से निर्बाध गुणवत्ता वाले टीके मिल रहे हैं और दूसरा हमने एफएमडी के लिए अपने लगभग 80 करोड़ गोपशुओं की आबादी का टीकाकरण किया है। दो राज्य कर्नाटक और तमिलनाडु पहले ही टीकाकरण के पांचवें चरण में पहुँच गए हैं और लगभग 16 राज्यों ने टीकाकरण का चौथा चरण पूरा कर लिया है। अतः हम अब बहुत अच्छी स्थिति में हैं। प्रत्येक टीकाकरण राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन में दर्ज किया जा रहा है और गुणवत्ता के उपाय किए जा रहे हैं। दूसरी चीज जिसका मैं यहां उल्लेख करना चाहती हूं और बहुत गर्व के साथ कहना चाहती हूं कि हमारे सभी टीके भारत में बने हैं। अतः हम आत्मनिर्भरता की स्थिति में पहुंच गए हैं। जहां तक पशु टीकों का संबंध है, अब हम जरूरत पड़ने पर पड़ोसी देशों को कुछ दवाइयां निर्यात करने की स्थिति में भी होंगे। अन्य पशुधन स्वास्थ्य कार्यक्रम जो हम करते हैं, वह राज्यों को संचारी रोगों पर नियंत्रण और उनके अस्पतालों की अवसंरचना आदि को सुदृढ़ करने में सहायता करता है। इस हेतु विभाग द्वारा की गई एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहल मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयां हैं, जहां सभी राज्यों को ये मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयां प्रति एक लाख आबादी पर एक एमवीयू की दर से दी गई हैं। लगभग 3,500 एमवीयू अब कार्यरत हैं, हमारा लक्ष्य लगभग 4,300 का था। अतः अधिकांश राज्य एमवीयू की खरीद कर रहे हैं और संचालन आदि को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया में हैं। एमवीयू हेतु आने वाली सभी कॉल रिकॉर्ड की जाती हैं और सभी सेवाएं रिकॉर्ड की जाती हैं तथा बहुत अच्छे प्रयास किए जा रहे हैं। हम राज्यों को अन्य रोगों के लिए 60–40 के साझाकरण आधार पर सहायता भी देते हैं, जो राज्यों के लिए महत्वपूर्ण है।

इसके अलावा हमारे पास राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना है जिसका मुख्य उद्देश्य विशेषकर भारतीय गोपशुओं में बेहतर उत्पादकता विकसित करना है। कृत्रिम गर्भाधान अब सुव्यवस्थित है, हमने सेक्स सॉर्टेड सीमेन संबंधी मुद्दे को भी संबोधित किया है। इससे बेसहारा पशुओं की समस्या का समाधान करने में भी मदद मिलेगी क्योंकि आजकल नर गोपशुओं को अहमियत नहीं दी जाती और उन्हें सड़कों पर छोड़ दिया जाता है। इसलिए मुझे लगता है कि अधिक मादा आबादी होने से बेसहारा पशुओं की यह समस्या भी कम होगी। हम इस कार्यक्रम को दो बहुत ही महत्वपूर्ण आउटरीच कार्यकर्ताओं के माध्यम से संचालित करते हैं, एक मैत्री हैं

जिन्हें कृत्रिम गर्भाधान के लिए प्रशिक्षित किया जाता है और फिर हमारे पास ए–हेल्प भी है, जो मान्यता प्राप्त पशुपालन कार्यकर्ता भी हैं, जो पशुधन की उत्पादकता के साथ–साथ पशुपालन प्रथाओं को भी देखते हैं। इसलिए ए–हेल्प को अब पूरे भारत में ले जाया गया है जहां हम राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा प्रशिक्षित पशु सखियों के कौशल को उन्नत कर रहे हैं। उन्होंने ज्ञान अर्जित किया है। जिस तरह से वे गांव स्तर पर लोगों के साथ बातचीत करने और उनकी मदद करने में सक्षम हैं वह काफी संतोषजनक है।

इस प्रकार ये हमारे दो कार्यकर्ता हैं जो हमें इस क्षेत्र में काम करने में मदद कर रहे हैं। इसके अलावा हमारे पास राष्ट्रीय पशुधन मिशन है जिसके बारे में मैंने आपको बताया और तीसरा पशुपालन अवसंरचना विकास निधि है। इसमें हम 3% की सहायता देते हैं, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि लगभग 400 से 500 करोड़ रुपये के निवेश के साथ ही हम निजी क्षेत्र से भी लगभग 24,000 करोड़ रुपये का निवेश प्राप्त करने में सक्षम हैं। अतः यह एक बहुत अच्छी योजना है जहाँ बैंकों द्वारा परियोजना के प्रदर्शन या पूर्णता पर उचित कार्रवाई की जाती है। फिर हम यह 3% ब्याज सबवेंशन भी देते हैं। अतः यह कुछ ऐसे कार्य हैं जो हम कर रहे हैं।

.....शेष साक्षात्कार लिंक–

https://www.youtube.com/watch?v=OBh0VI1sffk&t=2321s पर उपलब्ध है जहां इसे विस्तारपूर्वक देखा जा सकता सकता है।

★★★★

रविकर हिम खंडों पर पड़ कर हिमकर कितने नये बनाता,
द्रुतकर चक्कर काट पवन भी फिर से वहीं लौट आ जाता।
नीचे जलधर दौड़ रहे थे सुन्दर सुर–धनु माला पहने,
कुंजर–कलभ सदृश इठलाते चमकाते चपला के गहने।

कामायनी – जय शंकर प्रसाद

श्री रामनारायण सिंह चौधरी, गिर नस्ल के प्रगतिशील पशुपालक के साथ एक साक्षात्कार

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की ज्यादातर आबादी गांवों में रहती है। ऐसे में रोजगार के अवसर काफी कम होते हैं। लेकिन गांव में रहकर भी देसी नस्ल (गिर) का पालन कर रोजगार कमाया जा सकता है। साथ ही दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर उत्पन्न कर आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सकता है तथा मान–सम्मान व ख्याति प्राप्त की जा सकती है। यदि कोई व्यक्ति अपनी पृष्ठभूमि से जुड़े रहकर रोजगार का कोई साधन ढूंढ रहा है, तो वह स्वयं देसी नस्ल के पशुओं को वैज्ञानिक तरीके से पालकर डेयरी फार्मिंग में अपनी किस्मत आज़मा सकता है। ऐसे ही एक प्रगतिशील गिर पशुपालक श्री रामनारायण सिंह चौधरी, पुत्र श्री बत्रा सिंह चौधरी, ग्राम छोटी होकरा, जिला अजमेर, राजस्थान के निवासी देसी नस्ल (गीर) की गायों का वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन और डेयरी फार्मिंग

कर स्वयं तो अच्छी कमाई कर ही रहे हैं, साथ ही वो इससे दूसरों को रोजगार के अवसर भी दे रहे हैं। श्री रामनारायण सिंह चौधरी लगातार वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन कर राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम रोशन कर रहे हैं।

श्री रामनारायण सिंह चौधरी का आर्थिक–सामाजिक स्तर तो बढ़ा ही उन्हें राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर बहुत नाम भी मिला। हमारे अजमेर स्थित अधीनस्थ कार्यालय के प्रभारी, श्री बलबीर सिंह गैना ने राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत वर्ष 2017 के पश्चिम मण्डल के राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार विजेता श्री रामनारायण सिंह चौधरी से बातचीत की। आइए हम भी इस बातचीत का हिस्सा बनें और उनके बारे में जानें:

बलवीर गैना, सहायक पंजीकार
(केंद्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर)

- **आप कब से पशुपालन कर रहे हैं?**

  मैं वर्ष 2005 से लगातार अपने फार्म 'सुरभि' में पशुपालन कर रहा हूँ।

- **आपके पास कितने पशु हैं?**

  वर्तमान में मेरे पास गिर नस्ल के कुल 92 पशु हैं।

- **आपने पशुपालन के लिए गिर नस्ल का ही चयन क्यूँ किया?**

  गिर नस्ल दूध उत्पादन में अपनी उच्च क्षमता के लिए प्रसिद्ध है। ये पशु विभिन्न जलवायु के लिए अनुकूलित होते हैं और गर्म स्थानों पर भी आसानी से रह सकते हैं या पाले जा सकते हैं। इसीलिए मैंने गिर नस्ल की गायों का चयन किया।

- **आप केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना अजमेर के संपर्क में कबसे हैं?**

  मैं वर्ष 2011 से केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, भारत

सरकार, पशुपालन और डेयरी विभाग, अजमेर के संपर्क में हूँ।

- **क्या आपको केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना से कोई लाभ हुआ?**

जी हाँ, हमें केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर के माध्यम से पशु वंशावली एवं दूध उत्पादन रिकार्ड रखने में सहायता मिली, पशुपालक प्रचार एवं शिविर के माध्यम से पशु प्रजनन, प्रबन्धन एवं संतुलित आहार के बारे में जानकारी मिली। इससे न केवल भारतीय गौवंश की औसत दूध उत्पादकता बढ़ी बल्कि मेरे व मेरे परिवार का आर्थिक, सामाजिक स्तर भी बढ़ा एवं राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर नाम मिला।

- **आपको केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर के माध्यम से दूध उत्पादन रिकार्ड रखने से क्या फायदा हुआ?**

पहले हम प्राचीन पारंपरिक तरीके से पशुपालन करते आ रहे थे। परंतु केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर से पशु वंशावली एवं दूध उत्पादन रिकार्ड रखने की जानकारी मिली। जिससे विशेष रूप से मेरे गिर नस्ल के पशुओं के दूध उत्पादन में वृद्धि हुई, गिर नस्ल के गुणों में सुधार हुआ, पंजीकृत पशु एवं उसकी संतति के विक्रय से हमको मनचाहा मूल्य मिला। पंजीकृत गिर नस्ल के बछड़ों से भी आय प्राप्त होने लगी।

- **पंजीकृत गिर नस्ल एवं उसकी संतति से किस प्रकार से आय में बढ़ोत्तरी हुई?**

पहले मेरे पास उच्च गुणवत्ता वाली गिर गायों का उत्पादन रिकॉर्ड नहीं था। इसलिए गिर गाय व उसकी संतति का विक्रय कठिन होता था। यदि विक्रय होता भी था तो उसकी सही कीमत नहीं मिलती थी। परंतु केन्द्रीय पशु पंजीकरण योजना, अजमेर द्वारा उच्च गुणवत्ता वाले नस्ल के पशुओं का दूध अभिलेखन द्वारा पंजीकरण करने से बछड़ों की मांग भी आने लगी, एवं उच्च दाम भी मिलने लगे।

- **आप गिर नस्ल के बछड़े कहाँ–कहाँ भेजते हैं?**

मैंने पंजीकृत गिर नस्ल के बछड़े नस्ल सुधार हेतु हिमीकृत वीर्य उत्पादन, लिबर्टी फार्म, विभिन्न गौशालाओं एवं पशुपालकों को बेचे, जिससे नस्ल में सुधार हुआ व अन्तः प्रजनन पर रोक लगी।

- **वर्तमान में आपके फार्म पर लगभग कितना दूध उत्पादन हो जाता है?**

वर्तमान में मेरे फार्म पर प्रतिदिन लगभग 225 कि.ग्रा. दूध का उत्पादन किया जा रहा है।

- **आप गिर नस्ल के दूध को कहाँ–कहाँ बेचते हैं?**

मेरे द्वारा गिर नस्ल के दूध की अजमेर शहर में 80 रुपये प्रति ली. के हिसाब से घर–घर आपूर्ति की जा रही है। जिससे मुझे गिर नस्ल के दूध का सही मूल्य मिल रहा है व उपभोक्ताओं को शुद्ध दूध मिल रहा है।

- **क्या आपको कभी पशुपालन, डेयरी विभाग भारत सरकार द्वारा कोई प्रोत्साहन/ पुरस्कार/ ईनाम मिला है?**

जी हाँ! मुझे भारत सरकार, पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत वर्ष 2017 में पश्चिमी मण्डल से द्वितीय राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार से तत्कालीन माननीय मंत्री महोदय द्वारा सम्मानित किया गया था। जिसमें मुझे 3 लाख रुपये व प्रमाण पत्र भी प्राप्त हुआ।

- **क्या राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार के अतिरिक्त भी आपको कोई प्रमाण पत्र/ प्रोत्साहन/ पुरस्कार/ ईनाम मिला है।**

जी हाँ, पशुपालन विभाग राजस्थान सरकार द्वारा भी राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय एवं उप–खंड स्तर पर कई पुरस्कार दिये जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त मेरे द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पुष्कर पशु मेले में विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रत्येक वर्ष भाग लिया जाता है, जिसमें कई प्रमाण पत्र व प्रशस्ति पत्रों से नवाजा जा चुका हूँ।

- **क्या आपके फार्म की प्रशंसा सुनकर उसे देखने के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं?**

जी हाँ, यहां बड़े–बड़े अधिकारी भी आते हैं। संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप–समिति द्वारा दिनांक 29/12/2019 को मेरे फार्म का भ्रमण किया गया एवं वैज्ञानिक तरीके से गिर नस्ल पालन की सराहना की गई। जिससे मैं भविष्य में और अधिक ऊर्जावान होकर कार्य करने हेतु प्रेरित हुआ। इसके अतिरिक्त भारत सरकार व राजस्थान सरकार के कई अधिकारियों द्वारा समय–समय पर मेरे फार्म का भ्रमण कर पशुपालन गतिविधियों को सराहा गया व मार्गदर्शन दिया गया।

- **भविष्य में आपकी इस फार्म से संबन्धित और क्या योजनाएँ हैं।**

  भविष्य में मेरा यह प्रयास रहेगा कि मेरे फार्म पर देसी नस्लों का विस्तार हो, आस–पास के पशुपालकों के भ्रमण हेतु पशुपालक प्रशिक्षण केंद्र हो, गिर नस्ल के दूध उत्पाद तैयार करना तथा गौमूत्र व देसी घी से आयुर्वेदिक दवाइयों का निर्माण करना भी मेरा लक्ष्य है ताकि आम जनता का स्वास्थ्य सुधारा जा सके।

★★★★

विश्व में हिंदी भाषा

हिन्दी, यूरोपीय भाषा–परिवार के अन्दर आती है। ये हिन्द ईरानी शाखा की हिन्द आर्य उपशाखा के अंतर्गत वर्गीकृत है। एथ्नोलॉग (2022, 25वाँ संस्करण) की रिपोर्ट के अनुसार विश्वभर में हिंदी को प्रथम और द्वितीय भाषा के रूप में बोलने वाले लोगों की संख्या के आधार पर हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हैं। जबकि चीनी विश्व में सबसे अधिक बोली जानी वाली भाषा है और उसके बाद अंग्रेजी का स्थान है।

सुश्री जिमली सरमाह के साथ एक साक्षात्कार

विभाग के कई अधीनस्थ कार्यालय राजभाषा हिंदी में बेहतर रूप से अपना सरकारी काम–काज कर रहे हैं और नियमित रूप से नराकास की बैठकों में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं। 'ग' क्षेत्र का ऐसा ही एक हमारा अधीनस्थ कार्यालय है, पशु संगरोध एवं प्रमाणीकरण सेवा (एक्यूसीएस) कोलकाता। आइए कार्यालय प्रभारी सुश्री जिमली सरमाह से इन नराकास की बैठकों में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के बारे में जानते हैं और साथ ही जानते है कि वे अन्य कार्यालयों को क्या सलाह देना चाहेंगी।

अमित शंकर
परामर्शदाता (मुख्यालय)

- **नराकास क्या है और यह कैसे कार्य करती है?**

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नराकास का संक्षिप्त रूप है। यह देश भर में फैले हुए सभी केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि को राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान करती है। इसमें केंद्रीय सरकार के सभी कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि आपस में मिल–बैठकर अपने–अपने कार्यालय की हिंदी प्रगति पर चर्चा करते हैं। साथ ही राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा भी होती है, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आ रही कठिनाइयों को चरण–बद्ध तरीके से दूर किया जाता है। साथ ही वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए लक्ष्यों के अनुसार, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा एवं राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने हेतु नगर के सभी कार्यालयों के बीच इससे संबन्धित योजनाएं भी चलायी जाती हैं जैसे हिन्दी पखवाड़े का आयोजन, राजभाषा हिन्दी से संबन्धित संगोष्ठियां आदि, जिससे हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा दिया जा सके। हिन्दी में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालय को विशेष पुरस्कार से सम्मानित भी किया जाता है।

• नराकास के सदस्य के रूप में हिन्दी के कामकाज में किस तरह की चुनौतियां सामने आती हैं?

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के साथ विचार–विमर्श के दौरान सर्वाधिक महत्वपूर्ण चुनौतियां यह आती हैं कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में सदस्य कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों के प्रमुख स्वयं बैठकों में भाग न लेकर अपने अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी को इन बैठकों में भाग लेने के लिए नामित कर देते हैं और कई बार तो बैठक में कुछ कार्यालयों का प्रतिनिधित्व तक नहीं होता। ऐसे में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठक सार्थक नहीं हो पाती। चूंकि इन बैठकों में कुछ नीतिगत मुद्दों पर भी निर्णय लेने होते हैं तथा निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाने होते हैं और यदि बैठक में संबन्धित कार्यालयों के प्रमुख उपस्थित न हों तो फिर इस प्रकार से लिए गए निर्णय को अनुपालन का आश्वासन उस कार्यालय का प्रतिनिधि नहीं दे पाता, ऐसा करने के लिए वो अधिकृत नहीं होता। इस बात का उल्लेख करना भी आवश्यक है कि नराकास की बैठक एक ऐसा सामूहिक मंच है जहां सभी सदस्य कार्यालयों को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आ रही कठिनाइयों का सामूहिक रूप से हल निकाला जाता है ताकि सभी सदस्य कार्यालय अपने–अपने कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में गुणात्मक सुधार लाते हुये वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। यह भी देखा गया है कि नराकास के विभिन्न सदस्य कार्यालयों में राजभाषा कार्मिकों की कमी है एवं बहुत से कार्यालयों में एक भी हिन्दी का पद सृजित नहीं है। इससे राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयां आती हैं। साथ ही नराकास के कार्यकलापों का पूरा लाभ नहीं मिल पाता। ऐसे में इस प्रकार के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की गति धीमी हो जाती है। इसलिए सदस्य कार्यालयों में हिन्दी का पद सृजित करना आवश्यक हो जाता है। यदि राजभाषा से जुड़े कार्मिक कार्यालय में उपलब्ध होंगे तो राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा दिया जा सकेगा और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर किया जा सकेगा।

• नराकास के सदस्य के रूप में हिन्दी भाषा के उन्नयन हेतु कार्य करने की संभावना कहाँ और किस स्तर पर दिखती है?

भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। दैनिक जीवन में मनुष्य अपने सम्प्रेषण के लिए जिस भाषा का प्रयोग करता है वह मौखिक व बोलचाल की भाषा होती है। जब कि कार्यालयी हिन्दी इससे भिन्न पूर्णतः मानक एवं पारिभाषिक शब्दों को ग्रहण करके चलती है। कार्यालयी हिन्दी सामान्य रूप से वह हिन्दी है जिसका प्रयोग कार्यालयों के दैनिक कामकाज में व्यवहार में लिया जाता है। कार्यालयी हिन्दी के उद्देश्य को समझने के लिए राजभाषा हिन्दी तथा उसके संवैधानिक उपबंधों को जानना आवश्यक है। इसका तात्पर्य सरकारी काम–काज की भाषा या कार्यालय की भाषा से है। नराकास इन्हीं सब उद्देश्यों पर खरी उतरती है।

1. राजभाषा हिन्दी के उन्नयन हेतु कार्य करने के लिए राजभाषा अधिनियम और सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढाने के संबंध में भारत सरकार द्वारा जारी किए गए आदेशों और हिन्दी के प्रयोग से संबन्धित वार्षिक कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। इन सभी का ज्ञान और जानकारी हमें नराकास की बैठकों में मिलती है।

2. साथ ही नराकास के सदस्य के रूप में हमारा उत्तरदायित्व और बढ़ जाता है। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के कार्य प्रतिशत को बढ़ाने के लिए समय–समय पर हिन्दी संगोष्ठियां तथा पखवाड़ा का आयोजन, अपने कार्यक्षेत्र से जुड़े विषयों पर राजभाषा हिन्दी में व्याख्यान आदि का आयोजन करना आदि इस दिशा में उठाए गए महत्वपूर्ण कदम हैं जिससे हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा दिया जा सके। राजभाषा हिन्दी में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालय को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाए, जिससे केंद्रीय सरकार के अन्य कार्यालयों के लिए भी राजभाषा हिन्दी के उन्नयन हेतु कार्य करने की संभावना बढ़े।

• सरकारी कार्यालयों में राजभाषा के विकास में नराकास के हस्तक्षेपों से कितनी सुगमता आई है?

नराकास के हस्तक्षेपों के कारण नराकास के सदस्य के रूप में केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिन्दी के प्रति उत्सुकता जगी है। बहुत से सदस्य कार्यालय राजभाषा हिन्दी में सर्वोत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए पहले से कहीं अधिक कार्य किया जा रहा है, जांच–बिन्दुओं का कड़ाई से पालन किया जा रहा है। कार्मिकों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। टंकण/आशुलिपि प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। साथ ही साथ राजभाषा हिन्दी से संबन्धित संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है जिस कारण केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में कई गुना तेज़ी से राजभाषा पर बल दिया जा रहा है।

• आपके कार्यालय के हिंदी कामकाज पर इसका क्या असर पड़ा है?

हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है साथ ही हमारा कार्यालय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंध रखता है और हमारा मुख्यतः आयात एवं निर्यात संबंधित कार्य है। हमारे लिए राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित पत्राचार का लक्ष्य 'क', 'ख', तथा 'ग' क्षेत्र के कार्यालयों हेतु 55% है। परंतु हमने निर्धारित लक्ष्य से बढ़कर कार्य किया है। जून, 2024 को समाप्त तिमाही में हमने क', 'ख', तथा 'ग' क्षेत्र के साथ क्रमशः 97.7%, 100% तथा 96.67% पत्राचार हिंदी में किया और अपनी सभी नोटिंग हिंदी की हैं। हमने प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति से काम करते हुए अपने काम–काज को सुधारा है। नराकास के मार्गदर्शन में हमारी प्रमुख उपलब्धियां निम्नानुसार रहीं।

• हमें नराकास की बैठक में ''जनवरी–मार्च, 2023'' की तिमाही के लिए 'प्रथम पुरस्कार' दिया गया।

• ''जुलाई–सितंबर, 2024'' की तिमाही के लिए भी हमें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

इसका श्रेय कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जाता है और साथ ही साथ यह संदेश भी देता है कि हमारे ये सभी सदस्य कार्यालय भी भविष्य में राजभाषा हिन्दी के उत्थान में अपना अहम सहयोग दे सकते हैं। उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि हमारा कार्यालय 'ख' या 'ग' क्षेत्र में स्थित है तो हमें अपना कार्य अपने क्षेत्र के लिए निर्धारित क्रमशः 90% और 55% के लक्ष्य तक ही सीमित रखना चाहिए,

बल्कि उन्हें अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने की संभावनाएं तलाशनी चाहिए।

• **आपकी राय में भविष्य में राजभाषा हिन्दी का उत्थान कैसे होगा?**

भविष्य में राजभाषा हिन्दी का उत्थान तभी संभव है जब सभी केंद्रीय सरकार के कार्यालय/उपक्रम/बैंक एक लक्ष्य के साथ राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन का संकल्प करें।

नराकास (कार्यालय–4), कोलकाता द्वारा पशु संगरोध एवं प्रमाणीकरण सेवा, कोलकाता (पूर्वी क्षेत्र) को जुलाई से सितंबर, 2023 के दौरान उत्कृष्ट क्रियान्वयन कार्य हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

★★★★

हिंदी को जीवन की भाषा बनाओ। यह केवल बोलचाल की भाषा नहीं, बल्कि विचारों की अभिव्यक्ति की भाषा है।

(मुंशी प्रेमचन्द)

डेयरी फार्मिंग में सेक्स-सॉर्टेड वीर्य का उपयोग

सेक्स–सॉर्टेड वीर्य, डेयरी फार्मिंग के क्षेत्र में एक नवीन एवं प्रभावशाली कदम है। यह वांछित लिंग की संतानों के उत्पादन का एक नया तरीका है। यह तकनीक पिछले कुछ वर्षों में प्रसिद्ध हो रही है और किसानों के बीच इसकी मांग भी बढ़ रही है। सेक्स–सॉर्टेड वीर्य डेयरी पशुओं के उत्पादन में व्यापक लाभ प्रदान करता है और इसका उपयोग डेयरी किसानों के लिए महत्वपूर्ण हो रहा है।

सेक्स–सॉर्टेड वीर्य तकनीक द्वारा किसान पशुओं के उन बच्चों का जन्म करवा सकते हैं जिनके वे इच्छुक हैं। परंपरागत गर्भाधान तकनीक में वांछित लिंग के उत्पादन का मौका लगभग 50/50 होता है। लेकिन सेक्स–सॉर्टेड वीर्य तकनीक द्वारा शुक्राणु कोशिकाओं को उनके लिंग के आधार पर अलग किया जा सकता है, जिससे किसान वह लिंग का चयन कर सकते हैं जिसे वे पसंद करते हैं। इससे किसान अनचाहे नर पशुओं के वध या प्रतिस्थापन के विपरीत परिणामों से बच सकते हैं। यह आवारा पशुओं की आबादी कम करने का एक महत्वपूर्ण और आवश्यक उपाय है।

सेक्स–सॉर्टिंग के विकास का पता संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग और लिवरमोर, कैलिफोर्निया और बेल्ट्सविले,

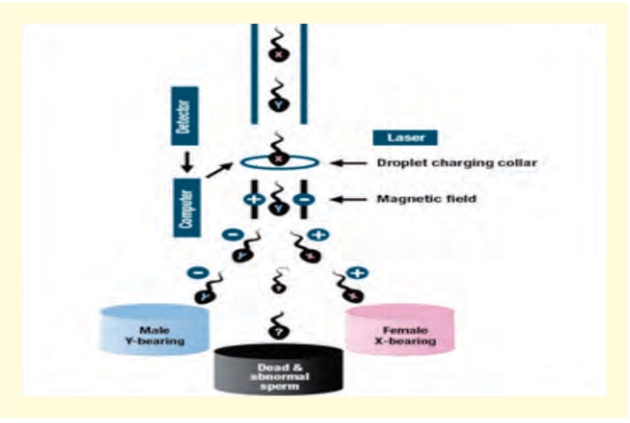

सीमन सॉर्टिंग की प्रक्रिया

मैरीलैंड के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अग्रणी शोध से लगाया जा सकता है। "बेल्ट्सविले स्पर्म सेक्सिंग टेक्नोलॉजी" के रूप में पेटेंट की गई तकनीक का व्यवसायीकरण 2001 में सेक्सिंग टेक्नोलॉजीज (एसटी), टेक्सास द्वारा किया गया था, जो पशु प्रजनन में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था।

डॉ. अतुल्या एम, सहायक आयुक्त
(सीईएएच हैसरघट्टा, बेंगलुरू)

सेक्स–सॉर्टिंग की प्रक्रिया में विशेष उपकरणों का उपयोग किया जाता है, जो शुक्राणुओं को उनके डीएनए सामग्री के आधार पर तेजी से सॉर्ट कर सकते हैं। यह तकनीक शारीरिक विशेषताओं के साथ–साथ एक्स और वाई शुक्राणु के बीच डीएनए सामग्री में अंतर के साथ–साथ उनके आकार पर निर्भर करती है। इस प्रक्रिया के बाद, वांछित सेक्स शुक्राणु कोशिकाएं कृत्रिम गर्भाधान में उपयोग के लिए एकत्र और पैक की जाती हैं।

सेक्स–सॉर्टेड वीर्य का प्रमुख लाभ आनुवंशिक सुधार को बढ़ाने की क्षमता है। किसान से वांछित लक्षणों वाली संतान पैदा करने के लिए सेक्स–सॉर्टेड वीर्य का उपयोग कर सकते हैं, जैसे अधिक दूध उत्पादन करने वाले गोपशुओं का उत्पादन।

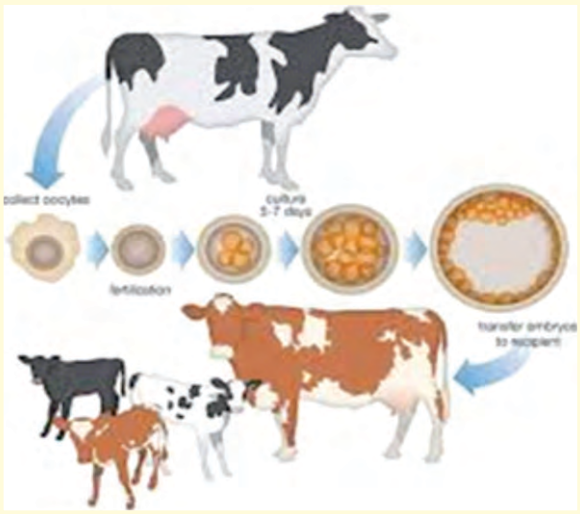

किसानों को लाभ

1. बढ़ी हुई दक्षता: सेक्स–सॉर्ट वीर्य चयनात्मक प्रजनन की अनुमति देता है, एक विशिष्ट लिंग की संतानों के जन्म को सुनिश्चित करता है। यह डेयरी किसानों के लिए विशेष रूप से मूल्यवान है जो दूध उत्पादन के लिए बछड़ियों को प्राथमिकता दे सकते हैं।

2. बेहतर आनुवंशिकी: रणनीतिक रूप से सेक्स–सॉर्टेड वीर्य का उपयोग करके, किसान अपने झुंड की समग्र आनुवंशिक गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं, जिससे अधिक दूध का उत्पादन करने वाली, बेहतर मांस गुणवत्ता वाली या रोग प्रतिरोधक जैसे बेहतर लक्षणों वाली संतान पैदा हो सकती है।

3. कम पीढ़ी अंतराल: सेक्स–सॉर्टेड वीर्य तकनीक पीढ़ी के अंतराल को कम करके झुंड के भीतर आनुवंशिक प्रगति की दर को तेज करती है। इसका मतलब यह है कि वांछनीय लक्षणों को बाद की पीढ़ियों तक अधिक तेज़ी से पारित किया जा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक उत्पादक और लाभदायक झुंड होता है।

4. बेहतर संसाधन आवंटन: संतानों के लिंग को नियंत्रित करके, किसान संसाधन आवंटन और प्रबंधन प्रथाओं को अनुकूलित कर सकते हैं, जिससे उत्पादकता और लाभप्रदता में सुधार हो सकता है।

5. कम से कम पर्यावरणीय प्रभाव: सेक्स–सॉर्टेड वीर्य तकनीक अवांछित नर जानवरों के प्रबंधन से जुड़े पर्यावरणीय प्रभाव को कम करती है, जिसमें फ़ीड की खपत, अपशिष्ट उत्पादन और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन शामिल हैं।

6. उन्नत प्रजनन प्रबंधन: सेक्स–सॉर्टेड वीर्य का उपयोग उन्नत प्रजनन तकनीकों जैसे कृत्रिम गर्भाधान (AI) और इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (IVF) के संयोजन में किया जा सकता है, जिससे किसान प्रजनन कार्यक्रमों को अनुकूलित कर सकते हैं और उच्च गर्भाधान दर प्राप्त कर सकते हैं।

7. बाजार की मांग और आर्थिक लाभ: किसान बाजार की मांगों को पूरा करने के लिए अपने प्रजनन कार्यक्रमों को तैयार कर सकते हैं। इससे वही संतान पैदा की जाती है जिसकी मांग होती है और जो उच्च मूल्य प्राप्त करती है। यह लचीलापन कृषि उद्योग में किसानों की लाभप्रदता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाता है।

अब किसान अवांछित नर बछड़ों के बजाय विशेष रूप से बछड़ियों का उत्पादन करके संसाधनों का संरक्षण करने में सक्षम हैं। डेयरी किसानों के लिए बेहतर जीन वाले बैलों के उत्पादन से लाभ हो सकता है। डेयरी किसान सेक्स्ड वीर्य के प्रयोग से झुंड को अधिक तेज़ी से और आंतरिक रूप से बढ़ा सकते हैं, जिससे अवांछित नर बछड़ों की मात्रा भी कम हो सकती है। बाहर से बछियाँ आयात करने से होने वाली बीमारियों के खतरे को कम किया जा सकता है। हेफ़र्स की तकनीक से अधिक लाभ उठाने की क्षमता होती है। डिस्टोसिया के मामलों को कम करने के लिए भी यह तकनीक उपयोगी है।

विकास और सीमाएं

सेक्स सॉर्टिंग फ्लो साइटोमेट्री–आधारित सॉर्टिंग पर निर्भर करता है, जिसे 90% से अधिक शुद्धता स्तर प्राप्त करने के लिए वर्षों से परिष्कृत किया गया है। हालांकि, पारंपरिक वीर्य की तुलना में कम गर्भाधान दर, महंगे उपकरण और छँटाई उपकरण संचालित करने के लिए कुशल पेशेवरों की आवश्यकता जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

भारत में सेक्स्ड वीर्य की उपलब्धता

भारत में सेक्स्ड वीर्य की उपलब्धता के लिए अलग–अलग प्रोटोकॉल और तकनीकों का इस्तेमाल किया जा रहा है। उत्तराखंड पशुधन विकास बोर्ड – ऋषिकेश; राज्य पशुधन और कुक्कुट विकास निगम – भोपाल, मध्य प्रदेश; डीएफएस बाबूगढ़ – हापुड़, उत्तर प्रदेश; बोवाइन वीर्य सेक्सिंग संस्थान पाटन, गुजरात अपनी प्रयोगशालाओं के माध्यम से सेक्स्ड वीर्य का उत्पादन और वितरण कर रही हैं।

★★★★

अभी पल्लवित हुआ था स्नेह, लाज का भी न गया था राग;
पड़ा पाला सा हा ! संदेह, कर यिा वह नव राग विराग।

पल्लव–सुमित्रानंदन पन्त

अनुवाद के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली नवीन प्रौद्योगिकियां

डॉ. नसीम अहमद,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी (मुख्यालय)

मानव सभ्यता के आरंभ से ही अनुवाद विचारों के परस्पर आदान–प्रदान का माध्यम बना हुआ है। भाषा का विकास कई चरणों में हुआ है। भाषा के विकास से पहले मानव संकेतों के माध्यम से अपने विचारों का आदान–प्रदान करता था। मनुष्य के हाव–भाव और विचार संकेतों की भाषा से होते हुए चित्रलिपि और फिर बाद में भाषा के रूप में प्रकट हुए। भाषा की उत्पत्ति ने जहां एक ओर आपसी संवाद को संभव बनाया तो वहीं दूसरी ओर उसे दूसरों से संवाद करने में आने वाली कठिनाइयों से रूबरू भी कराया। इसी कठिनाई ने अनुवाद को जन्म दिया और उसने दो विभिन्न भाषा–भाषी लोगों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य किया। अनुवाद की यह यात्रा अपने–आप में विशिष्ट है क्योंकि इसने वैश्विक स्तर पर विश्व को एक करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अनुवाद का महत्व जितना प्राचीन समय में था उतना ही आज भी है। हम यह कह सकते हैं कि आज अनुवाद के क्षेत्र में तकनीक का बहुत बड़ा योगदान है। पहले के समय में भिन्न भाषा–भाषी लोगों को बातचीत करने के लिए दुभाषिए का सहारा लेना पड़ता था। लेकिन आज के समय में तकनीक के विकास ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के साथ–साथ अनुवाद के क्षेत्र को भी बदल कर रख दिया है। अनुवाद के क्षेत्र में संचार क्रांति ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। आज इंटरनेट पर बहुत से ऐसे अनुवाद टूल्स मौजूद हैं जो पलक झपकते ही किसी भी भाषा में अनुवाद करने में सक्षम हैं। जरूरत है तो बस एक कंप्यूटर/एंड्रायड फोन और इंटरनेट की। कहा जाता है कि गूगल में काम करने वाले अधिकारियों को विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों से बात करने के लिए दुभाषिए का सहारा लेना पड़ता था। इसमें उन्हें बहुत परेशानी होती थी और समय भी बहुत लगता था। इन्हीं परेशानियों को दूर करने के लिए ही गूगल ट्रांसलेट का विकास किया गया। कारण चाहें जो भी हो, आज गूगल ट्रांसलेट मोबाइल फोन की तरह मानव जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है।

इंटरनेट ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आमूल–चूल परिवर्तन किए हैं। इंटरनेट की बढ़ती स्पीड की तरह हमारी उम्मीदें भी बढ़ती जा रही हैं। पलक झपकते ही सब कुछ अपनी आँखों के सामने देखने की बलवती इच्छा ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति ला दी है। आज जीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं है जो प्रौद्योगिकियों के विकास से अछूता हो। लेकिन हर चीज की एक सीमा होती है। जहां उससे कई फायदें होते हैं वहीं कुछ नुकसान भी होते हैं। अनुवाद क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। आज अनुवाद के क्षेत्र में कई नवीन प्रौद्योगिकियों का समावेश हो चुका है, जिनमें राजभाषा, गृह मंत्रालय द्वारा विकसित अनुवाद टूल 'कंठस्थ 2.0', गूगल द्वारा विकसित Google translate और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, शिक्षा मंत्रालय द्वारा विकसित अनुवाद टूल 'अनुवादिनी' तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन (National Language Translation Mission) के तहत विकसित 'भाषिनी (bhashini.gov.in)' प्रमुख हैं। इसके अलावा भी अनुवाद के कई टूल्स हैं जो अनुवाद में अपना योगदान देते हैं। कुछ अनुवाद टूल्स इस प्रकार हैं:

1. Bing Microsoft Translator
2. DeepL
3. Reverso Translation
4. Systran Translate PRO
5. Smartling
6. Crowdin
7. Text United
8. Amazon Translate
9. Memsource
10. MemoQ Translator PRO

इन सभी टूल्स में document translation text-to-speech, speech translation आदि की सुविधा मौजूद है। ये सभी टूल्स व्यापार, बैंकिंग, विधि, दूरसंचार, चिकित्सा के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की सुविधा प्रदान करते हैं। लेकिन इन सभी टूल्स का उपयोग आप भुगतान करने के बाद ही कर सकते हैं। एक प्रकार से यह paid Tool हैं। Google Translate का लाभ आप बिना भुगतान किए उठा सकते हैं। वहीं दूसरी ओर अनुवादिनी और कंठस्थ 2.0 में आपको आईडी और पासवर्ड की जरूरत पड़ती है।

इस आलेख में मुख्य रूप से 'अनुवादिनी', 'कंठस्थ 2.0', google translate और 'भाषिनी' पर विचार–विमर्श किया गया है।

अनुवादिनी (https://anuvadini-aicte-india-org/)– भारत में हजारों भाषाएं बोली और लिखी जाती हैं। कुछ भाषाएं दैनिक जीवन में कम प्रयुक्त होने अथवा बोलने वालों की कम संख्या के कारण विलुप्ति के कगार पर पहुँच गयी हैं। विविध भाषायी समूहों के बीच मानकीकृत और उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षिक सामग्री की पहुँच सुनिश्चित करना एक कठिन कार्य है। इसके अलावा विभिन्न भाषायी लोगों के बीच संचार के सुगम आदान–प्रदान के लिए एक ऐसे माध्यम की आवश्यकता है जो उनकी सम्प्रेषण की जरूरत को पूरा कर सके। इसके अलावा विभिन्न देशों के लोगों के बीच सम्प्रेषण की भी अपनी सीमाएं हैं। इन बाधाओं को दूर करने के लिए एक ऐसे माध्यम की आवश्यकता थी जो दो व्यक्तियों अथवा दो देशों के बीच की भाषाओं के अवरोध की सीमा को लांघ सके और संप्रेषण के आदान–प्रदान को सबके लिए सुगम बना सके।

भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तहत सभी भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली पाठ्य सामग्री का विकास करने के लिए कई संस्थाओं के साथ मिलकर लगातार कार्य कर रहा है। इस कार्य के लिए प्रौद्योगिकी का भी उचित रूप से प्रयोग किया जा रहा है। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा एक गैर–लाभकारी संस्था के रूप में अनुवादिनी फाउंडेशन की स्थापना की गई है। अनुवादिनी फाउंडेशन का उद्देश्य शिक्षण, सीखने, परीक्षण और अनुवाद के लिए प्रौद्योगिकी का विकास करने के साथ–साथ शिक्षा और निर्देश के क्षेत्र में उन्नत डिजिटल प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना और एनईपी–2020 में परिकल्पित नीति को साकार करना है। इसे विकसित करने का श्रेय अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के मुख्य समन्वय अधिकारी श्री बुद्ध चन्द्रशेखर को दिया जाता है।

अनुवादिनी एक वॉयस और डॉक्यूमेंट एआई ट्रांसलेशन टूल है जिसमें कई विशेषताएं और कार्यक्षमताएं शामिल हैं। भाषागत बाधाओं के कारण उत्पन्न होने वाले इस अंतर को पाटना ही इस टूल का उद्देश्य है। यह टूल 22 क्षेत्रीय भारतीय और विदेशी भाषाओं के लिए समर्थन प्रदान करता है, जो भाषा संबंधी बाधाओं को तोड़ने और एक भारत, श्रेष्ठ भारत

और एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के सिद्धांतों के तहत भारत और विश्व को एकजुट करने में मदद करता है। अनुवादिनी के अनुसार उसका उद्देश्य कृषि, वाणिज्य, रेलवे, बैंकिंग, विधि, परिवहन, वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्रों में भाषायी विविधता को सहेजते हुये एकता की भावना का विकास करना है।

शैक्षणिक कार्यों के अलावा सरकारी कार्यालयों में भी इसका प्रयोग किया जा रहा है। अनुवादिनी के माध्यम से विभिन्न विषयों की दस हजार से ज्यादा किताबों का अनुवाद किया जा चुका है। इसमें स्कैन, पीडीएफ, वर्ड फाइल और एक्सल फाइल का अनुवाद किया जा सकता है।

'अनुवादिनी' की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:

1. बहुभाषी वीडियो अनुवाद
2. चुटकीः रियल टाइम डॉक्यूमेंट अनुवाद
3. डीप लर्निंग डॉक्यूमेंट अनुवाद
4. इमेज 23 अनुवाद मॉड्यूल
5. डिक्टेशन टूल
6. वॉइस एप और डिजिटल वीडियो एडिटिंग सूट
7. बहुभाषी वॉइस फॉर्म
8. भाषा दान
9. स्पीच मैसेंजर
10. बहुभाषी वर्चुअली कीबोर्ड
11. अनुवादिनी डिजिटल ऑडिओ वर्क स्टेशन

अनुवादिनी की सबसे बड़ी विशेषता एक ही बार में पूरी फाइल को अपलोड करके उसका अनुवाद करना है। फ़ाइल को जिस format में अपलोड करेंगे अनुवाद के बाद उसी format में प्राप्त होगी। इसकी यही विशेषता इसे दूसरे अनुवाद टूल्स से अलग बनाती है। इसमें शब्दों की कोई सीमा नहीं है, जबकि गूगल ट्रांसलेट में आप एक बार में केवल 5000 शब्दों का ही अनुवाद कर सकते हैं। अनुवादिनी में पृष्ठों की संख्या सीमित है। एक बार में आप केवल 10 पृष्ठ अपलोड करके उसका अनुवाद कर सकते हैं। गूगल ट्रांसलेट में अपलोड करने की कोई व्यवस्था नहीं है और उसमें अनुवाद के लिए सामग्री को copy और paste किया जाता है और अनूदित सामग्री को भी copy और paste किया जाता है, download नहीं। अनुवादिनी में आप अनुवादित सामग्री को pdf या word फ़ाइल में download कर सकते हैं।

गूगल अनुवाद (https://translate.google.com) – गूगल अनुवाद अप्रैल 2006 में गूगल द्वारा विकसित एक वेब–आधारित निःशुल्क–उपयोगकर्ता अनुवाद सेवा है। गूगल ट्रांसलेट एक अनुवाद सॉफ्टवेयर एवं सेवा है जो एक भाषा के टेक्स्ट या वेबपेज को दूसरी भाषा में अनुवाद करता है। यह गूगल नामक कंपनी द्वारा विकसित एवं परिचालित है। इसके लिये गूगल अपना स्वयं का अनुवाद सॉफ्टवेयर प्रयोग करता है जो सांख्यिकीय मशीनी अनुवाद है। इस समय इसमें हिन्दी से अन्य भाषाओं में तथा अन्य भाषाओं से हिन्दी में भी अनुवाद की सुविधा उपलब्ध है। इसके टेक्स्ट–बॉक्स में देवनागरी में लिखी सामग्री paste कर इसका अनुवाद किया जा सकता है; या सीधे ध्वन्यात्मक रोमन में टाइप करने पर वह स्वतः देवनागरी में बदल जाता है जिसे 'अनुवाद करो' (ट्रांसलेट) बटन दबाकर अनुवाद कर सकते हैं।

गूगल अनुवाद के प्रारंभ में इसका दायरा काफी सीमित था। संयुक्त राष्ट्र संघ और यूरोपियन संसद के दस्तावेजों और ट्रांसक्रिप्ट की मदद लेकर इसके लिए भाषाओं का डेटा इकट्ठा किया गया। आज इस सेवा का इस्तेमाल पूरी दुनिया में किया जा रहा है। नवंबर 2016 में गूगल अनुवाद का विस्तार किया गया। नई तकनीक (GNMT) के जरिए एक समय में ही पूरा वाक्य ट्रांसलेट करने की सुविधा दी गई। शुरुआत में अन्य स्रोत भाषाओं का पहले अंग्रेजी में अनुवाद किया जाता था और उसके बाद उसका लक्षित भाषा (TL) में उसका अनुवाद किया जाता था। आज गूगल अनुवाद में सीधे 100 से ज्यादा भाषाओं का एक–दूसरे में अनुवाद किया जा सकता है।

समय के साथ–साथ गूगल ने अपनी तकनीक को अद्यतन किया है। अब गूगल ट्रांसलेट सॉफ्टवेयर तस्वीर देखकर इंग्लिश से हिंदी अनुवाद करने में भी सक्षम है। कंपनी ने गूगल ट्रांसलेट सॉफ्टवेयर का नया संस्करण पेश किया हैं जिसमें फोटो–टू–टेक्स्ट फीचर के माध्यम से इंग्लिश से हिंदी अनुवाद को जोड़ा गया है। गूगल की इस अनुवाद सेवा में पहले टेक्स्ट, ऑडियो और फोटो–टू– टेक्सट का विकल्प था लेकिन फोटो–टू–टेक्सट में इंग्लिश से हिंदी अनुवाद नहीं किया जा सकता था। अब कंपनी ने नए अपडेट में इसे लॉन्च कर दिया है।

यह सेवा उन लोगों के लिए बेहद ही फायदेमंद है जो अक्सर बाहर घूमने जाते हैं और साइनबोर्ड पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं। अब गूगल ट्रांसलेट का फोटो–टू–टेक्स्ट फीचर उन्हें बस एक क्लिक से उसका अर्थ बताने में सक्षम है। गूगल ट्रांसलेट एप्लिकेशन की शुरुआत करते ही सबसे पहले

कैमरा फीचर दिखाई देगा। इसे टच करते ही यह एक्टिव हो जाता है। आप जिस शब्द का ट्रांसलेशन करना चाहते हैं उस पर कैमरा फोकस करें। शब्द पर कैमरा फोकस करने के बाद नीचे दिए गए स्कैन बटन को टच करते ही यह कार्य शुरु कर देता है। कैमरा स्कैन में यह स्कैन क्षेत्र में आने वाले सभी शब्दों का चयन कर लेता है लेकिन एक बार में यह एक शब्द का ही अनुवाद करता है। जब एक बार आप एक शब्द का चुनाव कर लेते हैं तब जाकर नीचे सेलेक्ट आल का विकल्प आता है और आप यहां से एक साथ सभी शब्दों का अर्थ जान सकते हैं। एप्लिकेशन में एसएमएस ट्रांसलेशन का भी विकल्प दिया गया है। टाइपिंग के अलावा हैंडरायटिंग रिकॉग्नीशन और स्पीच जैसे फीचर्स पहले ही उपलब्ध हैं। इसमें अब ऑफलाइन ट्रांसलेशन का भी लाभ ले सकते हैं।

गूगल ट्रांसलेट की फोटो टू टेक्स सेवा फिलहाल 37 भाषाओं में उपलब्ध है जिसमें हिंदी भी शामिल है। प्रारंभ में गूगल में अनुवाद करने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता था। लेकिन धीरे–धीरे गूगल ने इसकी कमियों को दूर करते हुये इसमें काफी सुधार किया है। आज इसका अनुवाद 90% तक सही होता है। गूगल अनुवाद उपयोग में बेहद ही आसान है और काफी फायदेमंद भी। दूसरी ओर इसका उपयोग कोई भी व्यक्ति बिना किसी शुल्क के कर सकता है। इसीलिए आज यह 30 करोड़ से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जा रहा है और यह 100 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है।

गूगल द्वारा किए गए अनुवाद की शुद्धता पर सवाल उठते रहते हैं लेकिन फिर भी यह आज सबसे ज्यादा प्रयोग होने वाला टूल है। लेकिन इसमें अनुवाद के लिए शब्दों की संख्या सीमित है। एक बार में केवल 5000 शब्दों का ही अनुवाद किया जा सकता है। इसमें अनुवादित सामग्री को download करने का भी विकल्प नहीं मिलता है। इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि इसमें आप सिर्फ अंग्रेजी सामग्री का copy और paste करके ही अनुवाद कर सकते हैं। word अथवा pdf फ़ाइल अपलोड करने और अनुवाद के पश्चात उसे download करने की कोई सुविधा मौजूद नहीं है। एक प्रकार से यह त्वरित अनुवाद (instant translation) के रूप में कार्य करता है।

कंठस्थ 2.0 (https://kanthasth-rajbhasha.gov.in)– कंठस्थ का निर्माण गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा ''सी–डैक पुणे'' के सहयोग से वर्ष 2018 में किया गया था। कंठस्थ के निर्माण के लिए राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2017 में एक तकनीकी टीम का गठन किया गया था। तकनीकी टीम ने कंठस्थ को विकसित करने के लिए कई बैठकें की, सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर विचार–विमर्श करने और विभिन्न पणधारियों से प्राप्त फीडबैक/प्रतिक्रियाओं के पश्चात कंठस्थ टूल का निर्माण किया गया और वर्ष 2018 में मॉरीशस में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान इसका लोकार्पण किया गया। इसकी खास बात यह है कि यह किए हुये अनुवाद के अंग्रेजी और हिंदी के वाक्यों को अपनी स्मृति में सहेज कर रख लेता है और जब उससे मिलता–जुलता कोई वाक्य अनुवाद के लिए आता है तो यह अपनी स्मृति में सहेज कर रखे गए अनुवाद में से उसे ले लेता है।

वर्ष 2018 में शुरू किए गए कंठस्थ में आगे चलकर कई कमियां परिलक्षित हुई थीं जिसे दूर करते हुये माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा दिनांक 14 सितंबर, 2022 को सूरत में हिन्दी दिवस के अवसर पर इसके उन्नत संस्करण 'कंठस्थ 2.0' का लोकार्पण किया गया था। कंठस्थ के प्रारम्भ के बाद से इसके डेटाबेस को मजबूत करने के लिए राजभाषा संवर्ग से जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों को कई बार प्रशिक्षित किया जा चुका है। यह भारत के प्रधानमंत्री द्वारा की गई 'आत्मनिर्भर भारत' तथा 'स्थानीय के लिए मुखर हो (be Local for Vocal)' की संकल्पना का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सी–डैक के माध्यम से अब इसका मोबाइल संस्करण भी शुरू किया जा चुका है। इस सॉफ्टवेयर के विकास में राजभाषा विभाग और सी–डैक की मेहनत को स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है। इसे विकसित करने के मूल में स्वदेशी की भावना निहित है। गूगल अनुवाद से सारा डेटा विदेश में स्थित सर्वर पर चला जाता है जबकि कंठस्थ 2.0 में ऐसा नहीं है। कंठस्थ 2.0 पर किया गया अनुवाद कार्य भारत में स्थित एनआईसी (NIC) के सर्वर में ही रहता है। इस प्रकार यह स्वदेशी की धारणा को बढ़ावा देता है।

कंठस्थ 2.0 में ट्रांसलेशन मेमोरी मशीन–साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा (Source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा Target language) में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक–साथ रखा जाता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आप इसमें अनुवादित भाग में भी परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि गूगल अनुवाद में ऐसा नहीं है। उसमें सिर्फ अंग्रेजी वाले भाग में ही परिवर्तन किया जा सकता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः–प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है। इसके साथ ही इसमें ग्लोबल टी.एम तैयार करने की भी विशेषता है जो इसे अन्य translation tools से अलग करती है। भारत सरकार का कोई भी कर्मचारी भारत में कहीं से भी ग्लोबल टी.एम. का उपयोग कर सकता है। सरकारी कार्यालयों में इसके अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ाने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा संवर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए कई प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जा चुके हैं। कंठस्थ 2.0 के प्रशिक्षण के नवीनतम सत्र का आयोजन हाल ही में दिनांक 28–30 नवंबर, 2023 तक नई दिल्ली में किया गया था। इसकी मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- लोकल एवं ग्लोबल टी. एम बनाना।
- अनुवाद के समय यदि कोई वाक्य लोकल टी.एम अथवा ग्लोबल टी.एम में मौजूद नहीं होता है तो कंठस्थ 2.0 उसका मशीनी अनुवाद करके देता है।
- शब्दकोश संयोजन और वाक्य खोज।
- अनुवादित फाइल को word फ़ाइल में download करने की सुविधा।
- प्रोजेक्ट बनाने और कम्प्यूटर से फाइल अपलोड करने और download करने की सुविधा।
- कंठस्थ 2.0 में अब तक लाखों वाक्य जुड़ चुके हैं और इसका उपयोग अनुवाद को बेहतर बनाने में किया जा रहा है।
- इसमें ग्लोबल टी.एम के रूप में विभिन्न विषयों की सामग्री का एक व्यापक डेटाबेस तैयार किया जा रहा है जो आने वाले समय में अनुवाद क्षेत्र के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगा।
- इस टूल में वर्ड फ़ाइल को अनुवाद करने के लिए split करके अलग–अलग व्यक्तियों को भेजा जा सकता है और अनुवाद के बाद सभी split फाइलों को एक फ़ाइल के रूप में merge किया जा सकता है।
- इसमें त्वरित अनुवाद की भी सुविधा उपलब्ध है।
- केंद्र सरकार के कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाले e-office से भी इसको एकीकृत किया जा रहा है ताकि राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक सरकारी कार्य किया जा सके।

भाषिनी (https://bhashini.gov.in)– 'कंठस्थ 2.0' और 'अनुवादिनी' की तरह 'भाषिनी' भी भारत सरकार द्वारा विकसित एक अनुवाद टूल है। इसका विकास इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन (National Language Translation Mission) के तहत किया गया है। इसका लक्ष्य सभी भारतियों को अपनी भाषा में इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं तक आसान पहुँच प्रदान करना और भारतीय भाषाओं में सामग्री की उपलब्धता में वृद्धि करना है।

इसका उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अन्य उभरती प्रोद्योगिकियों की शक्ति का लाभ उठाकर नागरिकों के लिए सेवाओं और उत्पादों को विकसित करने के लिए एक राष्ट्रीय सार्वजनिक डिजिटल मंच का निर्माण करना है। इसके साथ ही योगदानकर्ताओं का एक ऐसा समुदाय बनाना है जो भाषिनी को अपने घोषित उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण के साथ काम करता हो।

भाषिनी भी गूगल ट्रांसलेट की तरह एक प्रकार से त्वरित अनुवाद (Instant Translation) करता है। गूगल अनुवाद में जहां शब्दों की संख्या 5000 तक सीमित है वहीं भाषिनी में यह संख्या 500 शब्दों तक ही सीमित है। इसमें भी गूगल अनुवाद की तरह copy और paste करके ही अनुवाद किया जा सकता है। अनुवादिनी और कंठस्थ की तरह फाइल अपलोड करने का विकल्प नहीं मिलता है। इसमें आप voice स्पीच के माध्यम से भी अनुवाद कर सकते हैं। इसके साथ ही अनुवादित सामग्री को आप audio में बदल कर सुन सकते हैं। speech voice के रूप में Male और Female voice का चयन करने का भी विकल्प मिलता है। भाषिनी और अनुवादिनी दोनों अनुवाद टूल्स में आप भाषा दान करके भारतीय भाषाओं को सशक्त और समर्थ बना सकते हैं।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि अन्य क्षेत्रों की भांति अनुवाद का क्षेत्र भी प्रौद्योगिकी के विकास से अछूता नहीं है। अनुवाद के नए–नए टूल्स अनुवाद का कार्य आसान कर रहे हैं। 'अनुवादिनी', 'कंठस्थ 2.0' और 'भाषिनी' जैसे टूल्स जहां स्वदेशी की भावना को मजबूत कर रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर एनआईसी (NIC) सर्वर का उपयोग करने के कारण देश का डेटा भी देश में ही रहता है। गूगल ट्रांसलेट में अनुवाद करने से देश का डेटा विदेशों में स्थित सर्वर में चला जाता है जो देश की सुरक्षा के लिए अच्छा नहीं है। 'अनुवादिनी' और 'कंठस्थ 2.0' में अनुवाद की शुद्धता 90–95% हैं वहीं गूगल ने भी अपनी अनुवाद क्षमता को पहले से बेहतर बनाया है। गूगल पहले अर्थ का अनर्थ कर देता था लेकिन उसने अपनी कमियों को दूर करते हुये उसमें सुधार किया है। लेकिन अभी भी वह इसमें पूर्ण रूप से 100% सटीक अनुवाद करने में असमर्थ है।

अनुवाद एक श्रमसाध्य कार्य है। जिसके लिए स्रोत और लक्षित भाषा की गहन जानकारी होनी आवश्यक है। किसी व्यक्ति ने सड़क किनारे speed breaker का अनुवाद गड़गड़ाहट पट्टी करके लगा दिया। जिससे उसे पढ़ने वाले व्यक्तियों के सिर चकरा गए। ऐसे ही पुर्तगाल घूमने गए रूसी व्यक्ति को ट्रांसलेशन एप के माध्यम से किए गए गलत अनुवाद के कारण जेल में जाना पड़ गया। दरअसल उस व्यक्ति को पुर्तगाली भाषा में अनार के जूस (Pomegranate) का ऑर्डर देना था। इसके लिए उसने एक (Language Tool) का उपयोग किया जिसने pomegranate का अनुवाद Grenade कर दिया। इस वजह से वेटर ने उसे आतंकवादी समझ लिया और पुलिस को फोन कर दिया। इसी को कहते हैं, अर्थ का अनर्थ करना। इसलिए किसी भी अनुवाद टूल का निर्माण करते समय सबसे जरूरी है कि जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है उस भाषा और उसके शब्दों के पर्यायों की गहन जानकारी हो।

प्रत्येक भाषा में शब्दों का अर्थ अलग–अलग होता है। इसलिए जरूरी है कि अनुवाद टूल्स में स्रोत भाषा के साथ–साथ लक्षित भाषा के शब्दों के उचित पर्याय दिये गए हों। उम्मीद है कि आने वाले समय में अनुवाद करने में जो कमियां/गलतियां सामने आ रहीं हैं उन्हें भी जल्द ही दूर कर लिया जाएगा।

★★★★

कल ही कामयाब होने की जिद भले ही पूरी न हो। पर यह निश्चित है कि यदि कोशिश करते रहें तो एक दिन सफ़लता ज़रूर मिलेगी।

(महात्मा गांधी)

मोबाइल पशु चिकित्सा इकाईयां (एमवीयू) : एक दूरदर्शी पहल

सुश्री वर्तिका राय,
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी (मुख्यालय)

भारत में पशुधन और पोल्ट्री का विशाल संसाधन है, जो ग्रामीण जनता की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 20वीं पशुधन संगणना, 2019 के अनुसार भारत में लगभग 303.76 मिलियन बोवाइन (गोपशु, भैंस आदि), 74.26 मिलियन भेड़ और 148.88 मिलियन बकरियाँ, 9.06 मिलियन सूअर और 851.81 मिलियन कुक्कुट हैं।

हाल के दिनों में पशुधन की उत्पादकता में वृद्धि के साथ–साथ इन पशुओं में विभिन्न बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता भी बढ़ी है। इसलिए, रुग्णता और मृत्यु दर को कम करने के लिए, राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों द्वारा उनके पास उपलब्ध पॉलीक्लिनिक/पशु चिकित्सा अस्पतालों, औषधालयों और प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है।

सीमित स्थानों पर पशु चिकित्सा संस्थानों की संख्या के संदर्भ में वर्तमान अवसंरचना के साथ, यह समझा जाता है कि दूरदराज के क्षेत्रों, भौगोलिक रूप से दुर्गम इलाकों में बेहतर पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना कठिन है और दूर स्थित के पशु चिकित्सा संस्थानों में बीमार पशुओं को लाना भी संभव नहीं है।

ऐसी स्थिति में किसानों के द्वार पर पशुओं को उपचार प्रदान करके उनके आर्थिक नुकसान को कम करने में पशु चिकित्सा सेवाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार वित्त वर्ष 2021–22 से "पशु चिकित्सा अस्पतालों और औषधालयों की स्थापना और सुदृढ़ीकरण– मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयाँ (ईएसवीएचडी–एमवीयू)" योजना लागू कर रही है। यह योजना राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की सरकारों को 1 एमवीयू/1 लाख पशुधन आबादी की दर से मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयों (एमवीयू) की खरीद के लिए 100% केंद्रीय सहायता प्रदान करती है। वित्तीय सहायता 16.00 लाख रुपये/1 एमवीयू है।

मोबाइल पशु चिकित्सा इकाईयां क्या हैं?

मोबाइल पशु चिकित्सा इकाईयां सुदूर अथवा दुर्गम स्थानों पर रहने वाले किसानों के द्वार पर पशुओं की स्वास्थ्य देखभाल, प्रजनन और परामर्श सम्बन्धी सेवाएं प्रदान करती हैं। इसके साथ ही एमवीयू उन किसानों के पशुओं को भी उपचार प्रदान करता है जहाँ पशु चिकित्सा संस्थान नहीं हैं या बहुत दूर हैं।

- एक सामान्य पशु चिकित्सा इकाई (एमवीयू) चार–पहिया वाहन होता है, जिसमें एक पशु चिकित्सक, एक पैरा–पशु चिकित्सक और एक चालक–सह–परिचारक के लिये कार्य करने की जगह होती है।
- इसे 'डोरस्टेप डिलीवरी मॉडल' पर कार्यान्वित किया जा रहा है।
- इस वाहन में निदान, उपचार एवं मामूली सर्जरी के लिये उपकरण, पशुओं के इलाज हेतु अन्य बुनियादी चीज़ें, जागरूकता के प्रसार के लिये ऑडियो–विजुअल उपकरण एवं वाहनों की जीपीएस ट्रैकिंग जैसी आवश्यक सुविधाएं होती हैं।

पशु चिकित्सा अस्पतालों और औषधालयों की स्थापना और सुदृढ़ीकरण – मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयाँ (ईएसवीएचडी–एमवीयू)

भारत सरकार इन एमवीयू द्वारा पशु चिकित्सा स्वास्थ्य सेवाओं के संचालन पर होने वाले आवर्ती व्यय के लिए केंद्रीय हिस्से के रूप में वित्तीय सहायता भी प्रदान करती है (सभी संघ राज्य क्षेत्रों के लिए 100%, सभी पर्वतीय राज्यों के लिए 90% और अन्य सभी राज्यों के लिए 60%)। आवर्ती व्यय में आउटसोर्स कर्मचारियों (1 पशु चिकित्सक, 1 पैरा–वेट और 1 ड्राइवर सह परिचारक/1 एमवीयू) के वेतन पर व्यय, दवा आदि की खरीद पर व्यय, एमवीयू चलाने के लिए ईंधन और रखरखाव और कॉल सेंटर संचालन शामिल है।

इन एमवीयू में पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए एक पशु चिकित्सक, एक पैरा–पशु चिकित्सक और एक चालक–सह–परिचारक होता है। ये वाहन अत्याधुनिक नैदानिक उपकरणों, पशु उपचार और प्रजनन सहायक उपकरण, दृश्य–श्रव्य सहायता और आवश्यक दवाओं से सुसज्जित होते हैं।

पशु चिकित्सा सेवाओं में पशुओं की जांच और उपचार के साथ–साथ छोटी–मोटी सर्जरी, पशुओं के स्वास्थ्य के लिए जागरूकता अभियान और दृश्य–श्रव्य साधनों के माध्यम से पशुओं का प्रबंधन आदि शामिल हैं।

ये एमवीयू एक राज्य स्तरीय कॉल सेंटर के माध्यम से संचालित होते हैं, जिसका एक टोल–फ्री हेल्पलाइन नंबर 1962 है। यह पशुपालकों/पशु मालिकों से कॉल प्राप्त करता है और पशु चिकित्सक आपातकालीन प्रकृति के आधार पर सभी मामलों को प्राथमिकता देते हैं और इसे किसान के द्वार पर पशुओं के उपचार के लिए निकटतम एमवीयू को भेजते हैं। वर्तमान में, 22 राज्यों में 3182 एमवीयू कार्य कर रही हैं और 21 अगस्त 2024 तक 96.14 लाख पशुओं को उपचार प्रदान करके लगभग 44.90 लाख किसानों को उनके द्वार पर पशु चिकित्सा स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गई हैं।

भारत सरकार का मानना है कि एमवीयू के कार्यान्वयन से पशु चिकित्सा सेवाएं टोल फ्री नं. 1962 डायल करके सिर्फ एक कॉल की दूरी पर हैं। ये एमवीयू जल्द से जल्द राज्य के हर कोने तक पहुंच रही हैं और योग्य पशु चिकित्सकों द्वारा किसानों के द्वार पर पशुओं का मुफ्त इलाज किया जा रहा है।

इसके अलावा, यह पहल उच्च उत्पादकता वाले डेयरी पशुओं को पालने के लिए डेयरी किसानों के आत्मविश्वास को बढ़ा रही है क्योंकि अधिकांश किसानों को अपनी बेहतरीन गायों को इलाज के लिए पशु चिकित्सालय ले जाने में कठिनाई होती है और आमतौर पर पशुओं के उपचार के लिए झोलाछाप डॉक्टरों को घर पर बुलाते हैं।

इस योजना की उपलब्धियों को देखते हुए, भारत सरकार की इस पहल का उद्देश्य युवाओं को लाभकारी रोजगार देकर डेयरी क्षेत्र को निर्वाह–आधारित व्यवसाय से व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य उद्यम में बदलना है।

ईएसवीएचडी–एमवीयू के तहत वित्तीय प्रगतिः

- केंद्र सरकार ने वर्ष 2021–22 और वर्ष 2022–23 के दौरान 4332 एमवीयू की खरीद के लिए 33 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को 681.57 करोड़ रुपये और 8 एमवीयू की खरीद के लिए 2 संघ राज्य क्षेत्रों को 1.28 करोड़ रुपये जारी किए हैं।
- किसानों के द्वार पर पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान

करने के लिए क्षेत्र में एमवीयू चलाने के लिए, विभाग ने वित्त वर्ष 2022–23 के दौरान 7 राज्यों को 33.07 करोड़ रुपये जारी किए हैं।

- किसानों के द्वार पर पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए क्षेत्र में एमवीयू चलाने के लिए, विभाग ने वित्त वर्ष 2023–24 के दौरान 23 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को 184.87 करोड़ रुपये जारी किए हैं।
- वित्त वर्ष 2024–25 के दौरान, 22.08.2024 तक इन एमवीयू को फील्ड में चलाने के लिए आवर्ती व्यय के लिए 11 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को 66.08 करोड़ रुपये की निधि जारी की गई है।

★★★★

करते हैं तन–मन से वंदन, जन–गण–मन की अभिलाषा का
अभिनंदन अपनी संस्कृति का, आराधन अपनी भाषा का।
यह अपनी शक्ति सर्जना के माथे की है चंदन रोली
माँ के आँचल की छाया में हमने जो सीखी है बोली
यह अपनी बंधी हुई अंजुरी, ये अपने गंधित शब्द सुमन
यह पूजन अपनी संस्कृति का, यह अर्चन अपनी भाषा का।

निदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय ।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय ।।

(कबीर)

पशु कल्याण के क्षेत्र में भारतीय जीव-जंतु कल्याण बोर्ड का योगदान

डॉ. सुजीत कुमार दत्ता,
संयुक्त आयुक्त (मुख्यालय)

भारतीय जीव–जंतु कल्याण बोर्ड (AWBI) की स्थापना वर्ष 1962 में पशुओं के प्रति क्रूरता का निवारण अधिनियम, 1960 (1960 का 59) की धारा–4 के अनुसरण में की गयी थी। सुप्रसिद्ध मानवतावादी श्रीमती रुक्मिणी देवी अरुंडेल बोर्ड की संस्थापक सदस्य थीं। बोर्ड में भारत सरकार द्वारा नामित 28 सदस्य होते हैं, जिसमें 6 संसद सदस्य (लोकसभा से 4 और राज्य सभा से 2) होते हैं जिन्हें वर्तमान बोर्ड में नामांकित किया जाना है और अन्य 22 सदस्य विभिन्न क्षेत्रों से होते हैं। बोर्ड का पुनर्गठन तीन वर्ष में एक बार किया जाता है। मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्तमान बोर्ड को दिनांक 15.05.2023 से प्रभावी तीन वर्षों के लिए पुनर्गठित किया गया है जिसमें 20 सदस्य हैं और 1 सदस्य को दिनांक 01.09.2023 को नामित किया गया है। भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड ने पशु कल्याण को बढ़ावा देने और पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम में अपनी सेवाओं के 63 वर्ष पूरे कर लिए हैं।

भारतीय जीव–जन्तु कल्याण बोर्ड का उद्देश्य पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 की धारा 9 के तहत परिभाषित किया गया है। संक्षेप में, एडब्लूबीआई का अधिदेश भारत में पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण के कानूनों का निरंतर अध्ययन करना और अधिनियम के तहत नियम बनाने, पशुओं के अनावश्यक दर्द अथवा पीड़ा को रोकने के लिए आवश्यक संशोधन हेतु केन्द्र सरकार को सलाह देना है। अपने गठन के समय से ही भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड (AWBI) ने पशु कल्याण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पशुओं के कल्याण और नागरिकों में पशुओं के प्रति करुणा और दया पैदा करने के लिए बोर्ड ने कई नियम बनाए हैं। बोर्ड के योगदान को कुछ मुख्य बिंदुओं में इस प्रकार समझा जा सकता है:

नियम और कानून: भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड ने कई महत्वपूर्ण नियम और कानूनों की सिफारिश की है जो पशुओं की सुरक्षा और उनके प्रति मानव व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। इनमें प्रमुख है 'पशु क्रूरता निवारण अधिनियम' (Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960), जो पशुओं पर क्रूरता और अत्याचार को रोकने के लिए बनाया गया है। इसके अलावा समय–समय पर बोर्ड द्वारा पशुओं के अनावश्यक दर्द अथवा पीड़ा को रोकने तथा उनके कल्याण के लिए अनेक नियम बनाए गए हैं। कुछ प्रमुख नियम इस प्रकार हैं:–

1. पशुओं को ढोने और पैक करने के प्रति क्रूरता निवारण नियम, 1965
2. पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (फारियर का लाइसेंस) नियम, 1965
3. पशुओं का परिवहन नियम, 1978
4. पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (जुर्माना लागू करना) नियम, 1978
5. पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (मवेशी परिसर का पंजीकरण) नियम, 1978
6. क्रूरता निवारण (पशुओं को पकड़ना) नियम, 1979
7. प्रदर्शन करने वाले पशु (पंजीकरण) नियम, 2001
8. प्रदर्शन करने वाले पशु (पंजीकरण) संशोधन नियम, 2002
9. पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (पैदल पशुओं का परिवहन) नियम, 2001
10. पशुओं का परिवहन (संशोधन) नियम, 2001
11. पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (वधगृह) नियम, 2001
12. पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम के लिए सोसायटी की स्थापना और विनियमन) नियम, 2001
13. पशुओं का परिवहन (संशोधन) नियम, 2009
14. पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण (वधगृह) नियम, 2010
15. पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (केस प्रॉपर्टी पशुओं की देखभाल और रखरखाव) नियम, 2017

16. पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (कुत्ता प्रजनन और विपणन नियम) नियम, 2017
17. पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (पालतू पशुओं की दुकान नियम) नियम, 2018
18. पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (अंडा देने वाली मुर्गियां) नियम, 2023
19. पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम (पशुपालन अभ्यास और प्रक्रिया) नियम 2023
20. पशु जन्म नियंत्रण नियम, 2023

इन सभी नियमों का उद्देश्य पशुओं को अनावश्यक दर्द और पीड़ा से बचाते हुये उनका कल्याण सुनिश्चित करना और नागरिकों को उनके प्रति संवेदनशील बनाना है।

संचार और शिक्षा: आज के समय में पशुओं पर अत्याचार के मामले बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे में बोर्ड द्वारा पशु कल्याण के महत्व को बढ़ावा देने और लोगों को उनके प्रति संवेदनशील बनाने के लिए विभिन्न शिक्षा और प्रचार संबंधी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को पशु संरक्षण और उनके प्रति सही व्यवहार के बारे में जानकारी दी जाती है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में पशुओं के प्रति काफी जागरूकता आई है जिससे पशुओं पर अत्याचार के मामलों को नियंत्रित किया जा सकता है।

सहायता और निगरानी: बोर्ड विभिन्न पशु कल्याण संगठनों को वित्तीय और अन्य प्रकार की सहायता प्रदान करता है। इसके साथ ही, यह सुनिश्चित करता है कि नागरिकों द्वारा पशु कल्याण से संबंधित नियमों और कानूनों का पालन किया जाए और जहां कहीं भी इसका उल्लंघन हो, वहां उचित कार्रवाई की जाए। बोर्ड देश भर में पशु कल्याण और उनकी देखभाल के लिए अनेक योजनाएं चला रहा है। बोर्ड द्वारा विभिन्न पशु कल्याण संगठनों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाती है। बोर्ड द्वारा संचालित कुछ योजनाएं इस प्रकार हैं:

1. जीव–जंतु कल्याण संगठनों (एडब्लूओ) को मान्यता प्रदान करना।
2. नियमित अनुदान, गोपशु बचाव अनुदान।
3. पशुओं की देखभाल के लिए आश्रय आवास योजना।
4. पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) और आवारा कुत्तों का टीकाकरण करने संबंधी योजना।
5. संकटग्रस्त पशुओं के लिए एंबुलेंस सेवाओं की व्यवस्था करने संबंधी योजना।
6. प्राकृतिक आपदाओं के दौरान पशुओं को सहायता देने संबंधी योजना।

इसके अलावा, बोर्ड द्वारा पशु कल्याण के क्षेत्र में निम्नलिखित कार्य भी किए जाते हैं:

i) करतब दिखाने वाले पशुओं का पंजीकरण
ii) सर्कसों का पंजीकरण
iii) टर्फ क्लबों में उपयोग होने वाले घोड़ों का पंजीकरण
iv) कॉलोनी पशु देखभालकर्ता (सीएसीटी) को प्राधिकार पत्र जारी करना
v) मानद जीव जन्तु कल्याण प्रतिनिधियों का नामांकन
vi) विद्यार्थियों के लिए शैक्षिणिक कार्यक्रम

विवाद समाधान: बोर्ड को देश भर से पशुओं के प्रति क्रूरता से संबंधित शिकायतें प्राप्त होती हैं। बोर्ड पशु क्रूरता से संबंधित इन मामलों को संबंधित प्राधिकृत अधिकारियों को कार्रवाई के लिए अग्रेषित करता है। यह पशुओं के अधिकारों की रक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निरीक्षण और रिपोर्टिंग: बोर्ड समय–समय पर पशुओं की स्थिति और उनके कल्याण संबंधी रिपोर्ट तैयार करता है, जो सरकार और समाज को पशुओं की स्थिति के बारे में जागरूक करती है और सुधारात्मक कदम उठाने में मदद करती है।

विगत वर्ष में बोर्ड की उपलब्धियां:

1. बोर्ड ने दिनांक 31.03.2024 तक, 3786 जीव–जंतु कल्याण संगठनों (एडब्लूओ) को मान्यता प्रदान की है। वर्ष 2023–24 के दौरान, बोर्ड ने 51 एडब्लूओ को मान्यता प्रदान की है।
2. बोर्ड ने एडब्लूबीआई की विभिन्न योजनाओं के तहत वर्ष 2023–24 के दौरान 277 एडब्ल्यूओ को 450.43 लाख रु. की अनुदान सहायता दी है।
3. वर्ष 2023–24 के दौरान, अनापत्ति प्रमाण पत्र प्रदान करने के लिए 1095 फिल्मों/विज्ञापनों पर विचार किया गया और फिल्मों/विज्ञापनों में पशुओं के उपयोग हेतु प्री–शूट अनुमति प्रदान करने के लिए 688 फिल्मों/विज्ञापनों को अनुमोदित किया गया।

4. वर्ष 2023–24 के दौरान, बोर्ड ने सीएसीटी के रूप में 868 आवेदकों को प्राधिकार पत्र जारी किए।
5. वर्ष 2023–24 के दौरान, बोर्ड ने 50 मानद जीव–जंतु कल्याण प्रतिनिधियों को नामित किया जिन्होंने बोर्ड द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया और अर्हक अंक प्राप्त किए।
6. वर्ष 2023–24 के दौरान, बोर्ड ने देश के विभिन्न भागों से प्राप्त 1220 क्रूरता संबंधी शिकायतों पर कार्रवाई की/आवश्यक कार्रवाई के लिए संबंधित अधिकारियों को अग्रेषित किया।
7. वर्ष 2023–24 के दौरान, बोर्ड ने अपने मोबाइल पशु क्लीनिक (एमएसी) कार्यक्रम के माध्यम से 657 पशुओं का उपचार किया।
8. बोर्ड द्वारा दिनांक 01 अप्रैल, 2023 से 31 मार्च, 2024 तक एकत्रित किए गए प्रसंस्करण शुल्क की राशि 304.98 लाख रु. है।
9. बोर्ड ने राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रधान सचिव, पशुपालन विभाग से अनुरोध किया है कि वे बोर्ड के उद्देश्यों को प्राप्त करने और पशुओं के अनावश्यक दर्द अथवा पीड़ा को कम करने के लिए पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 के विभिन्न प्रावधानों और इसके अंतर्गत बनाए गए नियमों को लागू करने के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के पशुपालन विभाग को सक्रिय बनाएं।
10. बोर्ड ने सभी जीव–जंतु कल्याण संगठनों, एसपीसीए, जीव–जंतु कल्याण प्रशिक्षकों, मानद जीव–जंतु कल्याण अधिकारियों, सरकारी पशुपालन विभागों, प्राणी उद्यानों और स्वैच्छिक संगठनों से पूरे देश में बड़ी रुचि, जोश और उत्साह के साथ विश्व जीव जन्तु कल्याण दिवस (4 अक्टूबर, 2023), जीव–जंतु कल्याण पखवाड़ा (14 जनवरी, 2024 से 30 जनवरी, 2024 तक) और जीव जंतु कल्याण दिवस (14 फरवरी, 2024) को मनाने का अनुरोध किया है।

प्रत्येक वर्ष बोर्ड पशुओं को होने वाले अनावश्यक दर्द और पीड़ा को रोकने के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को विभिन्न परामर्शियां भी जारी करता है। बोर्ड द्वारा जारी कुछ परामर्शियां इस प्रकार हैं:

i) भारवाही और बोझा ढोने वाले पशुओं को सीधे गर्मी के संपर्क से बचाने और पैदल आवागमन के दौरान अत्यधिक गर्म मौसम के दौरान पशुओं की देखभाल करने से संबंधित परामर्शी।
ii) गुजरात में चक्रवात बिपरजॉय से प्रभावित पशुओं के बचाव और पुनर्वास के लिए परामर्शी।
iii) बकरीद के अवसर पर गायों/बछड़ों एवं अन्य पशुओं की अवैध हत्या/बलि को रोकना तथा पशु ढुलाई नियमों के उल्लंघन के लिए अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए परामर्शी।
iv) विश्व रेबीज दिवस, 2023 पर संदेश जारी करना।
v) दिवाली पर पंचगव्य से बने उत्पादों के उपयोग करने का परामर्श।
vi) अंतर्राष्ट्रीय मांस मुक्त दिवस पर परामर्शी।
vii) चक्रवात में प्रभावित पशुओं के बचाव और पुनर्वास संबंधी परामर्शी।
viii) सर्दियों के दौरान आवारा पशुओं को बिस्तर और चारपाई उपलब्ध कराने की सलाह से संबंधित परामर्शी।
ix) वसंत पंचमी के अवसर पर जीव–जंतु कल्याण पखवाड़ा, 2024 और जीव–जंतु कल्याण दिवस का आयोजन।
x) संकटपूर्ण स्थितियों में पशु बचाव के लिए राज्य/संघ राज्य क्षेत्र अग्निशमन सेवा विभाग की सहायता पर परामर्शी।

इसके अलावा बोर्ड द्वारा विश्व पशु दिवस के अवसर पर पशु कल्याण के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों और संगठनों का मनोबल बढ़ाने और उनके कार्य को महत्व प्रदान करने के लिए प्राणी मित्र एवं जीव दया पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं। दिनांक 04 अक्टूबर, 2023 को विश्व जीव जन्तु दिवस के अवसर पर पशु कल्याण के क्षेत्र में योगदान प्रदान करने वाले 8 व्यक्तियों/जीव–जंतु कल्याण संगठनों को पुरस्कार प्रदान किये गये।

आज के समय में, जब पशु और मानव का संघर्ष लगातार बढ़ता जा रहा है तब मानव–पशु के संघर्ष को कम करने और पशुओं के प्रति अत्याचार को रोकने में बोर्ड की भूमिका और महत्वपूर्ण हो जाती है। बोर्ड लगातार समाज में जागरूकता फैलाकर, पशुओं को खाना खिलाने वाले और उनकी देखभाल करने वाले व्यक्तियों को प्राधिकार पत्र जारी करके, विश्व जीव

जन्तु दिवस के अवसर पर पशुओं के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों/पशु संगठनों को पुरस्कृत करके, विभिन्न अवसरों पर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को परामर्शियां जारी करके, प्रदर्शनकारी पशुओं, घोड़ों, सर्कसों का पंजीकरण करके पशुओं को अत्याचार से बचाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। देश के प्रत्येक जिले में पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम समितियों (एसपीसीए) के प्रभावी और कार्यात्मक समितियों की स्थापना और प्रत्येक राज्य में मजबूत राज्य पशु कल्याण बोर्ड (एसएडब्ल्यूबी) की स्थापना समय की आवश्यकता है और विभिन्न राज्य और जिला अधिकारियों के साथ इस संदर्भ में पत्राचार जारी है। बोर्ड के सामने जंगलों के घटने और मानव आबादी के बढ़ने के कारण मानव–पशु संघर्ष से निपटना एक चुनौती है और बोर्ड लगातार उस दिशा में कार्य कर रहा है। भारतीय जीव–जंतु कल्याण बोर्ड भारत में पशुओं के अधिकारों की रक्षा करने के साथ–साथ पशु कल्याण के क्षेत्र में एक सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में भी काम कर रहा है।

★★★★

दो वर्तमान का सत्य सरल,
सुंदर भविष्य के सपने दो
हिंदी है भारत की बोली
तो अपने आप पनपने दो
यह दुखड़ों का जंजाल नहीं,
लाखों मुखड़ों की भाषा है
थी अमर शहीदों की आशा,
अब जिंदों की अभिलाषा है
मेवा है इसकी सेवा में,
नयनों को कभी न झंपने दो
हिंदी है भारत की बोली
तो अपने आप पनपने दो

गौमूत्र फ़िनाइल ने बदली ज़िंदगी.... सफलता की कहानी

डॉ. सुनिल भांडेकर, पशुधन अधिकारी
(केंद्रीय पशु प्रजनन क्षेत्र, चिपलिमा ओड़िशा)

यह बात है वर्ष 2012–2013 की जब मेरे दिमाग में यह बात आई कि क्यों न गौमूत्र को इस्तेमाल कर कुछ उपयोगी बनाया जाए। गौमूत्र जो कि हर गांव में हमेशा ही उपलब्ध होता है। इसलिए इसका उपयोग आसानी से ग्रामीण किसानों की आय बढ़ाने में किया जा सकता है। इसी भावना से थोड़ा अनुसंधान किया गया और एक उत्पाद गौमूत्र फिनाइल का आविष्कार हुआ। इस गौमूत्र फार्मूला आविष्कार को भारत सरकार द्वारा पेटेंट करवाया गया। (पेटेंट प्रमाण पत्र संलग्न है)

पेटेंट प्रमाणीकरण पश्चात उत्पादन के लिए राजनंदगाव के एक छोटे आदिवासी गांव के किसानों से बातचीत शुरू हुई और कुछ किसान इस कार्य को करने को राजी हुए। साथ–साथ किसानों को एक सूत्र में बांधने के लिए उन्हें स्व–सहायता समूह बनाने के लिए प्रेरित किया गया। महिला किसानों ने सहयोग किया। महिला समूह का पंजीकरण किया गया (पंजीयन प्रमाण पत्र सलग्न है)। किसानों को इस विषय पर 3 दिनों का विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया और उस प्रशिक्षण में किसानों को इस विषय पर पूरी जानकारी, प्रायोगिक कार्यों के साथ उपलब्ध कराई गई।

उत्पादन के लिए आवश्यक सामग्री को जुटाया गया और काम में आ रही कुछ परेशानियों का समाधान किया गया। अब सुरभि महिला स्व–सहायता समूह द्वारा उत्पादन चालू है एवं उत्पाद को शहर के स्थानीय बाजार में उपलब्ध करा दिया गया है। बाजार से अभी अच्छा विक्रय हो रहा है, महिलाओं को आमदनी का एक साधन मिल रहा है। भविष्य में उत्पादन, गुणवत्ता पर और ध्यान दे कर यह लाभ और बढ़ेगा।

गौमूत्र फ़िनाइल किसानों की आय दोगुनी करने का भी एक साधन है। यह पूरी तरह से स्वदेशी है साथ ही जैविक भी है। किसी भी तरह की रासायनिक चीजों का उपयोग नहीं किया गया है।

गौमूत्र से फ़िनाइल बनाते हुये महिला किसान सदस्य, ग्राम–अमलीडीह, छत्तीसगढ़

क्रम सं/SL No :033128512

पेटेंट कार्यालय,भारत सरकार
पेटेंट प्रमाण पत्र
(पेटेंट नियमावली का नियम 74)

The Patent Office, Government Of India
Patent Certificate
(Rule 74 of The Patents Rules)

पेटेंट सं. / Patent No. : 466523

आवेदन सं. / Application No. : 530/KOL/2014

फाइल करने की तारीख / Date of Filing : 10/05/2014

पेटेंटी / Patentee : 1.P. L. Choudhary 2.Yashwant Atbhaiya 3.Sunil Bhandekar 4.Kiran Kumari

प्रमाणित किया जाता है कि पेटेंटी को, उपरोक्त आवेदन में यथाप्रकटित *Cow urine phenyl* नामक आविष्कार के लिए, पेटेंट अधिनियम, 1970 के उपबंधों के अनुसार आज तारीख मई 2014 के दसवें दिन से बीस वर्ष की अवधि के लिए पेटेंट अनुदत्त किया गया है।

It is hereby certified that a patent has been granted to the patentee for an invention entitled *Cow urine phenyl* as disclosed in the above mentioned application for the term of 20 years from the 10th day of May 2014 in accordance with the provisions of the Patents Act,1970.

अनुदान की तारीख : 07/11/2023
Date of Grant :

पेटेंट नियंत्रक
Controller of Patents

टिप्पणी - इस पेटेंट के नवीकरण के लिए फीस, यदि इसे बनाए रखा जाना है, मई 2016 के दसवें दिन को और उसके पश्चात प्रत्येक वर्ष मे उसी दिन देय होगी।

Note. - The fees for renewal of this patent, if it is to be maintained, will fall / has fallen due on 10th day of May 2016 and on the same day in every year thereafter.

गौमूत्र फ़िनाइल स्वदेशी फार्मूला को भारत सरकार द्वारा पेटेंट प्रमाण पत्र, दिनांक– 07/11//2023

प्रपत्र - दो
(नियम - 6 देखिये)

छत्तीसगढ़ शासन

सोसायटी के रजिस्ट्रीकरण का प्रमाण पत्र

क्रमांक: 122202364082 | संदर्भ क्रमांक: 4100478769

यह प्रमाणित किया जाता है सुरभि उत्पादक महिला स्व सहायता समूह, अमलीडीह सोसायटी जो श्रीमती रीना साहू, मकान न0. - 135, वार्ड न0. - 09, ग्राम - अमलीडीह, पोस्ट - करमतरा, तहसील - डोंगरगांव, जिला - राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) तहसील Dongargaon जिला Rajnandgaon में स्थित है, छत्तीसगढ़ सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1973 (क्रमांक 44 सन् 1973) के अधीन तारीख 07/08/2023 को रजिस्ट्रीकृत की गई है।

प्रमोद कुजूर
सहायक रजिस्ट्रार
फर्म्स एवं संस्थाएँ दुर्ग संभाग दुर्ग
छत्तीसगढ़

This is computer generated certificate. This certificate can be verified online at http://rfas.cg.nic.in/ through Certificate No. and Date of Registration

Digitally signed
Reason: Issuing Registration of New Society
Location: Durg Sambhag

★★★★

जिंदगी कैद है सीता की तरह

पंकज कुमार सिंह,
अनुभाग अधिकारी (मुख्यालय)

जिंदगी कैद है सीता की तरह
क्या करूँ क्या न करूँ
कुछ समझ में नहीं आता
राम कब आयेंगे, मालूम नहीं
काश कोई रावण ही आ जाता
रोज बढता हूँ जहाँ से आगे
फिर वहीं लौट आता हूँ
कई बार लाँघ चूका हूँ जिनको
उन्हीं दीवारों से टकराता हूँ
ढूंढते ढूंढते थक गया हूँ, मगर
पानी की तो छोड़िये, यहाँ
मृग मरीचिका भी नजर नहीं आता
अब तो रक्त बन गया है
पानी की तरह, जिंदगी कैद है सीता की तरह
कल्पना के सागर में डूबता–उतराता हूँ मैं
कभी रेत की नाव, तो कभी पत्थर के मांझी
नहर जादू की, पुल दुआओं के
झुनझुने चंद योजनाओं के,
अपने इन सारे खिलौनों को साथ लिए
खुदा जाने, हम कब से चलते हैं
न गिरते हैं, न संभलते हैं
अब तो आश्वासान ही लगने लगे हैं
तक़दीर की तरह, जिंदगी कैद है सीता की तरह।
रोज बसते हैं यहाँ कई शहर नए
मगर न कहीं धूप, न कहीं साया न शबाब
कितने अरमां है किसके सेहरा में
कौन रखता है इन ख्वाबों का हिसाब
लोग कहते हैं कि समंदर हूँ मैं
पर मेरे जेब में कतरा भी नहीं
खैरियत अपनी लिखा करता हूँ
क्योंकि, अब तो जीने मरने का खतरा भी नहीं
हालात बन चुके हैं मझधार में घिरे नाव की तरह
जिंदगी कैद है सीता की तरह।
न जाने दिल क्यों बार–बार घबराता है
क्या करूँ क्या न करूँ
कुछ समझ में नहीं आता है
इन हालातों में, अपने हाथ की
चंद टेढ़ी–मेढ़ी रेखाओं को पढ़ा करता हूँ
कभी कुरान तो कभी गीता की तरह
जिंदगी कैद है सीता की तरह।

★★★★

कुछ अपनी, कुछ साहब की

सुनील कुमार,
अनुभाग अधिकारी (मुख्यालय)

समंदर उल्टा सीधा बोलता है।
तहजीब से तो प्यासा बोलता है।
यहाँ उसकी कुर्सी बोलती है।
वहाँ देखेंगे वो क्या बोलता है।।
माना कि नियम से काम कराओगे मुझसे।
पर क्या डरा के नियम बताओगे मुझे।
जब वक्त पड़ा तो जरूरत बताओगे मुझे।
और जब जरूरत खत्म हुई तो आँख दिखाओगे मुझे।।
साहब आज हम छोटे लोग हैं, डर जाएंगे।
पर एक दिन तो हम भी साहब बन जाएंगे।
जरूरत पड़ी तो उस वक्त आपको अपने किसी काम से याद आएंगे।
पर हम आपकी तरह ना पेश आएंगे।।
कार्यालय भी एक परिवार होता है साहब।
छोटा बड़ा सब साथ होता है साहब।
आँख की बजाय जरा हाथ थाम के तो दिखाओ साहब।
फिर कार्य की प्रवीणता और गति देखो साहब।।
हम वो लोग हैं जो कोरोना काल में चौबीस घंटे डटे रहे।
आप घर बैठे थे मास्क लगा के और हम कार्यालय में खड़े रहे।
कोरोना से तो भगवान ने बचा दिया साहब।
पर आपके तंज कस के काम कराने से न बचाया साहब।।
दिल से एक बात बतानी थी।
आपकी बातों से मेरी हिम्मत टूट जानी थी।
पर हिम्मत को हमने टूटने न दिया।
उम्मीद को हमने छूटने न दिया।
कि कभी तो कोई अफसर पाक–साफ होगा।
आने वाला समय हमारे साथ होगा।।

★★★★

आइए हम ये प्रार्थना न करें कि हमारे ऊपर खतरे न आएं, बल्कि यह प्रार्थना करें कि हम उनका निडरता से सामना कर सकें।

(रबिन्द्रनाथ टैगोर)

नारी पीड़ा- संघर्ष और सम्मान

सुश्री अंतिमा सोनी,
आशुलिपिक (मुख्यालय)

नारी हूँ, पर क्या मैं मनुष्य नहीं हूँ।
फिर भी, सभी जिम्मेदारियों के बोझ तले दबी हूँ।।
समझ नहीं आता, समझ नहीं आता।
क्यों कन्या जन्म से कलंक लग जाता।।
क्या कहूँ, कैसे कहूँ, किससे कहूँ।
यही प्रश्न क्यों बार–बार सताता।।
मेरे जन्म लेने से क्यों परिवार शर्माता।
लड़का होने पर वही परिवार बधाईयाँ पाता।।
मुझे शुरू से ही क्यों नहीं कोई अपनाता।
हर पल मुझे पराया ही समझा जाता।।
क्या कहूँ, कैसे कहूँ, किससे कहूँ।
यही प्रश्न क्यों बार–बार सताता।।
हर क्षण क्यों मुझसे भेदभाव किया जाता।
मुझ पर ही क्यों नज़रो का पहरा बैठाया जाता।।
सुपुत्री पर क्यों नहीं प्यार लुटाया जाता।
वहीं कुपुत्र को तो सम्मानित किया जाता।।
क्या कहूँ, कैसे कहूँ, किससे कहूँ।
यही प्रश्न क्यों बार–बार सताता।।
यदि शिक्षा, लाड–प्यार कोई मुझ पर लुटाता।
तो लक्ष्मी बाई बन कर ह्यूरोज भी मारा जाता।।
कन्या जन्म पर न शोक मनाओ।
उन्हें शिक्षित कर साहसी बनाओ।।
क्या कहूँ, कैसे कहूँ, किससे कहूँ।
यही प्रश्न क्यों बार–बार सताता।।
आओ प्रण करें सुशिक्षित करें नर–नारी को।
ताकि जन्म दे सके एक विकसिति भारत को।।
वह नारी शक्ति जो असम्भव को सम्भव कर दे।
समाज को अपनी शक्तियों से अवगत करा दे।।
क्या कहूँ, कैसे कहूँ, किससे कहूँ।
यही प्रश्न क्यों बार–बार सताता।।

हिन्दी इसी प्रकार समृद्ध और सम्पन्न रहे, जिस प्रकार भारत की शाश्वत सनातन संस्कृति है।

★★★★

नारियां उपेक्षित हैं

आले अहमद,
आशुलिपिक (मुख्यालय)

माँ को पुत्र गर हुआ,
परिवार ही प्रसन्न है।
कन्या का जन्म ही,
मृत्यु जैसा सन्न है।।
नारी समझ के नारी ,
खुशी न आज होती।
शामत सवार जैसे,
मुँह फाड़–फाड़ रोती।।
कुठाराघात निर्मम,
करता दहेज भारी।
बेटी गरीब की अब,
रह रही कुँवारी।।
कौन सोचता है,
नारी भी एक अंग है।
नारी बिना यह सृष्टि,
सर्वथा ही भंग है।।
कुरीतियों का जाल है,
फैला समाज में।
कब तक मरेंगी बहनें,
अब लोक–लाज में।।
पिता भी आज पुत्र का,
बेभाव मोल करता।
सम्पत्ति पर नयन गड़े,
रिश्तों की तोल करता।।
नारियाँ भी संगठित,
हों एक मंच पर।
अस्मिता बचाने के लिए,
काली का रुप–धर ।।
अबला न तुम रहोगी,
सम्मान सब करेंगे।
मूर्ख मानते नहीं,
हैं मान सब करेंगे।।

★★★★

दुखवर्धक दरिद्र भी छोड़ जाएगा साथ ।
सुखवर्धक प्रिय वचन यदि बोलें सब के साथ ।।
(थिरूवल्लुवर)

डॉ. कुरियन की "क्षीर गंगा": भगीरथ प्रयास

डॉ आशुतोष सिंह, वरिष्ठ प्रबन्धक
(राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड)

विकट था हिन्द की धरा पर, क्षीर की गंगा बहाना,

संशय पाश में सब थे पड़े कि, भगीरथ को फिर कैसे बुलाना ।

कैसे पलेंगे शिशु, वय–वृद्ध, बिन क्षीर धारा,

साजिशें भी थीं विदेशी ताकतों की, और थी अवरुद्ध अमृत दुग्ध धारा ।

इस प्रलय के काल में अनभिज्ञ योगी, आकर रुके आणंद की पावन धरा पर ।

अपने भगीरथ प्रयासों से बहा दी हिन्द की धरा पर यह क्षीर गंगा,

दूध के उत्पाद में लहराया भारत तिरंगा ।

इस कर्मयोगी के कर्म ने धराशायी की साजिशें, जो पल रही थीं विदेशी ताकतों की,

मासूम कृषक न बन जाए उनके निवाले, मात खाए कपट कुंठित व्यवसाय वाले ।

एकता में ही शक्ति है सहकार की, इस अलख की धूनी रमायी हर वर्ग में,

आय का साधन बना डेरी व पशुपालन, मातृ–शक्ति को बनाया स्वावलंबी ।

जयति जय जय जय हे कर्मयोगी, ऋणी है, यह भारतवर्ष निरंतर तुम्हारा,

धन्य कर दिया इस धरा को जन्म लेकर, आपके इस कर्म पथ पर न्योछावर ये जीवन सारा ।

★★★★

मेरा उत्तराखंड

डॉ. शीतल पन्त, सहायक आयुक्त
(एनआईएएच बागपत)

क्यों यहाँ की हवा शुद्ध ,
क्यों यहाँ का पानी मीठा,
क्यों यहाँ के लोग भोले,
क्यों यहाँ इतनी सुन्दरता।।

क्यों गंगा उतरी यहाँ ही ,
क्यों साधू तपे यहाँ ,
चोटियों कि गोद में
बहती हुई धाराएं जहाँ ।।

सीढ़ियों में खेत,
सोना उगाये धरा ,
एक अकेला पहाड़ ही,
रोके कई आपदाएं यहाँ ।।

बर्फ गिरते ही जहाँ,
स्वर्ग सा आनंद मिले
चांदनी पहाड़ लगे तब
मन प्रफुल्लित हुए ।।

वादियों में फूल खिलें ,
तीर्थ–धाम सजे यहाँ,
अनेक प्रजातियाँ सकुशल जहाँ,
कुछ तो है ऐसा दिव्य यहाँ ।।

★★★★

रहिमन चुप हुइ बैठिए, देखि दिनन के फेर ।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै देर ।।

(रहीम)

धरा का करो सिंगार

डॉ. हिमांशु शर्मा
सहायक आयुक्त (एनआईएएच, बागपत)

धरा का करो सिंगार, वरना सब धरा रह जायेगा।
वृक्षों को नहीं बचाया तो, जीवन धरा रह जायेगा।

विकास की दौड़ में रहना, हर मानव का सपना है।
पर न हो विकास में विनाश, यह फ़र्ज़ भी निभाना है।
धरती माँ को सजायेंगे, तो जीवन सफल हो जायेगा।
धरा का करो सिंगार, वरना सब धरा रह जायेगा।।

केवल अपना ही नहीं, भावी पीढ़ी का भी ध्यान रहे।
हमारी करनी के कारण, दुःख न वह अपार सहे।
वरना आने वाली पीढ़ी का जीवन कठिन हो जायेगा।
धरा का करो सिंगार, वरना सब धरा रह जायेगा ।।

माँ की रक्षा करना मन से, हर मानव का कर्त्तव्य है।
जल और जंगल न बिगड़े, तभी मानव सभ्य है।
नहीं दिया ध्यान इधर, ताप अधिक हो जायेगा।
धरा का करो सिंगार, वरना सब धरा रह जायेगा ।।

इसलिए भाइयों जागो, और पर्यावरण की रक्षा करो।
दृढ सोच के साथ, वृक्षारोपण करने का तुम व्रत धरो।
नहीं किया यदि ऐसा हमने, जीवन नरक हो जायेगा।
धरा का करो सिंगार, वरना सब धरा रह जायेगा ।।

सबको दे दो सीख, और खुद भी इसे अपनाओ ।
हे धरती के पूतों, कम से कम एक वृक्ष तो लगाओ।
ऐसा करने से ही धरा पर, जीव जगत बच पायेगा।
धरा का करो सिंगार, वरना सब धरा रह जायेगा ।।

★★★★

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और संस्कारों की पहचान है। यह भारत की आत्मा को प्रतिबिंबित करती है और एक सूत्र में पिरोती है।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी)

बात हिंदी की

हिंदी पखवाड़ा यहाँ ऐसे सदा मनाय
जैसे हम पितु मात का श्राद्ध कर्म करवाय
भारत ही एक देश है जिसमें ऐसा होय
मुख्य अदालत की नहीं अपनी भाषा कोय
अपनी भाषा बोलते संकोचों के साथ
अंग्रेजी को बोल वो गौरव से मुसकात
हिंदी भाषा सी नहीं जग की भाषा कोय
जैसा बोलें सो लिखें घालमेल ना होय

मधुबाला
निजी सहायक (मुख्यालय)

★★★★

सफलता हमेशा असफलता के स्तंभ पर खड़ी होती है।
इसीलिए किसी को भी असफलता से घबराना नहीं चाहिए।

हो गया था पतझड़, मधुकाल, पत्र तो आते हाय, नवल!
झड़ गये स्नेह वृंत से फूल, लगा यह असमय कैसा फल !!

पल्लव–सुमित्रानंदन पन्त

भविष्य दर्पण - भारत / 2047 (मेरी दृष्टि से)

विवेक कुमार सरोज,
पशुधन अधिकारी (मुख्यालय)

प्रस्तावनाः– आज का आधुनिक भारत विकास की दृष्टि से एक विकासशील देश है। भारत का वर्तमान आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक परिदृश्य, भारत को भविष्य में एक विकसित भारत की ओर अग्रसारित करता है। आज के उपरवर्णित विषय पर हम भारत का भविष्य – 2047 हेतु विस्तृत परिकल्पना भारत को विकसित देश के रूप में देखने के लिए करने जा रहे है।

भारत की वर्तमान स्थितिः– आज हमारा देश विश्व की पाँच सबसे समृद्ध आर्थिक देशों की सूची में शामिल हो गया है परन्तु अभी भी हम विकासशील देश की श्रेणी में ही अपने आप को खड़ा हुआ पाते हैं। दिनांक 19 सितम्बर, 2024 के अनुसार हमारे देश की जनसंख्या लगभग 145 करोड़ है जो कि विश्व में सर्वाधिक है। हम कुछ उत्पादों जैसे दूध में प्रथम, मत्स्य उत्पाद में द्वितीय, अण्ड़े के उत्पादन में द्वितीय हैं।

इतना अधिक दुग्ध उत्पादन होने के बावजूद हमारा प्रति पशु उत्पादन अन्य विकसित देशों की तुलना में काफी कम है। भारत एक समृद्धशाली देश है परन्तु इसको विकसित बनाने हेतु हमें कुछ महत्वपूर्ण सुधार करने की नितान्त आवश्यकता है जिसका वर्णन बिन्दुवार, निम्नवत प्रस्तुत है।

भारत को 2047 तक विकसित बनाने हेतु प्रस्तावित सुधारः–

1) आर्थिक सुधारः जैसा कि हम सभी जानते हैं कि आज का भारत एक विकासशील देश होते हुए भी विश्व के पाँच समृद्धशाली (आर्थिक) देशों की सूची में शामिल है। आज भी भारत की आर्थिक व्यवस्था कृषि एवं सहायक क्षेत्रों पर निर्भर है। भारत की विशाल जनसंख्या के भरण–पोषण एवं निर्यात हेतु भारत के पीढ़ीगत संसाधन एवं उपक्रम पर्याप्त नहीं हैं। हमें आर्थिक स्थिति के सुधार हेतु औद्योगिक क्रान्ति की ओर देखना पड़ेगा जिसकी तरफ हम अग्रसर हैं। व्यापार एवं उद्योग ही देश को आर्थिक सुदृढ़ बना सकते हैं। इसके लिए बड़े औद्योगिक घरानों का विकेन्द्रीकरण करना तथा छोटे–छोटे व्यवसायियों को बढावा देना होगा। लघु और सीमान्त किसानों को उद्योग धन्धों की ओर आकर्षित करना होगा। चूंकि देश की एक बहुत बड़ी मानव शक्ति पशुपालन एवं कृषि जैसे पीढ़ीगत कार्यों में व्यस्त है उनको नवीन पशुपालन एवं कृषि आयामों जैसे खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य प्रर्वधन एवं अन्य तकनीकी का उपयोग करने के लिए प्रेरित करना होगा।

2) सामाजिक सुधारः भारत एक बहु–धार्मिक मान्यताओं वाला देश है जहाँ लोग भिन्न–भिन्न धर्मों, सम्प्रेदायों, जातियों, क्षेत्रों में बंटे हुए हैं। जिससे विकास की गति धीमी पड़ी हुई है। सामाजिक चेतना का जागरण कर अलग–अलग पड़े समूहों को आपसी समरसता के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करना होगा, जिससे देश में आतंकवाद, उग्रवाद, जाति–वाद, भेदभाव को कम किया जा सके, जिसके फलस्वरूप एक सही दिशा में कार्य करते हुए हम देश को नई दिशा एवं दशा प्रदान कर विकसित भारत का सपना पूर्ण कर सकते हैं।

3) राजनैतिक सुधारः किसी भी देश को आगे बढाने के लिए वहाँ के राजनेताओं मे दृढ इच्छाशक्ति का होना बहुत आवश्यक होता है। राजनेता देश के पथप्रदर्शक होते हैं. जिनको अनुसारित कर देश आगे बढ़ सकता है। आज देश के लगभग 150 देशों में रह रहे 2 करोड़ भारतीयों द्वारा हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है।

दुनिया के लगभग 40 देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालय में आज हिन्दी भाषा पाठ्यकमों का हिस्सा है। हमारे अपने ही देश में केवल 41 प्रतिशत आबादी की ही मातृभाषा हिन्दी है। 75 प्रतिशत भारतीयों की आज भी हिन्दी दूसरी भाषा है जिसे वे समझ और बोल सकते हैं। मेरा यहाँ हिन्दी भाषा का उल्लेख करना इसलिए नितांत आवश्यक हुआ क्यूंकि अगर देश की एक राष्ट्रभाषा ''हिन्दी'' हो जाये तो अभिव्यक्ति का आदान–प्रदान एवं प्रसार आसानी से होगा एवं देश का विकास होगा, जिसके लिए एक मजबूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होनी चाहिए।

राजनेताओं द्वारा विदेशों से अच्छे सम्बन्ध बना कर देश के घरेलू बाजारों में व्यापार कर अधिक राजस्व प्राप्त किया जा सकता है।

4) हरित सुधारः जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है। आज भी देश की 70 प्रतिशत से ज्यादा आबादी गांवों में निवास करती है जो परम्परागत खेती, पशुपालन एवं मत्स्यपालन कर अपना जीविकोपार्जन कर रहे हैं। अगर हम देश को विकसित देशों की श्रेणी में लाने का सपना देख रहे हैं तो हमें परम्परागत ढांचे को तोड़कर, नवीन तकनीकी एवं संगठित कृषि एवं पशुपालन को अपनाना होगा जैसे कि समेकित खेती, जिसमें हमे पशुपालन मत्स्य और कृषि को एक साथ एक समय उसी संसाधनों से करते हैं। इसके अलावा कृषि एवं पशुओं की उच्च गुणवता वाली उत्तम उत्पादन वाली नस्लों का चयन करना चाहिए।

आज का युग खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य प्रवर्धन एवं नवीन तकनीकी के समावेश का युग है। इन सभी उपक्रमों एवं प्रक्रमों का उपयोग कर निश्चित ही एक दिन हम अपने को विकसित कर पायेंगे।

उपरोक्त वक्तव्यों के अलावा भी किसी देश को विकसित देश बनाने में निम्न मानकों पर भी खरा उतरना होता है– जैसेकि–

(क) मानव विकास सूचकांक (HDI) यह एक ऐसा सूचकांक है जिसमें मनुष्यों के आर्थिक विकास, शैक्षिक विकास एवं आय का स्तर देखा जाता है। भारत को इस सूचकांक को भी मद्देनजर रखते हुए अपना विकास करना है।

(ख) सामाजिक विकास सूचकांक (SDI) इस सूचकांक में मानव की सामाजिक स्थिति का मापन किया जाता है। जिसमें सामाजिक समरसता एवं विकास का मापन होता है।

(ग) हरित सूचकांकः देश अपने पर्यावरण को कितना सुरक्षित रखता है, उसकी जैव सम्पदा कितनी शक्तिशाली है यह सूचकांक निधारित करता है।

(घ) खुशहाली का सूचकांकः– यह एक ऐसा सूचकांक है जिस में किसी देश की खुशहाली उसके धन–धान्य से मापी जाती है। आज भी भारत विश्व के खुशहाल देशों की सूची (137) के 126वें पायदान पर है। सबसे खुशहाल देशों में नीदरलैण्ड, ग्रीनलैण्ड, लक्जपमबर्ग एवं स्विटजरलैण्ड आज सबसे खुशहाल देश हैं।

उपसंहारः– भारत की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृढता एवं यहां पर निवास कर रहें नागरिकों की कर्तव्यपरायणता, सत्यनिष्ठा एवं कठोर परिश्रम से किये गये विकास कार्यों से निःसंदेह एक दिन भारत विकसित देशों की सूची में अवश्य शामिल होगा।

2047 की परिकल्पना को हम देशवासी अपनी कार्यकुशलता से औद्योगिकीकरण को अपनाकर और भी पूर्व प्राप्त कर सकते हैं, यह मेरा अटूट विश्वास है।

★★★★

यह मन इस लोक में कहाँ थमता था?
कल तक कवि आसमान में रमता था।
ऐसा युग पलटा, आज मैं पूछता हूँ–
क्या स्वर्ग ही लिये धूल की समता था?

रूबाई–शमशेर बहादुर सिंह

यात्रा वृतांत

समय का पहिया कैसे निर्बाध गति से चलता रहता है! कब साल शुरू होता है और कब अचानक एकदम से बस समाप्त होने ही वाला होता है। रोज की आपाधापी में कई पल महसूसियत के बिना ही फुर्र से उड़ जाते हैं। यह भागा–दौड़ी यूं तो आज के समय में सभी के जीवन का अटूट हिस्सा है पर सरकारी कर्मचारी तो इसकी मार से कुछ ज्यादा ही त्रस्त होते हैं। या फिर ये कि एक भुक्तभोगी होने के कारण मैं उनसे ज्यादा सामीप्य महसूस करती हूं। हमें लगता है कि जैसे सारी सरकार का बोझ हमारे ही कंधों पर है। हम इसी मुगालते में खुश रहते हैं कि यदि हम कुछ समय दफ्तर से दूर होंगे तो शायद पहाड़ ही टूट पड़ेगा। यही सोचकर हमेशा ही छुट्टी लेने से बचते रहते हैं। हालांकि मैं यहां एक वर्ग विशेष के सरकारी कर्मचारियों की बात कर रही हूं क्योंकि इनमें एक (बड़ा वर्ग उनका) भी है जो जन्मजात विज्ञ होते हैं। नौकरी में आते ही अपने सभी इंसेंटिव्स के बारे में जान– समझ लेते हैं और हंसते–खेलते, घूमते– फिरते जीवन का आनंद लेते हैं।

कहां जाएं

खैर... बात तो पर्यटन की की जानी है तो विषय पर ही आया जाए। तो उन कर्मठ कार्मिकों को यदि कभी अचानक घूमने जाने का मन करे, यदि वे किसी 'लॉंग वीकेंड' का फायदा उठाने की ठान ही लें तो अचानक कहां जाएं? जो भीड़–भाड़ से दूर भी हो और दिल्ली के पास भी हो। जहां जाना आसान हो, जहां जा कर रहना आसान हो...बिना किसी बुकिंग के वहां जाया जा सके और रहने का कोई ठौर भी ढूंढ़ा जा सके। तो ऐसे ही वर्ग के लिए एक खूबसूरत सी जगह है

स्वाति मेल्टी
सहायक निदेशक (रा.भा.)
(मुख्यालय)

कैसे जाएं

जी हां, लैंसडाउन, उत्तराखंड का ही एक छोटा सा पहाड़ों से घिरा खूबसूरत शहर है, जो दिल्ली से मात्र 260 किमी की दूरी पर स्थित है। जहां अपनी गाड़ी से 6–7 घंटों में आसानी से पहुंचा जा सकता है। रास्ते की बात करें तो बहुत ही अच्छा रास्ता है दिल्ली– मेरठ एक्सप्रेस–वे लेते हुए मेरठ, खतौली, मीरापुर, बिजनौर, नजीबाबाद, कोटद्वार और फिर आ गया लैंसडाउन। यदि आपके पास समय है और मौसम सुहाना है तो आप बीच–बीच में रूक कर रास्ते का आनंद लेते हुए आराम से आ सकते हैं। खतौली में रुककर कुछ जलपान लिया जा सकता है। रास्ते में पड़ने वाला कोटद्वार लगभग लैंसडाउन के प्रवेश द्वार सा है। लैंसडाउन से इसकी दूरी लगभग 40 किमी है। यहां से पहाड़ी रास्ता शुरु होने लगता है और ठंडी–ठंडी हवाओं के झोंके महसूस होने लगते हैं। एक नई ऊर्जा का संचार होने लगता है और आप समझ जाते हैं कि

आपने देव–भूमि में प्रवेश कर लिया है। यहां से लैंसडाउन लगभग 1–2 घंटे की दूरी पर ही है।

रास्ते में क्या देखें

कोटद्वार में एक बहुत ही प्रसिद्ध और सिद्ध हनुमान मंदिर है, सिद्धबली मंदिर। यहां की मान्यता है कि जो भी आप सच्चे दिल से मांगते हैं वो पूरा होता है। जिन श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी होती हैं वो यहां लंगर/भंडारा लगाते हैं। आप यकीन मानिए कि यदि आप आज कोई ऐसा प्रण करें कि मुझे भी इस मंदिर में भंडारा करवाना है तो आपको समय लेना पड़ेगा क्योंकि वहां पहले ही श्रद्धालुओं की वेटिंग लिस्ट चलती है। कम से कम 6 माह का समय लग जाएगा आपका नंबर आते–आते, तो इससे भी आप इस मंदिर की महत्ता को समझ सकते हैं। आप लैंसडाउन जाते समय या वहां से आते समय कभी भी इस मंदिर के दर्शन कर सकते हैं क्योंकि आपका रास्ता यहीं से होकर जाता है। कोटद्वार के पास ही एक और जगह है दुगड्डा। वैसे तो यह एक छोटा सा गांव ही है पर यहां आपको यह बताना आवश्यक है कि यदि आपको अपनी गाड़ियों में पेट्रोल भरवाना है तो यही सही जगह है क्योंकि यहां से लेकर लैंसडाउन तक और लैंसडाउन में भी कहीं कोई पेट्रोल पम्प नहीं है। हां, आवश्यकता पड़ने पर कुछ दुकानदारों से ब्लैक में पेट्रोल मिल जाता है पर उसकी गुणवत्ता के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।

तो लीजिए दुगड्डा से तेल भरवाकर आप फिर चल पड़े हैं, लैंसडाउन के रास्ते पर। पूरा रास्ता मंजिल के प्रति और जिज्ञासु बनाता है। रोमांचकारी पहाड़ी टेड़े–मेढ़े रास्ते। गाड़ी ज़रा संभलकर चलानी होगी। लैंसडाउन समुद्रतल से 1780 मीटर की उँचाई पर स्थिति है। बहुत ही सुहावना मौसम होता है और पहाड़ों की एक खास बात है कि चाहे आप किसी भी मौसम में चले जाएं आपको आनंद ही आएगा। गर्मियों में इन पहाड़ों पर बेशक बहुत तेज धूप पड़ती है। क्योंकि यहां प्रदूषण नहीं होता। सूरज बस मानो सामने ही होता है। लेकिन ये क्या गज़ब है कि ज़रा सा पेड़ों की छांव में खड़े होते ही आप फिर से आनंद और शीतलता की उसी सुरम्यता का हिस्सा बन जाते हैं।

कहां ठहरें

कोटद्वार से जब आप लैंसडाउन की तरफ जाते हैं तो रास्ते में पड़ता है जहरीखाल, जी नहीं ज़हर से इसका कोई संबंध नहीं है। यह असल में जय हरी खाल का फर्राटे से बोला जाने वाला रुप है। यह मेन लैंसडाउन बाजार से 6 किमी दूर है। यहां पर आपको रहने के कई विकल्प मिल जाएंगे जो आपके बजट के अनुसार हो सकते हैं। जैसे–ग्रीन वैली होमस्टे, स्पोर्टस लवर होमस्टे, विंडसर कॉटेज आदि और बहुत से अन्य भी। लैंसडाउन के बजाय यहां ठहराना जेब के मुफीद तो है ही यहां शांति और सुकून भी है। यहां रिसोर्ट हैं, जिनमें आप ठहर सकते हैं। सब में ऑनलाईन बुकिंग होती है इसलिए कोई परेशानी नहीं होती। Windsor cottage भी काफी बढ़िया जगह है। हालांकि यह Luxury चाहने वालों, पांच सितारा होटलों में रहने वालों के अनुकूल नहीं है। पर साथ–सुथरा कमरा, हालांकि थोड़ा छोटा, केवल मूलभूत सुविधाओं–वाला, आस–पास एकदम खुला–खुला वातावरण, चारों ओर हरियाली ही हरियाली/बच्चों के लिए एक छोटा adventure park, कमरों के बाहर लगी कुर्सियां, मतलब आप शांति में रहना चाहें तो आपको कोई रोकने वाला नहीं और सबसे जरुरी खाना, वो तो बहुत ही बढ़िया। मेरा तो विचार है कि आपको यहीं खाना चाहिए क्योंकि मेन मार्केट में बहुत ज्यादा विकल्प उपलब्ध नहीं हैं। जहरीखाल से लैंसडाउन के लिए लोकल जीप चलती है। जो सवारी के हिसाब से पैसे लेती है। यदि स्थानीय लोगों से मिलना–जुलना चाहें तो इनमें ज़रुर सफ़र करना चाहिए।

लैंसडाउन आर्मी कंटोनमेंट एरिया है। यहां पर ठहरने का एक और विकल्प है, कालूडांडा अतिथि गृह/अर्थात कंटोनमेंट का अतिथि गृह। पर यहां सभी नहीं ठहर सकते, सरकार में ऊंचे पदों पर कार्यरत यानी SAG ग्रेड के अधिकारी रक्षा लेखा विभाग (Defence Accounts Departement (DAD)) की वेबसाइट पर जाकर इसे बुक कर सकते हैं।

कहां घूमें

लैंसडाउन में ज्यादा कुछ घूमने को नहीं है। अगर आप उन लोगों में से हैं जिन्हें किन्हीं नियत स्थानों पर जाकर ही अपनी यात्रा पूरी लगती है तो उनके लिए Tip and top, Bhula taal, Museum, Trip Travel Café आदि हैं। यहां से कुछ दूरी पर तारकेश्वर महोदव का मंदिर भी है। अगर आप लैंसडाउन जाते हैं तो आपको यहां जरुर जाना चाहिए। यहां का सुकून शब्दों में नहीं बताया जा सकता। काफी सुंदर शानदार मनोरम रास्ता है। देवदार के ऊंचे–ऊंचे वृक्षों के बीच बना यह मंदिर आपको किसी और ही लोक में ले जाता है। यहां पर धर्मशालाएं भी हैं जिनमें बुकिंग करवाकर ठहरा जा सकता है।

लैंसडाउन उन प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग है जो यहां बिना कुछ करे केवल शांत वातावरण का आनंद लेना चाहते हैं। यहां छोटी–मोटी Tracking/hiking की जा सकती है। बाज़ार में घूमा जा सकता है। उस दौड़–भाग वाली ज़िन्दगी और दफ्तर को भूलकर दिमाग को तरोताज़ा किया जा सकता है। तो चलिए, इसी कामना के साथ मैं समाप्त करती हूं कि कम से कम एक बार आप यहां ज़रुर जाएंगे और फिर स्वयं अपने अनुभव साझा करेंगे।

★★★★

बरसहिं जलद भूमि निअराएँ, जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ ।
बूंद अघात सहहिं गिरि कैसे, खल के वचन संत सहे जैसें ।।

(तुलसीदास)

"आपको देखने आए हैं साहब"

डॉ. मनीष कुमार मौर्य,
सहायक आयुक्त
(केंद्रीय पशु पंजीकरण योजना, रोहतक)

रात के दो बज रहे थे जब सरकारी आवास का दरवाज़ा कोई जोर जोर से पीट रहा था। क्या करता? वहाँ कोई घंटी नहीं थी, जिसे वो बजा सकता। मैं (एक राजकीय पशु चिकित्सक) बाहर आया, पूछा – "क्या बात है नन्द लाल क्या हो गया?"

"साहब, तिवारी जी की गाय का बच्चा फँस गया है"। नन्द लाल ने बताया।

नन्द लाल पेशेवर दूध दुहने वाला था। बहुत सारे लोग जिन्हें शहर में शुद्ध दूध की तलाश होती है ऐसे किसी नन्द लाल के भरोसे एक गाय पाल लेते हैं, जिसका खाना–पीना इनके भरोसे चलता रहता है। कहीं–कहीं ये केवल दूध दुहने ही जाते हैं। नन्द लाल के साथ जो सम्मानित व्यक्ति आए थे वो उसी शुद्ध दूध के आकर्षण में गाय पाल लिए थे। दूध निकालने के अलावा नन्द लाल उनका फैमिली पशु–डॉक्टर भी था। बिना उसकी सलाह के तिवारी जी कोई भी काम नहीं करते थे (जो गाय से संबंधित हो)। आज भी उसने अपनी पूरी कोशिश कर ली थी कि असली डॉक्टर से तिवारी जी न मिलने पाएं। यहाँ तक कि उसने अपने पुराने दुश्मन उमा को भी बुला कर ज़ोर आज़माईश कर ली थी। लेकिन बच्चा आदमी के बच्चे जैसा किसी बोरवेल में जा कर दुबक गया था, जिसे निकालने के लिए प्रशासन को आना जरूरी हो गया था।

मेरे घर पर उसी दिन बच्चे का जन्म–दिन होने के कारण बच्चे के नाना–नानी, दादा–दादी, पास वाली और दूर वाली मौसी, बुआ आदि–आदि लोग आए हुए थे। हमारी बातचीत सुनकर पुरनिया लोग (जिन्होंने उम्र के कुछ पड़ाव पार कर लिए थे) उठ गए थे। कानाफूसी भी शुरू हो गई। "ऐसे ही हमेशा परेशान करने चले आते हैं"; "इतनी रात को भला जाएंगें क्या?", "कुछ काम नहीं है लोगों को"..

इन सब को अनसुना करते हुए मैंने पत्नी से दरवाज़ा बंद कर लेने का इशारा किया और फर्स्ट एड बैग लेकर अपनी निरीह जनता के साथ उनकी मोटर साइकिल में ट्रिपलिंग करते हुए प्रस्थान कर गया।

तिवारी जी के घर उस दिन बिजली नहीं थी। उमा ने बताया की– "साहेब राते से फ्यूज़ खराब बा, अब सबेरे ही बनी"। गनीमत ये थी कि उन लोगों ने आग जला रखी थी और एक दिलदार पड़ोसी ने अपना सौर ऊर्जा से चलने वाला टॉर्च उन्हें दे दिया था। उमा, नन्द लाल की तरह पेशेवर दूध दुहने वाला था। जिस तरह हर देश या राज्य कि सीमाएं निर्धारित हैं और शासन करने के लिए नेता हैं उसी तरह यहाँ भी इन लोगों द्वारा अदृश्य चहारदीवारी बना दी गई थी और एक नए यजमान को स्वतः ही संज्ञान करा दिया जाता था कि आपका तारणहार कौन है।

उमा और नन्द लाल तो साढू भाई थे और उनको इनकी चहारदीवारी इनके ससुर जी द्वारा दहेज़ में दी गई थी, जो पूर्व में इस पूरे क्षेत्र के चक्रवर्ती सम्राट थे। फिर भी किसी एक यजमान के अड़ियल रवैये से साढू भाईयों के बीच पहले लकीर फिर दीवार बनती चली गई। लेकिन आपसी लड़ाई का फायदा कोई बाहर वाला ले जाए इससे तो अच्छा है कि एक बार कोशिश कर के देख लिया जाए। आपसी लड़ाई सुलझाने के बहुत मौके आएंगे। नन्द लाल ने स्वयं फोन करके उमा को बुलाया। तीन–चार घंटे दोनों ने अथाह मेहनत की किन्तु आज उनकी किस्मत अच्छी नहीं थी।

बहुत ज़्यादा बल लगाने के कारण गाय थक चुकी थी। कुछ इन्जेक्शन आदि लगाने के बाद मैंने बच्चे दानी की जांच की। ये तय हो गया कि बच्चा अब जीवित नहीं है। तिवारी जी को मैंने बता दिया – "बिना सर्जरी के यह बाहर नहीं आएगा"।

नन्द लाल अभी हार मानने वाला नहीं था। "साहब एक बार जैसे आप सुशील की गाय का बच्चा निकाले थे मशीन से

काट–काट के वैसे कोशिश कर लीजिए। हम लोग भी हैं कुछ सहायता कर देंगें"। बड़ी उम्मीद लगा कर उसने आग्रह किया। बेचारे यजमान तिवारी जी भी यही चाहते थे जिसे ऐसे ही टाला नहीं जा सकता था।

अगले दो–तीन घंटे बड़े ही मेहनत वाले बीते। ठंड गायब हो चुकी थी। सभी लोगों के हाथ सूज चुके थे। जब आप बच्चे को पकड़ कर बाहर खीचते हैं, ठीक उसी समय गाय भी जोर लगाने लगती है। हां उसका इरादा आपकी मदद करना होता है, लेकिन ऐसा हो नहीं पाता और आपका हाथ जो उस समय बच्चे दानी के अंदर होता है, घुन की तरह पिसते–पिसते तोरई से लौकी में बदल जाता है। बीच–बीच में हम अपना हाथ गरम पानी में डालते रहते हैं जिससे कि हम काम करने योग्य रहें। कभी–कभी दर्द ज्यादा होने पर गाय माता अपना आशीर्वाद अपने पिछले पैरों से दे देती है।

जब सभी लोग पूरी तरह से थक–हार कर बैठ गए तभी पंडिताइन घर के अंदर से चाय ले कर आईं। बड़ी दीनता से बोलीं – "हमार गईया बचा ल साहब, घरे क बछिया रहल, जेतना हो सके हमनी करब"।

जिसका भावार्थ यह था की गाय को बचाना अति आवश्यक है। यह एक परिवार का सदस्य है, तिवारी जी के पास सर्जरी के पूरे पैसे नहीं हैं लेकिन वह अपना पूरा प्रयत्न करेंगे कि कुछ भरपाई कर दें।

इस क्षेत्र में यह मेरा पहला बड़ा ऑपरेशन था। तिवारी जी की आर्थिक स्थिति बहुत खराब तो नहीं कह सकते किन्तु बहुत अच्छी भी नहीं थी। इसलिए मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि इसकी मैं कोई फीस नहीं लूँगा। हाँ, इसमें लगने वाली दवा वगैरह खरीदनी पड़ेंगी। तिवारी जी को जैसे मन–मांगी मुराद मिल गई हो। उनकी बाँछें खिल गई। तुरंत बोले– "साहब पर्चा लिख दीजिए"।

जब मैं वहाँ से निकलने लगा तब नन्द लाल बाहर तक छोड़ने आया। कुछ चिंतित लग रहा था। बहुत धीरे से पास आकर बोला– "साहब, पहले कभी आप किए हैं? मतलब आपने देखा है न"।

मैं मुस्कुराया और हाँ में गर्दन हिला दी।

घर वापस आकर मैंने अपने स्टाफ को सामान स्टरलाईज़ करने, कुछ जरूरी दवाएं रखने के लिए निर्देशित किया और घर पर आए मेहमानों को वापस स्टेशन छोड़ कर अपनी तैयारी में लग गया। नन्द लाल के आखरी शब्द बार बार दिमाग में आते। सच बात यह थी कि हमने अभी तक जो भी सर्जरी की थी वो ऑपरेशन थिएटर में और अपने अग्रजों या गुरुओं के निर्देशन में किया था। इस तरह खुले आसमान में और इतने कम स्टाफ में जरूर यह पहली बार था।

नियत समय पर हम (मैं, मेरे दो स्टाफ) पहुँच गए। तिवारी जी से कुछ आदमी के लिए बोला गया था किन्तु वहाँ जरूरत से ज्यादा लोग दिखाई दे रहे थे। पूछने पर बताया गया कि "ये लोग ऑपरेशन देखने आए हैं। कभी आदमी या औरत का तो देखे नहीं हैं न इसलिए"।

दर्शकों की संख्या देखते–देखते बहुत ज़्यादा होने लगी। पड़ोस की महिलायें भी घर का काम निपटा कर पंडिताइन की गाय का ऑपरेशन देखने आने लगीं। पहले घर की दरी, चारपाई, फिर स्टूल भी कम पड़ने लगे। लेकिन तिवारी जी सब को बड़े आदर से बुलाते, फिर पूरी रात का किस्सा सुनाते, भगवान का नाम जरूर लेते। शुरुआत में आने वाले दर्शकों को मंगलवार हनुमान जी का लड्डू मिला, फिर चाय भी बनी। लेकिन घर के बच्चे अब अस्कताने लगे थे। देर से आई दर्शक दीर्घा को न पानी नसीब हुआ न कुर्सी।

हमारी तैयारी अब लगभग हो चुकी थी। हमने गाय को साफ की गई जगह पर लेटाया। ये कहना ज्यादा सही है की गऊ माता को गिराया। एक आदमी सर के पास, एक आदमी गर्दन पर और एक पीठ को दबा कर रखते हैं जिससे वह उठने का प्रयास भी न करने पाए। चूंकि बड़े पशु को पूरी तरह बेहोश करने में परेशानी बढ़ सकती है इसलिए कम से कम इन्जेक्शन दे कर और पशु को बलपूर्वक दाब और बांध कर हम अपना काम कर लेते हैं। कॉलेज मे हमारे प्रोफेसर इसे 'दाब एनेस्थीसिया' कहा करते थे।

नन्द लाल ने पूरी तैयारी कर के चुनौती की तरह आह्वान किया – "भगवान का नाम ले कर शुरू करें साहब, जो होगा देखा जाएगा"।

वह चुनौती अंदर ही अंदर एक चेतावनी जैसी थी। ज्यादातर जनता यही मान रही थी कि बछड़ा तो मर ही चुका है गाय भी मरेगी ही। हमसे पहले के चिकित्सकों ने हमसे ज्यादा नाम कमाया था, उनकी उम्र भी हमारी तुलना में बहुत ज्यादा थी और डॉक्टर तो जितना बूढ़ा उतना ज्ञानी। मेरी उम्र तिवारी जी के सबसे छोटे पुत्र से बस थोड़ी ज्यादा थी। आज सुबह से मैं अपने आपको साउथ अफ्रीकी सर्जन क्रिश्चियन बर्नार्ड जैसा महसूस कर रहा था।

फिर भी हमने भगवान धन्वंतरि का नाम ले कर स्कैल्पल चला दिया।

जब आप एक ऑपरेशन थिएटर में काम करते हैं, तब आपके पास पर्याप्त प्रकाश, बिजली और लगभग अमृत जैसे साफ पानी की सुविधा होती है। बहुत से ऐसे औज़ार जो बिजली से चलते हैं एक सर्जन का काम बहुत आसान कर देते हैं लेकिन पशुपालक के घर पर यह संभव नहीं हो पाता। यदि बिजली है तो तार नहीं होंगे, तार अगर मिल जाए, तो बड़े पावर प्लग नही होंगे। सबसे बड़ी बात– जरूरत के समय ही मुहल्ले की बिजली कट जाती है। ऐसी परिस्थितियों में हम सुश्रुत एवं चरक को अपना गुरु मानते हुए 'जुगाड़ टेक्नोलोजी' की मदद से वो सारे काम करते हैं।

सभी लोग नहीं थकते कुछ लोग मैराथन की तरह अंत तक डटे रहते हैं। अपने गावों की महिलाएं कई कदम आगे हैं। जिससे जो बन पाता है उससे ज्यादा करने का प्रयास जरूर करता है। चाची और दाइयां, हमारी सूईओं में धागा डालने का काम, नयी भाभियाँ बृहस्पति देव, शंकर जी को अखंडित दिया जलाने का काम और कुछ भी न हो पाये तो अपने मायके या पड़ोस में ऑपरेशन से पैदा बच्चों के माताओं की कहानियाँ सुनाने लगती हैं।

थोड़ी मेहनत के बाद हमने मृत बछड़े को बाहर निकाला। सब कुछ हो जाने के बाद एक बार फिर सफाई कर के पट्टी बांध दी गयी। गाय को आराम की अवस्था में बैठा दिया गया। नन्द लाल ने गाय की आँखों को छू कर देखा और बोला–

"अभी जिंदा है साहब"।

"जिंदा ही रहेगी नन्द लाल,"– मैंने बताया।

सारा सामान आदि समेट कर हम वापस आ गये।

ऑपरेशन मे कुल पाँच घंटे लग गए। दोपहर हो चुकी थी। थक कर मैं सो गया था। शाम को फोन बजा–

"तिवारी जी बोल रहे हैं डॉक्टर साहब, गाय खड़ी हो गयी है, लेकिन कुछ खा नहीं रही"।

"अभी कुछ खिलाना भी नहीं है, बस गरम पानी पिला दीजिएगा"। मैंने हिदायत दी, और चैन की सांस ली।

कहानी कि परिणति दो दिन बाद हुई जब अपने अस्पताल में अपने दैनिक कार्यों को करते हुए मरीजों के अलावा कई लोग मिलने आये। पूछने पर एक बुजुर्ग सज्जन बोले "साहब बड़ा नाम सुने हैं आपका, इसलिए आपको देखने आये हैं कि एक डॉक्टर ने आपरेशन से गाय का बच्चा निकाला है।"

★★★★

एकहि साधै सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचवों, फूलहि फल अघाय।।

(रहीम)

सर्पदंश

भारत में सापों द्वारा हर साल 35000–50000 लोगों की जान जाती है। विश्वभर में सापों की कुल लगभग 3700 प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से 15 प्रतिशत ही जानलेवा होती हैं। वहीं भारत में अकेले 275 प्रजातियों में 181 विषहीन एवं 94 विषैली होती हैं। साँपों की इन 94 विषैली प्रजातियों में 34 का विष प्रभावहीन होता है। जबकि, 20 समुद्री और शेष 36 प्रजातियाँ मनुष्यों के लिए जानलेवा होती हैं। भारत में कोबरा, करैत, रसेल वाइपर एवं सॉ–स्केल वाइपर नामक 4 प्रजातियों सर्पदंश सबसे ज्यादा होता है।

डॉ. विवेक कुमार सरोज,
पशुधन अधिकारी (मुख्यालय)

विषैले एवं विषहीन साँप की पहचान

क्रम संख्या	विषैले साँप	विषहीन साँप
1.	आँखों की पुतली सीधी खड़ी एवं झिर्रीनुमा होती है	गोल पुतलियाँ होती है
2.	वाइपर सांपों में आँख एवं नासिका के बीच छोटे गड्ढे (पिट) जैसे पिट	पिट नहीं पाया जाता है
3.	विषदंत पाये जाते हैं	विषदंत नहीं पाये जाते हैं
4.	पूंछ के निचले वाले हिस्से में शल्क की केवल एक कतार पायी जाती है	दो कतारें पायी जाती हैं
5.	सिर तिकोना एवं तीरनुमा होता है	सिर गोलाकार होता है
6.	दंश वाले स्थान पर दो या कभी कभी दो–दो आगे पीछे समानांतर छिद्र या चीरे का निशान दिखाई देता है	दंश वाले स्थान पर दांतों की पूरी कतार दिखाई देती है

कोबरा और करैत का जहर न्यूरोटॉक्सिक (तंत्रिका तंत्र पर असर करने वाला) तथा रसेल वाइपर (जाड़ा साँप) और सॉ–स्केल वाइपर का जहर हीमोटॉक्सिक (रक्त के बहाव पर काम करने वाला) होता है। कोबरा एक दंश में कुल 150–350 मिलीग्राम विष शरीर में छोड़ता है जबकि केवल 18–45 मिलीग्राम विष भी मनुष्यों के लिए जानलेवा होता है। वहीं करैत एक बार में कुल 8–20 मिलीग्राम विष शरीर में छोडता है जबकि उसका केवल 3 मिलीग्राम विष ही जान लेने के लिए काफी है।

साँप के काटने के लक्षण :

कोबरा और करैत (न्यूरोटॉक्सिक विष)–

काटे गए स्थान पर दाँत का स्पष्ट दिखाई न देना, जलन, नीला पड़ जाना, सूजन, झाग के साथ खून का स्राव, उल्टी होना, सिर दर्द, आँख की पुतलियों का झपकना, जोड़ों मे दर्द, निगलने में परेशानी, चक्कर आना और अंत में सांस का बंद हो जाना ।

रसल वाइपर और सॉ–स्केल वाइपर (हीमोटॉक्सिक विष)–

काटे गए स्थान पर जल्दी से सूजन आना, नीला पड़ना, फफोले पड़ना, खून का रिसाव, बहुत तेज दर्द, शरीर पर लाल चकत्ते का पड़ना, मसूड़े, थूक, पेशाब और उल्टी में खून आना अंत में किडनी का खराब हो जाना।

सर्पदंश में क्या न करें।

- घबराएँ या अति उत्तेजित न हों।
- काटे गए स्थान पर कोई चीरा न लगाएँ।
- बर्फ से सिकाई न करें।
- काटे गए अंग को रस्सी या किसी अन्य वस्तु से कसकर न बाँधें।
- कभी भी मुंह से विष चूसने का प्रयास न करें।
- काटे गए अंग को हृदय के स्तर से ऊपर न रखें।

सर्पदंश में क्या करें।

- शांत रहें।
- सर्प द्वारा काटे गए अंग को स्थिर रखें।
- अतिशीघ्र अस्पताल जाएँ।
- चिकित्सक को सर्प के पहचान के बारे में बताएं।
- एंटिवेनम से ही इलाज़ करवाएँ।

★★★★

तुलसी इस संसार में, भांति भांति के लोग ।
सबसे हंस मिल बोलिए, नदी नाव संजोग ।।

(तुलसी)

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) को वर्ष 2023–24 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, में प्रथम स्थान

मनीष कुमार मीणा
आशुलिपिक (मुख्यालय)

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) को 'ख' क्षेत्र में भारत सरकार के बोर्ड/ स्वायत्त निकाय/ ट्रस्ट/ सोसाइटी आदि की श्रेणी में राजभाषा हिंदी में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन के लिए 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, वर्ष 2023–24' के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत मंडपम्, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस, समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2024 के दौरान यह पुरस्कार एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश सी. शाह को माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी द्वारा माननीय उप सभापति, राज्य सभा श्री हरिवंश जी, माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय जी और माननीय श्री बंडी संजय कुमार जी, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भतृर्हरि महताब जी एवं अन्य गणमान्य महानुभावों की गरिमामयी उपस्थिति में प्रदान किया गया।

सभा में माननीय गृह मंत्री ने कहा कि भारत की संविधान सभा द्वारा हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता एवं भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान

रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। माननीय गृह मंत्री जी ने बच्चों के अभिभावकों से यह भी अनुरोध किया कि वे अपने बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने की लालसा में उनकी तालीम मातृभाषा को छोड़कर किसी अन्य भाषा में न करे क्योंकि आने वाला समय मातृभाषाओं या यूं कहें कि भारतीय भाषाओं का है।

★★★★

हिंदी भाषा वह नदी है जो साहित्य, संस्कृति और समाज को एक साथ बहा ले जाती है।

(रामधारी सिंह दिनकर)

रणनीति कितनी भी सुंदर क्यों न हो आपको कभी–कभी परिणामों पर भी विचार करना चाहिए।

(विंस्टन चर्चिल)

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पशुपालन अवसंरचना विकास कोष के विस्तार को मंजूरी दी

प्रविष्टि तिथि: 01 FEB 2024 11:35 AM by PIB Delhi

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने अवसंरचना विकास कोष (आईडीएफ) के तहत लागू किए जाने वाले पशुपालन पशुपालन अवसंरचना विकास कोष (एएचआईडीएफ) को 29,610.25 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ 2025–26 तक अगले तीन वर्षों के लिए जारी रखने की मंजूरी दे दी। यह योजना डेयरी प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण, मांस प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण, पशु चारा संयंत्र, नस्ल गुणन फार्म, पशु अपशिष्ट से धन प्रबंधन (कृषि–अपशिष्ट प्रबंधन) और पशु चिकित्सा वैक्सीन और दवा उत्पादन सुविधाओं के लिए निवेश को प्रोत्साहित करेगी ।

भारत सरकार अनुसूचित बैंक और राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी), नाबार्ड और एनडीडीबी से 90 प्रतिशत तक ऋण के लिए दो साल की मोहलत सहित 8 वर्षों के लिए 3 प्रतिशत ब्याज अनुदान प्रदान करेगी। पात्र संस्थान अलग–अलग होंगे, निजी कंपनियां, एफपीओ, एमएसएमई, धारा 8 कंपनियां हैं। अब डेयरी सहकारी समितियां डेयरी संयंत्रों के आधुनिकीकरण, सुदृढ़ीकरण का भी लाभ उठाएंगी।

भारत सरकार एमएसएमई और डेयरी सहकारी समितियों को 750 करोड़ रुपये के ऋण गारंटी कोष से उधार लिए गए ऋण की 25 प्रतिशत तक ऋण गारंटी भी प्रदान करेगी।

एएचआईडीएफ ने योजना के अस्तित्व में आने के बाद से अब तक 141.04 एलएलपीडी (लाख लीटर प्रति दिन) दूध प्रसंस्करण क्षमता, 79.24 लाख मीट्रिक टन फीड प्रसंस्करण क्षमता और 9.06 लाख मीट्रिक टन मांस प्रसंस्करण क्षमता को आपूर्ति श्रृंखला में जोड़कर गहरा असर डाला है। यह योजना डेयरी, मांस और पशु चारा क्षेत्र में प्रसंस्करण क्षमता को 2–4 प्रतिशत तक बढ़ाने में सक्षम है।

पशुपालन क्षेत्र निवेशकों के लिए पशुधन क्षेत्र में निवेश करने का अवसर प्रस्तुत करता है, जिससे यह क्षेत्र मूल्यवर्धन, कोल्ड चेन और डेयरी, मांस, पशु चारा इकाइयों की एकीकृत इकाइयों से लेकर तकनीकी रूप से सहायता प्राप्त पशुधन और पोल्ट्री फार्म, पशु अपशिष्ट से लेकर धन प्रबंधन और पशु चिकित्सा औषधि/वैक्सीन इकाइयों की स्थापना तक एक आकर्षक क्षेत्र बन जाता है।

तकनीकी रूप से सहायता प्राप्त नस्ल गुणन फार्म, पशु चिकित्सा दवाओं और वैक्सीन इकाइयों को मजबूत करना, पशु अपशिष्ट से धन प्रबंधन जैसी नए कार्यों को शामिल करने के बाद, यह योजना पशुधन क्षेत्र में बुनियादी ढांचे के उन्नयन के लिए एक बड़ी क्षमता प्रदर्शित करेगी।

यह योजना उद्यमिता विकास के माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 35 लाख लोगों के लिए रोजगार सृजन का एक माध्यम होगी और इसका उद्देश्य पशुधन क्षेत्र में धन सृजन करना है। अब तक एएचआईडीएफ ने लगभग 15 लाख किसानों को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित किया है। एएचआईडीएफ किसानों की आय को दोगुना करने, निजी क्षेत्र के निवेश के माध्यम से पशुधन क्षेत्र का दोहन करने, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन के लिए नवीनतम तकनीकों को लाने और पशुधन उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देकर देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक मार्ग के रूप में उभर रहा है। पात्र लाभार्थियों द्वारा प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन बुनियादी ढांचे में इस तरह के निवेश से इन संसाधित और मूल्य वर्धित वस्तुओं के निर्यात को भी बढ़ावा मिलेगा।

इस प्रकार एएचआईडीएफ में प्रोत्साहन द्वारा निवेश न केवल निजी निवेश को 7 गुना बढ़ा देगा, बल्कि किसानों को जानकारी पर अधिक निवेश करने के लिए भी प्रेरित करेगा, जिससे उत्पादकता और किसानों की आय में वृद्धि होगी।

,,,

एमजी/एआरएम/केपी/एजे

★★★★

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने राष्ट्रीय पशुधन मिशन में अतिरिक्त कार्य शामिल करने की मंजूरी दी

प्रविष्टि तिथि: 21 FEB 2024 10:27 PM by PIB Delhi

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने निम्नलिखित अतिरिक्त कार्यों को शामिल करके राष्ट्रीय पशुधन मिशन में और संशोधन को मंजूरी दे दी:

i. घोड़ा गधा, खच्चर, ऊंट के लिए उद्यमिता की स्थापना के लिए व्यक्तियों, एफपीओ, एसएचजी, जेएलजी, एफसीओ और धारा 8 कंपनियों को 50 लाख तक की 50 प्रतिशत पूंजी सब्सिडी प्रदान की जाएगी। साथ ही घोड़े, गधे और ऊंट के नस्ल संरक्षण के लिए भी राज्य सरकार को सहायता दी जाएगी। केन्द्र सरकार घोड़े, गधे और ऊँट के वीर्य स्टेशन और न्यूक्लियस प्रजनन फार्म की स्थापना के लिए 10 करोड़ देगी।

ii. निजी कंपनियां, स्टार्ट–अप/एसएचजी / एफपीओ / एफसीओ / जेएलजी / किसान सहकारी समितियां (एफसीओ), धारा 8 कंपनियां ग्रेडिंग प्लांट के साथ–साथ बीज भंडारण गोदाम सहित बुनियादी ढांचे की स्थापना जैसे भवन निर्माण, रिसीविंग शेड, ड्राइंग प्लेटफॉर्म, मशीनरी आदि को 50 लाख रुपये तक की 50 प्रतिशत पूंजी सब्सिडी के साथ चारा बीज प्रसंस्करण अवसंरचना (प्रसंस्करण और ग्रेडिंग इकाई/चारा भंडारण गोदाम) के लिए उद्यम की बुनियाद डालती हैं। परियोजना की शेष लागत की व्यवस्था लाभार्थी द्वारा बैंक वित्त या स्व–वित्तपोषण के माध्यम से की जानी चाहिए

iii. चारा खेती के क्षेत्रों को बढ़ाने के लिए, राज्य सरकार को गैर–वन भूमि, बंजर भूमि/चरागाहों/गैर कृषि योग्य भूमि के साथ–साथ वन भूमि 'गैर–वन बंजर भूमि/चरागाहों/गैर–कृषि योग्य भूमि' और 'वन भूमि से चारा उत्पादन' के साथ–साथ निम्नीकृत वन भूमि में भी चारे की खेती के लिए सहायता दी जाएगी। इससे देश में चारे की उपलब्धता बढ़ेगी।

iv. पशुधन बीमा कार्यक्रम को सरल बनाया गया है। किसानों के लिए प्रीमियम का लाभार्थी हिस्सा कम कर दिया गया है और यह मौजूदा लाभार्थी हिस्से 20 प्रतिशत, 30 प्रतिशत, 40 प्रतिशत और 50 प्रतिशत के मुकाबले 15 प्रतिशत होगा। प्रीमियम की शेष राशि केन्द्र और राज्य द्वारा सभी राज्यों के लिए 60:40, 90:10 के अनुपात में साझा की जाएगी। बीमा किए जाने वाले पशुओं की संख्या भी भेड़ और बकरी के लिए 5 मवेशी इकाई के बजाय 10 मवेशी इकाई तक बढ़ा दी गई है। इससे पशुपालकों को न्यूनतम राशि चुकाकर अपने बहुमूल्य पशुओं का बीमा कराने में सुविधा होगी ।

पृष्ठभूमि:

एनएलएम को 2014–15 में चार उप – मिशन के साथ शुरू किया गया था (प) चारा और चारा विकास पर उप–मिशन (पप) पशुधन विकास पर उप – मिशन (पपप) पूर्वोत्तर क्षेत्र में सुअर वृद्धि पर उप–मिशन (पअ) कौशल विकास, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और विस्तार पर उप – मिशन में 50 कार्य हैं। इस योजना को 2021–22 के दौरान फिर से व्यवस्थित किया गया और 2300 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ विकास कार्यक्रम के तहत जुलाई, 2021 में सीसीईए द्वारा अनुमोदित किया गया।

वर्तमान नये सिरे से तैयार एनएलएम में तीन उप–मिशन हैं। (प) पशुधन और पोल्ट्री के नस्ल सुधार पर उप–मिशन (पप) चारा और चारा का उप–मिशन और (पपप) नवाचार और विस्तार पर उप–मिशन। नये सिरे से तैयार एनएलएम में उद्यमिता विकास, चारा और चारा विकास, अनुसंधान और नवाचार, पशुधन बीमा की ओर 10 गतिविधियां और लक्ष्य हैं।

,,,

एमजी/एआर/केपी/एजे

★★★★

पशुपालन और डेयरी विभाग ने कल गुवाहाटी में "राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2023" मनाया

केंद्रीय मंत्री श्री परशोत्तम रुपाला ने डेयरी क्षेत्र में 10 वर्षों की उपलब्धियों को प्रदर्शित करते हुए ''बुनियादी पशुपालन सांख्यिकी 2023'' और एक कॉफी टेबल बुक– ''मिल्की वे ओवर द इयर्स'' का विमोचन किया

श्री परशोत्तम रुपाला ने असम राज्य के लिए ए–हेल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किया और पहले प्रशिक्षण बैच के बीच किट का वितरण किया

''राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2023'' समारोह में सर्वश्रेष्ठ डेयरी किसान विजेताओं को राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया

प्रविष्टि तिथिः 27 NOV 2023 5:15 PM by PIB Delhi

पशुपालन और डेयरी विभाग ने कल गुवाहाटी में ''राष्ट्रीय दूध दिवस 2023'' मनाया। यह विशेष दिन ''भारत में श्वेत क्रांति के जनक'' डॉ वर्गीज कुरियन की जयंती के सम्मान में मनाया जाता है, जो कि हमारे देश में डेयरी क्षेत्र की उपलब्धि और महत्व पर प्रकाश डालता है।

इस कार्यक्रम में केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री, श्री परशोत्तम रुपाला मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए, जबकि कृषि, पशुपालन एवं पशु चिकित्सा मंत्री, असम सरकार, श्री अतुल बोराय परिवहन, मत्स्यपालन और उत्पाद शुल्क मंत्री, असम सरकार, श्री परिमल शुक्ला बैद्यय पशुपालन एवं पशु चिकित्सा मंत्री, अरुणाचल प्रदेश, श्री तागे ताकीय असम के सांसद और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित हुए।

विजेताओं को सम्मानित करते हुए, केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री रुपाला ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत विश्व में दूध उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी है और वैश्विक बाजारों में अपनी पहचान बना रहा है। मंत्री ने डेयरी क्षेत्र को बढ़ावा देने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और इस क्षेत्र को विकसित करने के लिए उद्यमशीलता के प्रयासों पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारा समग्र दृष्टिकोण डेयरी क्षेत्र के घरेलू विकास और अंतर्राष्ट्रीय विस्तार दोनों को बढ़ावा देने के साथ–साथ देश के युवाओं की अभिनव भावना को पोषित करने की देश की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

कार्यक्रम के दौरान, केंद्रीय मंत्री श्री रुपाला ने ''बुनियादी पशुपालन सांख्यिकी 2023'' जारी की, जो 2022–23 में दूध, अंडा, मांस और ऊन उत्पादन को दर्शाता है और एक कॉफी टेबल बुक– ''मिल्की वे ओवर द इयर्स'' को जारी किया, जो डेयरी क्षेत्र में 10 वर्षों की उपलब्धियों को प्रदर्शित करता है। केंद्रीय मंत्री श्री रुपाला ने असम राज्य के लिए ए–हेल्प (पशुधन उत्पादन के स्वास्थ्य और विस्तार के लिए मान्यता प्राप्त एजेंट) प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किया और पहले प्रशिक्षण बैच के बीच किट वितरित किया।

श्री अतुल बोरा ने पूरे राज्य में सेक्स सॉर्टेड सीमेन शुरू करके दूध उत्पादन को बढ़ावा देकर किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए असम सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि असम सरकार बाजार संपर्क विकसित करने और मूल्य वर्धित दुग्ध उत्पादों को विकसित करने की कोशिश कर रही है।

पशुपालन और मत्स्यपालन विभाग की सचिव, सुश्री अलका उपाध्याय ने अपने संबोधन में कहा कि डेयरी क्षेत्र मजबूती से आगे बढ़ रहा है और हमारे देश की अर्थव्यवस्था में एक बड़ी भूमिका निभा रहा है।

राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार देश में स्वदेशी मवेशी और भैंस की नस्लों को पालने वाले सर्वश्रेष्ठ डेयरी किसान, सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन और सर्वश्रेष्ठ डेयरी सहकारी समिति (डीसीएस); दूध उत्पादक कंपनी; डेयरी किसान उत्पादक संगठन के विजेताओं को प्रदान किया गया।

इस कार्यक्रम में संविधान दिवस की शपथ और ''मन की बात'' के 107वें संस्करण की लाइवस्ट्रीमिंग भी की गई।

कार्यक्रम से पहले, पशु चिकित्सा छात्रों और असम पशु चिकित्सा कॉलेज की एनसीसी इकाई, राज्य पशुपालन विभाग, एनडीडीबी और वामुल की सक्रिय भागीदारी के साथ सुबह में एक वॉकथॉन और योग सत्र का भी आयोजन किया गया।

अभिनव स्टार्टअप, उद्यमियों और दुग्ध संघों को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी और ''सतत दूध उत्पादन के लिए फीड और चारा'' पर एक तकनीकी सत्र का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में असम और अन्य उत्तर–पूर्व राज्यों के 3,000 से ज्यादा किसानों ने हिस्सा लिया।

★★★★

अति का भला न बोलना, अति को भली न चूप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ।।

(कबीर)

विचारों की दुनिया में संकीर्णता के लिए कोई जगह नहीं है, इससे न तो कुछ सीखा जा सकता हैं और न ही इसे भुलाया जा सकता है।

(एल्डस हक्सले)

पशुपालन और डेयरी विभाग की सचिव ने नई दिल्ली में भारतीय पोल्ट्री निर्यात को बढ़ावा देने तथा पोल्ट्री पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए चुनौतियों और रणनीतियों की पहचान करने के लिए प्रमुख पोल्ट्री निर्यातकों के साथ गोलमेज बैठक की अध्यक्षता की

सुश्री अलका उपाध्याय ने कहा कि अंडे और ब्रॉयलर का उत्पादन प्रति वर्ष 8 से 10 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है

निर्यात को बढ़ावा देने के लिए, विभाग ने 33 पोल्ट्री कंपार्टमेंटों को एवियन इन्फ्लूएंजा से मुक्त माना है: सुश्री उपाध्याय

वित्तीय वर्ष 2022–23 में, भारत ने 664,753.46 मीट्रिक टन पोल्ट्री उत्पादों, जिसका मूल्य 1,081.62 करोड़ रुपये है, का निर्यात 57 से अधिक देशों को किया

प्रविष्टि तिथि: 23 DEC 2023 11:24 AM by PIB Delhi

पशुपालन एवं डेयरी विभाग की सचिव सुश्री अलका उपाध्याय की अध्यक्षता में कल दिल्ली में एक गोलमेज बैठक आयोजित की गई। यह रणनीतिक बैठक ''भारतीय पोल्ट्री उत्पादों का निर्यातः पोल्ट्री पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए चुनौतियां और रणनीतियाँ'' पर विचार–विमर्श करने के लिए प्रमुख कंपनियों, राज्य सरकारों और उद्योग संघों सहित प्रमुख हितधारकों को एक साथ लेकर आई।

बैठक में सुश्री अलका उपाध्याय ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारतीय पोल्ट्री क्षेत्र, जो अब कृषि का एक अभिन्न अंग है, ने प्रोटीन और पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जहां फसलों का उत्पादन प्रति वर्ष 1.5 से 2 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है, वहीं अंडे और

ब्रॉयलर का उत्पादन प्रति वर्ष 8 से 10 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। पिछले दो दशकों में, भारतीय पोल्ट्री क्षेत्र एक विशाल–उद्योग के रूप में विकसित हुआ है, जिसने भारत को अंडे और ब्रॉयलर मांस के प्रमुख वैश्विक उत्पादक के रूप में स्थापित किया है।

सुश्री अलका उपाध्याय ने बताया कि पशुपालन एवं डेयरी विभाग निर्यात को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहलें कर रहा है। विभाग ने हाल ही में उच्च रोगजनकता वाले एवियन इन्फ्लुएंजा से मुक्ति की स्व–घोषणा प्रस्तुत किया है। निर्यात को बढ़ावा देने के लिए, विभाग ने 33 पोल्ट्री कंपार्टमेंटों को एवियन इन्फ्लूएंजा से मुक्त माना है। विभाग ने वैधता के आधार पर विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन को 26 विभाग अधिसूचित किए हैं। 13 अक्टूबर, 2023 को स्व–घोषणा को विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन द्वारा अनुमोदित किया गया था। इसके अलावा, विभाग ने पिछले वर्षों में चारे की कमी की समस्या को हल करने के लिए कदम उठाए हैं। साथ ही, विभाग ने पोल्ट्री उत्पादों की खपत के खिलाफ कोविड काल के दौरान देश भर में फैली भ्रामक सूचनाओं का मुकाबला करने के लिए भी कदम उठाए।

सुश्री अलका उपाध्याय ने पोल्ट्री निर्यात को बढ़ावा देने, भारतीय पोल्ट्री क्षेत्र को मजबूत करने, व्यापार करने में सुधार करने, पोल्ट्री उत्पाद निर्यात में चुनौतियों का समाधान करने तथा अनौपचारिक क्षेत्र में इकाइयों के एकीकरण की रणनीति बनाने और विश्व मंच पर पोल्ट्री क्षेत्रों की स्थिति को और मजबूत करने पर बल दिया। उन्होंने पोल्ट्री और पोल्ट्री से

संबंधित उत्पादों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए पोल्ट्री कंपार्टमेंटलाइजेशन की अवधारणा को अपनाकर एचपीएआई से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए विभाग के सक्रिय दृष्टिकोण पर अंतर्दृष्टि भी साझा की।

वित्तीय वर्ष 2022–23 में, भारत ने वैश्विक बाजार में महत्वपूर्ण प्रगति की, उल्लेखनीय 664,753.46 मीट्रिक टन पोल्ट्री उत्पादों का 57 से अधिक देशों को निर्यात किया, जिसका कुल मूल्य 1,081.62 करोड़ रुपये (134.04 मिलियन अमरीकी डालर)। एक हालिया बाजार अध्ययन के अनुसार, भारतीय पोल्ट्री बाजार ने 2024–2032 तक 8.1 प्रतिशत की सीएजीआर के साथ 2023 में 30.46 बिलियन अमेरिकी डॉलर का उल्लेखनीय मूल्यांकन हासिल किया।

इस गोलमेज बैठक ने गतिशील विचार–विमर्श के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया, जिसने वर्तमान चुनौतियों का समाधान करने तथा भारतीय पोल्ट्री क्षेत्र के सतत विकास के लिए मजबूत रणनीति तैयार करने के लिए सहयोगात्मक प्रयासों को प्रोत्साहित किया। बैठक में पोल्ट्री क्षेत्र के प्रतिनिधियों, निर्यातकों ने पोल्ट्री निर्यात से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की।

पशुपालन और डेयरी विभाग के बारे में:

पशुपालन और डेयरी विभाग पशु कल्याण को बढ़ावा देने, सतत पशुधन विकास सुनिश्चित करने और भारत में डेयरी और मांस से संबंधित क्षेत्रों के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

इन्वेस्ट इंडिया के बारे में:

इन्वेस्ट इंडिया राष्ट्रीय निवेश प्रोत्साहन और सुविधा एजेंसी है, जो निवेश को उत्प्रेरित करने, नवाचार को बढ़ावा देने और भारत में व्यापार करने में सुगमता हो, इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

★★★★

एक सफल व्यक्ति और दूसरे में केवल साहस और ज्ञान की कमी का ही अंतर नहीं होता, बल्कि इच्छा शक्ति का भी होता है।

(विन्सेंट जे. लोम्बार्डी)

मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय ने राष्ट्रीय गोकुल मिशन और प्रधानमंत्री मातृ सम्पदा जैसी केंद्र सरकार की योजनाओं से जुड़े 1100 से अधिक किसानों को नई दिल्ली में 75वें गणतंत्र दिवस परेड देखने के लिए आमंत्रित किया।

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री परशोत्तम रूपाला ने 26 जनवरी 2024 को परेड के बाद नई दिल्ली में स्थित सिरीफोर्ट ऑडिटोरियम में विशेष आमंत्रित लोगों को सम्मानित किया

प्रविष्टि तिथि: 26 JAN 2024 9:24 AM by PIB Delhi

नई दिल्ली में 26 जनवरी, 2024 को कर्तव्य पथ पर राष्ट्र ने अपनी ताकत का प्रदर्शन करते हुए परेड के साथ 75वां गणतंत्र दिवस मनाया। इस वर्ष रक्षा मंत्रालय ने नई दिल्ली में कर्तव्य पथ पर आयोजित होने वाले गणतंत्र दिवस परेड (आरडीपी) 2024 को देखने के लिए सरकार की विभिन्न योजनाओं/पहलों/प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों के लाभार्थियों को उनके जीवनसाथी के साथ सरकार के विशेष अतिथियों के रूप में निमंत्रण दिया।

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने 1100 से अधिक किसानों को परेड देखने के लिए आमंत्रित किया है। ये सभी राष्ट्रीय गोकुल मिशन और प्रधानमंत्री मातृ सम्पदा जैसी केंद्र सरकार की योजनाओं के लाभार्थी हैं, जो सम्मानित अतिथियों की सूची में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। संबंधित राज्यों के नोडल अधिकारियों के साथ सभी आमंत्रित व्यक्ति 24 तारीख को नई दिल्ली पहुंचे।

24 जनवरी, 2024 को सभी विशेष आमंत्रित लोगों का नई दिल्ली पहुंचने पर हार्दिक स्वागत किया गया और सभी प्रतिभागियों के लिए आरामदायक और यादगार प्रवास के लिए विशेष व्यवस्था की गई। 25 जनवरी को आमंत्रित लोगों ने कुतुब मीनार और लोटस टेम्पल सहित नई दिल्ली में विभिन्न ऐतिहासिक स्थानों का दौरा किया। इस तरह से उन्होंने अपने पहले कार्यक्रम को यादगार बनाया।

26 तारीख को शानदार परेड देखने के बाद नई दिल्ली के सिरीफोर्ट ऑडिटोरियम में केंद्रीय मंत्री (एफएएचडी) श्री परशोत्तम रूपाला द्वारा विशेष आमंत्रित लोगों का अभिनंदन किया गया। इसके बाद दोपहर के भोजन का आयोजन किया गया। लाभार्थियों ने केंद्रीय मंत्री के साथ अपने अनुभव और अपेक्षाएं साझा कीं और देश के पशुपालकों और मछुआरों के उत्थान के लिए सरकार के प्रयासों की सराहना की। समारोह के दौरान केंद्रीय मंत्री ने सभी विशेष आमंत्रितों को भागीदारी प्रमाण पत्र वितरित किए।

इन लोगों को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री परशोत्तम रूपाला ने देश के विकास में इन किसानों के महत्वपूर्ण योगदान पर अपनी बातें रखीं। उन्होंने आगे कहा कि उनके अथक प्रयासों के लिए एक योग्य मंच और स्वीकृति प्रदान

करके सरकार का लक्ष्य हमारे महान राष्ट्र के कृषि परिदृश्य को आकार देने में इन लाभार्थियों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को सामने लाना है।

मत्स्यपालन विभाग के सचिव और एएचडी विभाग (प्रभारी) डॉ. अभिलक्ष लिखी ने अपने स्वागत भाषण के दौरान वर्ष 2019 में नए मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय की स्थापना के साथ रणनीतिक कदम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए दोनों क्षेत्रों की उपलब्धियों का उल्लेख किया। पशुपालन और डेयरी विभाग की अपर सचिव सुश्री वर्षा जोशी और मत्स्यपालन विभाग के संयुक्त सचिव श्री सागर मेहरा ने दोनों क्षेत्रों के अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया।

★★★★

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा हो जाता है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एक सूत्र में बांधने की क्षमती रखती है।

(महात्मा गांधी)

केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री परशोत्तम रूपाला ने आज नई दिल्ली में चारा विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया

राष्ट्रीय चारा संगोष्ठी के माध्यम से हुए विचार–विमर्श आगे का मार्ग प्रशस्त करेंगे और देश के पशुधन के लिए मध्यवर्तन तैयार करने का आधार बनेंगे – श्री परशोत्तम रूपाला

प्रविष्टि तिथि: 28 FEB 2024 5:37 PM by PIB Delhi

केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री परशोत्तम रूपाला ने आज नई दिल्ली के विज्ञान भवन में चारा विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मंत्रालय की सचिव, श्रीमती अलका उपाध्याय और विभाग (डीएएचडी) के अधिकारी भी उपस्थित हुए।

श्री परशोत्तम रूपाला ने अपने संबोधन की शुरुआत में चिंता व्यक्त की कि पशुओं के चारा को अब तक प्राथमिकता प्रदान नहीं की गई। उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण को दोहराया और पशुधन किसानों के लिए एक संदेश भी दिया कि "पशुधन – देश के पशुधन की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है।" श्री रूपाला ने देश के सभी चार क्षेत्रों में ''चारा बैंक'' स्थापित करने की सरकार की योजना पर प्रकाश डाला, जो वैज्ञानिक रूप से पशुधन आबादी का संज्ञान लेते हुए चारे की आवश्यकता के आधार पर उचित भंडारण सुविधाएं, रसद एवं परिवहन सुविधाओं से युक्त है और बफर स्टॉक की उपलब्धता के साथ–साथ इन क्षेत्रों में स्थानीय चारा उत्पादन करता है।

केंद्रीय मंत्री ने पशु प्रजनन से संबंधित विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत ज्यादा पशुधन प्रजातियों (जैसे खच्चर, गधा, ऊंट और घोड़े) को शामिल करने पर मंत्रिमंडल के निर्णय पर

प्रकाश डाला। उन्होंने चारा उत्पादन के क्षेत्र और इससे संबंधित योजनाओं को बढ़ावा देने और जानवरों के प्रकार (दुधारू पशुओं, बछिया, सूखा जानवरों आदि) के आधार पर पोषण संबंधी आवश्यकता के अनुरूप चारे की आवश्यकता की पहचान करने के महत्व पर बल दिया और उन्होंने जानवरों की उम्र, चारा प्रथाओं में वैश्विक प्रवृत्ति को बेंचमार्क बनाना, निजी क्षेत्र में व्यावसायिक संभावनाओं का पता लगाना और प्रमुख क्षेत्र के लिए केंद्र बिंदु के रूप में पशुधन बीमा एवं जोखिम प्रबंधन को आसान बनाने पर प्रकाश डाला।

श्री रूपाला ने चारा विकास के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने वाले राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को मान्यता प्रदान करने और सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्य/केंद्र शासित प्रदेश को पुरस्कृत करने पर बल दिया। उन्होंने इस बात की पुष्टि करते हुए अपने संबोधन को समाप्त किया कि राष्ट्रीय चारा संगोष्ठी में हुआ विचार–विमर्श आगे का मार्ग प्रशस्त करेगा और देश के पशुधन के लिए मध्यवर्त तैयार करने का आधार बनेगा।

मंत्रालय की सचिव, श्रीमती अलका उपाध्याय ने देश की पशुधन आबादी के प्रति विभाग के दृष्टिकोण पर बल देते हुए अपना संबोधन शुरू किया। उन्होंने श्वेत क्रांति के माध्यम से भारत को दुनिया के सबसे बड़े दूध उत्पादक देश बनने की स्थिति को स्वीकार किया, जिसका मतलब प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता में वृद्धि है। इसके बाद, उन्होंने उत्पादन और उत्पादकता की समानता पर अपनी चिंता व्यक्त की और कहा कि हालांकि भारत दुग्ध उत्पादन में विश्व में सबसे ऊपर है, लेकिन प्रति पशु उत्पादकता बराबर नहीं है और पशु पोषण महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। उन्होंने नस्ल सुधार कार्यक्रम और स्थानीय/स्वदेशी नस्लों के संरक्षण और ब्रीडर फार्मों, न्यूक्लियस फार्मों, आईवीएफ और सेक्स सॉर्टेड सीमेन

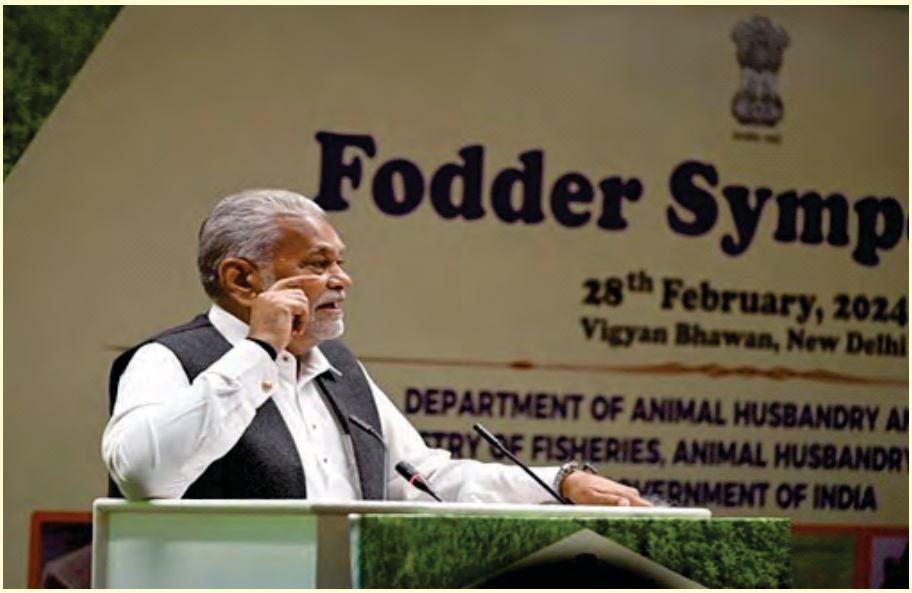

तकनीक को तेजी से बढ़ावा देने को प्रोत्साहित करते हुए नस्ल सुधार की दिशा में विभाग के नेतृत्व पर बल दिया।

सचिव ने पिछले वर्षों में पशुधन रोगों से निपटने के लिए विभाग की यात्रा पर प्रकाश डाला, जिसमें टीकाकरण जैसे विभिन्न उपाय शामिल हैं, जिससे यह पशुधन किसानों के लिए ज्यादा किफायती और सुलभ बन चुका है। उन्होंने पशुओं के लिए चारा और आहार पर बल देते हुए कहा कि से ही मौजूदा योजना के दिशा–निर्देशों में शामिल किया गया है। उन्होंने चारा उद्योग को एक विकसित व्यापार अवसर कहा और इस विषय पर चर्चा करने के बाद अपने संबोधन को समाप्त किया।

चारे की कमी की समस्या का समाधान करने के लिए सरकार 'राष्ट्रीय पशुधन मिशन' नामक एक योजना की शुरुआत कर रही है जिसका एक उप–मिशन है जिसका नाम

वर्तमान समय की मांग है कि चारे की खेती में वृद्धि करके चारे की उपलब्धता और उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जाए और नई किस्मों के अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से चारा की खेती और चारा बीज के उत्पादन के लिए सामान्य चारागाह भूमि, निम्नीकृत वन भूमि को शामिल करके जमीनी काम को पहले 'आहार और चारा विकास' है। उप–मिशन के अंतर्गत, दो घटक अर्थात गुणवत्तापूर्ण चारा बीज उत्पादन (गुणवत्ता प्रमाणित चारा बीजों के उत्पादन के लिए) और उद्यमशीलता विकास कार्यक्रम (चारा ब्लॉकों/घास/टीएमआर/साइलेज बनाने वाली इकाइयों के लिए) कार्यान्वित किए जा रहे हैं।

इसके अलावा, सरकार ने नए घटकों अर्थात 'बीज प्रसंस्करण और ग्रेडिंग उद्यमियों की स्थापना' और 'गैर–वन बंजर भूमि/रेंजलैंड/गैर–कृषि योग्य भूमि और अवक्रमित वन भूमि से चारा उत्पादन' शुरू किया है। सरकार केंद्रीय क्षेत्र की योजना 'पशुपालन अवसंरचना विकास निधि (एएचआईडीएफ)' का भी कार्यान्वयन कर रही है जो व्यक्तिगत उद्यमियों, निजी कंपनियों, एमएसएमई, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) और इस क्षेत्र की धारा 8 कंपनियों द्वारा निवेश को (3 एफ प्रतिशत ब्याज सहायता के साथ) प्रोत्साहित करती है।

आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में, पशुपालन और डेयरी विभाग ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी की। केंद्रीय मंत्री श्री परशोत्तम रूपाला ने पशुपालन और डेयरी विभाग की इस पहल की सराहना की, जिसमें देश में चारा से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान करने और इसमें उत्पन्न होने वाली बाधाओं की समाप्ति के लिए और भविष्य की मांगों को पूरा करने के लिए सभी हितधारकों को एक मंच पर आमंत्रित करके चारे पर अपनी तरह की पहली राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। श्री रूपाला ने परिकल्पना की कि संगोष्ठी के परिणाम देश में चारे के सभी आयामों, इसकी उपलब्धता, पहुंच, नवाचार और स्थिरता की दिशा में आगे बढ़ने के उपाय प्रदान करेंगे।

इस कार्यक्रम में पशुपालन एवं चारा विकास से जुड़े विभिन्न हितधारकों की भागीदारी देखी गई, जिनमें राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, राष्ट्रीय बीज निगम, भारतीय चरागाह चारा अनुसंधान संस्थान, कृषि विकास सहकारी समिति लिमिटेड, नेशनल एग्रीकल्चरल कोऑपरेटिव फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के अधिकारी और राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के प्रतिनिधि और 250 से ज्यादा किसान/उद्यमी शामिल हैं।

पशुपालन और डेयरी विभाग '21वीं पशुधन संगणना में चरवाहों और उनके पशुधन की गिनती' पर एक कार्यशाला का आयोजन आज मध्य प्रदेश में कर रहा है

प्रविष्टि तिथि: 07 MAR 2024 4:50 PM by PIB Delhi

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के पशुपालन और डेयरी विभाग ने '21वीं पशुधन संगणना में चरवाहों और उनके पशुधन की गिनती पर एक कार्यशाला का आयोजन आज मध्य प्रदेश के इंदौर में किया। इस कार्यशाला का आयोजन पशुचारण, उनके आवास, विभिन्न क्षेत्रों में मार्ग आदि पर विचार करने और चरवाहों की सार्वभौमिक परिभाषा, एकत्र किए जाने वाले डेटा और डेटा एकत्र करने की पद्धति जैसे विभिन्न मुद्दों पर आम सहमति तक पहुंचने के लिए किया गया।

गुजरात, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर जैसे चरवाहों वाले राज्यों में, चरवाहों से संबंध रखने वाले गैर सरकारी संगठन जैसे, सहजीवनः पशुचारण केंद्र, रेगिस्तान संसाधन केंद्र आदि और चरवाहों से संबंधित विभिन्न सरकारी संगठन जैसे, खानाबदोशों और अर्ध–घुमंतू जनजातियों के लिए विकास और कल्याण बोर्ड, राष्ट्रीय वर्षा सिंचित क्षेत्र प्राधिकरण (एनआरएए), मध्य प्रदेश सरकार के जनजातीय अनुसंधान संस्थान आदि कार्यशाला में भाग ले रहे थे।

पशुपालन और डेयरी विभाग वर्ष 1919 से हर 5 साल में देश भर में पशुधन संगणना करता है। आखिरी पशुधन संगणना यानी 20वीं एलसी वर्ष 2019 में आयोजित की गई थी। 21वीं पशुधन संगणना वर्ष 2024 में होनी है। इस 21वीं पशुधन संगणना में पशुपालक और उनके पशुधन पर जानकारी एकत्र करने की मांग है।

पशुधन संगणना, पशुधन कल्याण कार्यक्रम की उचित योजना और निर्माण और इस क्षेत्र में और सुधार लाने के लिए के लिए डेटा का मुख्य स्रोत है। पशुधन संगणना में आम तौर पर सभी पालतू पशुओं की गणना, उनकी उम्र, लिंग तथा नस्ल के अनुसार किसी स्थान पर घरों, घरेलू उद्यमों/गैर–घरेलू उद्यमों के पास मौजूद जानवरों की विभिन्न प्रजातियों (मवेशी, भैंस, मिथुन, याक, भेड़, बकरी, सुअर, घोड़ा, टट्टू, खच्चर, गधा, ऊंट, कुत्ता, खरगोश और हाथी) पोल्ट्री पक्षी (मुर्गी, बत्तख और अन्य पोल्ट्री पक्षी) आदि की गणना शामिल है।

★★★★

नींद के पहाड़ों के पार
सोने का जागरण है,
मौत का
एक रंगीन हरण है,
रात के पहाड़ों के पार।

राम, यह पर्णकुटी छोड़ो।
चलो, उधर !

सीता–शमशेर बहादुर सिंह

डीएएचडी और यूएनडीपी ने वैक्सीन कोल्ड चेन प्रबंधन, क्षमता निर्माण और संचार योजना के डिजिटलीकरण के लिये एमओयू पर हस्ताक्षर किये

प्रविष्टि तिथि: 20 MAY 2024 8:18 PM by PIB Delhi

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने वैक्सीन कोल्ड चेन प्रबंधन, क्षमता निर्माण और संचार योजना के डिजिटलीकरण पर आज संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी), भारत के साथ एक सहमति ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किये।

एमओयू पर आज नयी दिल्ली, लोदी एस्टेट स्थित यूएनडीपी, भारत कार्यालय के ''वी द पीपल्स हॉल'' में पशुपालन और डेयरी विभाग में सचिव श्रीमती अलका उपाध्याय और भारत में यूएनडीपी की निवासी प्रतिनिधि सुश्री कैटलीन वीसेन के बीच हस्ताक्षर किये गये। इस रणनीतिक भागीदारी का उद्देश्य भारत में वैक्सीन कोल्ड चेन प्रबंधन, क्षमता निर्माण और संचार योजना के डिजिटलीकरण को बढ़ाना है।

श्रीमती अलका उपाध्याय ने बैठक को संबोधित करते हुये टीकाकरण का दायरा और पहुंच बढ़ाने के लिये विश्वसनीय

कोल्ड चेन उपकरणों से लैस मजबूत और सक्षम आपूर्ति श्रृंखला के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, 142.86 करोड़ लोगों, 53.57 करोड़ खेतीहर पशुओं और 85.18 करोड़ कुक्कुट आबादी के साथ भारत में बड़ी जनसंख्या और पशुओं की संख्या को देखते हुए सभी तरह की पशु चिकित्सा सेवाओं को किसानों के दरवाजे तक पहुंचाना और इस बड़ी संख्या की पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना एक चुनौती है।

उन्होंने आगे बताया, ''समूची वैक्सीन स्टॉक प्रबंधन प्रणाली के डिजिटलीकरण और वैक्सीन स्टॉक और उसके प्रवाह तथा भंडारण तापमान के बारे में वास्तविक समय की जानकारी उपलब्ध होने के साथ ही बुनियादी सुविधाओं, प्रबंधन सूचना प्रणाली और मानव संसाधनों की समस्याओं का प्रबंधन करने से वैक्सीन आपूर्ति में आने वाली असमानताओं को दूर किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि वैक्सीन कोल्ड चेन प्रबंधन प्रक्रिया की यूएनडीपी द्वारा विकसित पशु वैक्सीन आसूचना नेटवर्क (एवीआईएन) के माध्यम से आधुनिक प्रौद्योगिकी और कृत्रिम मेधा की मदद से निगरानी की जायेगी।

यूएनडीपी की भारत प्रतिनिधि सुश्री कैटलीन वीसेन ने एमओयू पर हस्ताक्षर के दौरान कहा, ''नई पशुजन्य बीमारियों के प्रकोप और जलवायु परिवर्तन के बीच पशुओं और उनके पालन पोषण में लगे समुदायों में खतरा बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा कि पशुपालन और डेयरी विभाग के साथ इस भागीदारी के माध्यम से यूएनडीपी भारत की पहली पशु वैक्सीन आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन प्रणाली को समर्थन और मजबूती देगा। इससे समुदायों और जानवरों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी और मानव–पशु–पर्यावरण के बीच जुड़ाव में आने वाले खतरे को कम किया जा सकेगा।

डीएएचडी में संयुक्त सचिव (एलएच), श्रीमती सरिता चौहान ने इस सहयोग के उद्देश्यों के बारे में कहा देशभर में उपलब्ध विस्तृत शीतगृह श्रृंखला सुविधाओं की वास्तविक समय में निगरानी का जरूरी लेकिन कठिन कार्य यूएनडीपी द्वारा विकसित कोल्ड चेन निगरानी प्रणाली के माध्यम से आधुनिक प्रौद्योगिकी और कृत्रिम मेधा की मदद से ही संभव हो सकेगा। इससे विभाग को देशभर में सही मात्रा, सही गुणवत्ता, सही समय और सही तापमान पर सहायक निरीक्षण के साथ वैक्सीन प्रबंधन और वितरण में मदद मिलेगी।

विशेष बात यह है कि यूएनडीपी और डीएएचडी इसके केन्द्र में एकमुश्त स्वास्थ्य दृष्टिकोण के साथ पशुओं की स्वास्थ्य मजबूती के लिये मिलकर काम करेंगे। यह कदम यूएनडीपी भारत द्वारा कोल्ड चेन डिजिटलीकरण और दूरस्थ तापमान निगरानी के लिये डिजिटल भविष्य के निर्माण में योगदान करेगा। इससे यह सुनिश्चित हो सकेगा कि वैक्सीन को 2 से 8 डिग्री सेल्सियस की निर्धारित सीमा के भीतर उपयुक्त तापमान में रखा जा सकेगा जो कि टीकाकरण कवरेज और पहुंच बढ़ाने के लिये महत्वपूर्ण है। वर्तमान में पशुपालन और डेयरी विभाग पशुओं में खुर और मुंहपका बीमारी (एफएमडी) रोकथाम के लिये इस वर्ष करीब 900 करोड़ रूपये की वैक्सीन आपूर्ति कर रहा है और इसके पीछे उसका उद्देश्य 50 करोड़ बड़े पशुओं और 20 करोड़ छोटे पशुओं को एफएमडी टीकाकरण कार्यक्रम के दायरे में लाना है।

इस एमओयू के माध्यम से पशु पालन व्यवहारों में सीईएएच का क्षमता विस्तार करने के लिये तकनीकी सहायता भी उपलब्ध कराई जायेगी। एमओयू के अन्य पहलुओं में योजना में समर्थन और प्रभावी तथा समावेशी पशु बीमा कार्यक्रम तैयार करना, विभाग के लिये एक प्रभावी संचार योजना बनाना तथा उसका क्रियान्वयन शामिल है जो कि विभाग की गतिविधियों के बेहतर प्रसार और पहुंच को सुनिश्चित करेगा। यह भागीदारी पशुपालन क्षेत्र के हितधारकों की तकनीकी जानकारी और क्षमताओं में सुधार के लिये कौशल विकास प्रयासों और विस्तार सेवाओं पर भी काम करेगी।

यह सहयोग यूएनडीपी की वैश्विक विशेषज्ञता और डीएएचडी के अधिदेश का लाभ उठाते हुये पशुओं के स्वास्थ्य, उनके पालन के बेहतर व्यवहारों को अपनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। डीएएचडी और यूएनडीपी दोनों का लक्ष्य मिलकर देश में पशु स्वास्थ्य और कल्याण प्रबंधन के लिये एक मजबूत, सक्षम और समावेशी ढांचा तैयार करना है।

केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने योग के महत्व पर बल दिया और शारीरिक व मानसिक आरोग्य के लिए दैनिक जीवन में योग को अपनाने का सुझाव दिया

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 का भव्य कार्यक्रम कृषि भवन में आयोजित

प्रविष्टि तिथि: 21 JUN 2024 1:38 PM by PIB Delhi

केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी तथा पंचायती राज मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह आज कृषि भवन में 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के भव्य कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। अपने संबोधन के दौरान, केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने योग के महत्व पर बल दिया और शारीरिक व मानसिक आरोग्य के लिए दैनिक जीवन में योग को अपनाने का सुझाव दिया।

इस कार्यक्रम में मत्स्यपालन विभाग के सचिव श्री अभिलक्ष लिखी, पशुपालन और डेयरी विभाग की सचिव श्रीमती अलका उपाध्याय, मत्स्यपालन विभाग के संयुक्त सचिव श्री सागर मेहरा और संयुक्त सचिव श्रीमती नीतू प्रसाद, मत्स्यपालन विभाग के आर्थिक सलाहकार श्री गौरव कुमार और अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के मत्स्यपालन विभाग ने नई दिल्ली में पूरे हर्षोल्लास के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया, जिसमें तमाम लोगों ने हिस्सा लिया। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस ''स्वयं और समाज के लिए योग'' विषय पर केंद्रित है, जिसमें व्यक्तिगत और सामुदायिक आरोग्य, दोनों के लिए योगाभ्यास के लाभों पर बल दिया गया है।

★★★★

विश्व जूनोसिस दिवस पर जन-जागरूकता बढ़ानाः सभी पशु-रोग जूनोटिक नहीं होते

प्रविष्टि तिथिः 07 JUL 2024 1:29 PM by PIB Delhi

विश्व जूनोसिस दिवस के उपलक्ष्य में, पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा विश्व जूनोसिस दिवस की पूर्व संध्या पर पशुपालन और डेयरी सचिव (एएचडी) की अध्यक्षता में एक बातचीत सत्र का आयोजन किया गया।

जूनोसिस संक्रामक रोग हैं इनका संक्रमण जानवरों से मनुष्यों में हो सकता है, जैसे रेबीज, एंथ्रेक्स, इन्फ्लूएंजा (एच1 एन1 और एच5 एन1), निपाह, कोविड–19, ब्रुसेलोसिस और तपेदिक। ये रोग बैक्टीरिया, वायरस, परजीवी और कवक फफूंद सहित विभिन्न रोगजनकों के कारण होते हैं।

यद्यापि, सभी पशु रोग जूनोटिक नहीं होते हैं। कई बीमारियाँ पशुधन को प्रभावित करती हैं किन्तु मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा नही हैं। ये गैर–जूनोटिक रोग प्रजाति–विशिष्ट हैं और मनुष्यों को संक्रमित नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए खुरपका और मुँहपका रोग, पी.पी.आर., लम्पी स्किन डिजीज, क्लासिकल स्वाइन फीवर और रानीखेत रोग इसमें शामिल हैं। प्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य रणनीतियों और पशुओं के प्रति अनावश्यक भय और दोषारोपण को दूर करने लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि कौन सी बीमारियाँ जूनोटिक हैं।

भारत पशुधन की सबसे बड़ी आबादी से सम्पन्न है, जिसमें 536 मिलियन पशुधन और 851 मिलियन मुर्गी हैं, जो क्रमशः वैश्विक पशुधन और मुर्गी आबादी का लगभग 11% और 18% है। इसके अतिरिक्त, भारत दूध का सबसे बड़ा उत्पादक और वैश्विक स्तर पर अंडों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।

अभी कुछ समय पहले, केरल के त्रिशूर जिले के मदक्कथरन पंचायत में अफ्रीकी स्वाइन फीवर (एएसएफ) की पुष्टि हुई थी। एएसएफ की पुष्टि सर्वप्रथम भारत में मई 2020 में असम और अरुणाचल प्रदेश में की गई थी। तब से, यह बीमारी देश के लगभग 24 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में फैल चुकी है। विभाग ने वर्ष 2020 में एएसएफ के नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना तैयार की। वर्तमान स्थिति के लिए, राज्य पशुपालन विभाग द्वारा त्वरित प्रतिक्रिया दलों का गठन किया गया है, और 5 जुलाई, 2024 को उपरिकेंद्र के 1 किमी के दायरे में सूअरों को न्यूनीकरण के लिए मारने का कार्य किया गया। कुल 310 सूअरों को मारकर उन्हें गहरे खोद कर दफना दिया गया। कार्य योजना के अनुसार आगे की निगरानी उपरिकेंद्र के 10 किमी के दायरे में की जानी है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि एएसएफ जूनोटिक नहीं है और मनुष्यों में इसका संक्रमण नहीं हो सकता है। वर्तमान में, एएसएफ के लिए कोई टीका नहीं है।

जूनोटिक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण टीकाकरण, उत्तम स्वच्छता, पशुपालन पद्धति और रोगवाहक नियंत्रण पर निर्भर करता है। वन हेल्थ विजन के माध्यम से सहयोगात्मक प्रयास, जो मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य के परस्पर महत्वपूर्ण संबंध को दर्शाता है। पशु चिकित्सकों, चिकित्सा पेशेवरों और पर्यावरण वैज्ञानिकों के बीच सहयोग जूनोटिक रोगों को व्यापक रूप से संबोधित करने के लिए आवश्यक है।

जूनोटिक रोगों के जोखिम को कम करने के लिए, पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने एनएडीसीपी के तहत गोजातीय बछड़ों के ब्रूसेला टीकाकरण के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया है और एएससीएडी के तहत रेबीज टीकाकरण किया गया है। विभाग आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण पशु रोगों के लिए एक व्यापक राष्ट्रव्यापी निगरानी योजना भी कार्यान्वित कर रहा है। इसके अतिरिक्त, वन हेल्थ विजन के तहत, राष्ट्रीय संयुक्त प्रकोप प्रतिक्रिया दल (एनजेओआरटी) की स्थापना की गई है, जिसमें स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, आईसीएमआर, पशुपालन और डेयरी विभाग, आईसीएआर और पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के विशेषज्ञ शामिल हैं। यह स्वास्थ्य दल अत्यधिक रोगजनक एवियन इन्फ्लूएंजा (एचपीएआई) के सहयोगी प्रकोप जांच में सक्रिय रूप से जुड़ा रहा है।

जागरूकता रोग की शुरुआती पहचान, रोकथाम और नियंत्रण में सहायक है, जिससे अंततः सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है। जूनोटिक और गैर–जूनोटिक रोगों के बीच के अंतर के बारे में जनता को शिक्षित करने से अनावश्यक भय को दूर करने में सहयोग मिलता है और पशु स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए अधिक सूचित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है।

यद्यपि जूनोटिक रोग महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिम की स्थिति को दर्शाते हैं, इसकी पहचान करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि कई पशुधन रोग गैर–जूनोटिक हैं और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करते हैं। इस अंतर को समझकर और उचित रोग प्रबंधन पद्धितयों पर ध्यान केंद्रित करके, हम पशु और मनुष्य दोनों के स्वास्थ्य को सुनिश्चित कर सकते हैं, जिससे सभी के लिए एक सुरक्षित और अधिक सुरक्षित पर्यावरण में योगदान मिल सके।

विश्व जूनोसिस दिवस लुई पाश्चर के सम्मान में प्रतिवर्ष मनाया जाता है, जिन्होंने 6 जुलाई, 1885 को एक जूनोटिक बीमारी, रेबीज का पहला सफल टीका लगाया था। यह दिन जूनोसिस के बारे में जागरूक करने, साथ ही ऐसी बीमारियाँ जो जानवरों से मनुष्यों में फैल सकती हैं और इनके निवारक और नियंत्रण उपायों को बढ़ावा के प्रति समर्पित है।

पशुओं में टीकाकरण कवरेज बढ़ाने, उत्पादकता में सुधार लाने और चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता: सुश्री अलका उपाध्याय

डॉ. हिमांशु पाठक ने डीएएचडी और आईसीएआर के बीच सहयोग के महत्व पर बल दिया

बैठक का उद्देश्य पशुधन क्षेत्र के विकास के लिए नवीन अनुसंधान, प्रभावी नीतियों और व्यापक कार्य योजनाओं की जरूरत पर बल देना

प्रविष्टि तिथि: 08 AUG 2024 2:04 PM by PIB Delhi

पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) की सचिव सुश्री अलका उपाध्याय और कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डीएआरई) के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने संयुक्त रूप से एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की। यह सत्र राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र (एनएएससी) परिसर में आयोजित किया गया था, जिसमें पशुपालन और डेयरी विभाग तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

सत्र में सुश्री अलका उपाध्याय ने कहा कि पशु उत्पादकता में सुधार, चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने और टीकाकरण कवरेज को बढ़ाने के लिए एक समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन उद्देश्यों को प्राप्त करने और पशुधन क्षेत्र पर बीमारियों के प्रभाव को कम करने के लिए पशुपालन और डेयरी विभाग तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है। उन्होंने डीकार्बोनाइजेशन प्रयासों के हिस्से के रूप में पशुधन एंटरिक किण्वन से मीथेन उत्सर्जन को रोकने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला।

डॉ. हिमांशु पाठक ने पशुपालन और डेयरी विभाग तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के बीच सहयोग के महत्व पर जोर दिया। इस बैठक में पशुपालन और डेयरी क्षेत्र के प्रमुख मुद्दों पर विचार करने के लिए समन्वित और व्यापक दृष्टिकोण बनाने की जरूरत बताई गई।

बैठक में कई प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया:

- उत्पादकता और लचीलापन बढ़ाने के लिए पशुओं की आनुवंशिक क्षमता को बढ़ाने की पहल।
- पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता के लिए आवश्यक उच्च गुणवत्ता वाले चारे की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने की रणनीति।
- पशुओं को पुरानी और नई बीमारियों से दूर रखने के लिए नई पीढ़ी के टीकों सहित प्रभावी टीकों का विकास।
- नीति और हस्तक्षेप रणनीति तैयार करने के लिए पशुधन क्षेत्र द्वारा सामना की जाने वाली बीमारियों और अन्य चुनौतियों के आर्थिक प्रभाव पर अनुसंधान।
- रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) की निगरानी और उससे निपटने के लिए निगरानी प्रणाली को मजबूत करना।

बैठक का समापन पशुपालन और डेयरी विभाग तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के बीच सहयोग को और मजबूत करने की प्रतिबद्धता के साथ हुआ। सत्र का साझा लक्ष्य पशुधन क्षेत्र के विकास के लिए नवीन अनुसंधान, प्रभावी नीतियों और व्यापक कार्य योजनाओं को तैयार करना रहा।

★★★★

पशुपालन और डेयरी विभाग ने स्वच्छता की शपथ के साथ स्वच्छता ही सेवा अभियान की शुरूआत की है, इसका विषय है 'स्वभाव स्वच्छता– संस्कार स्वच्छता'

प्रविष्टि तिथि: 18 SEP 2024 6:36 PM by PIB Delhi

पशुपालन और डेयरी विभाग ने स्वच्छता और सफाई के प्रति प्रतिबद्धता की भावना को बढ़ावा देने के लिए 17 सितम्बर को स्वच्छता की शपथ लेकर स्वच्छता ही सेवा अभियान की शुरुआत की है। इसका विषय है 'स्वभाव स्वच्छता–संस्कार स्वच्छता'।

यह अभियान स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसे 2014 में देश में स्वच्छता के प्रति व्यवहार परिवर्तन के अभियान के रूप में शुरू किया गया था। स्वच्छता ही सेवा अभियान की पूर्व गतिविधि के रूप में विभाग ने सभी अधिकारियों को स्वच्छता किट प्रदान की।

विभाग ने अभियान में जन–भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए नई दिल्ली के कापसहेड़ा में पशु संगरोध प्रमाणन सेवा

(एक्यूसीएस) परिसर में पशुपालन विभाग में सचिव श्रीमती अलका उपाध्याय के नेतृत्व में मुख्यालय और पशुपालन

विभाग के अधिकारियों के साथ–साथ एक्यूसीएस के अन्य हितधारकों के साथ स्वच्छता अभियान शुरू किया।

इसी तरह का स्वच्छता अभियान दिल्ली दुग्ध योजना (डीएमएस) परिसर, नई दिल्ली में भी पशुपालन विभाग में अतिरिक्त सचिव सुश्री वर्षा जोशी के नेतृत्व में चलाया गया।

विभाग देश भर में अपने 32 क्षेत्रीय कार्यालयों में भी ''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान के तहत इसी तरह की गतिविधियों का आयोजन करेगा और अभियान अवधि के दौरान जन–भागीदारी सुनिश्चित करेगा।

पशुपालन और डेयरी विभाग 'स्वच्छ भारत मिशन' के लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध है।

★★★★

पशुपालन और डेयरी विभाग में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

प्रविष्टि तिथि: 01 OCT 2024 8:39 PM by PIB Delhi

पशुपालन और डेयरी विभाग (मुख्यालय) में दिनांक 14 से 28 सितम्बर 2024 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह और राज्य मंत्री प्रो. एस.पी. सिंह बघेल की ओर से संयुक्त संदेश जारी कर सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिंदी में करने की अपील की गई।

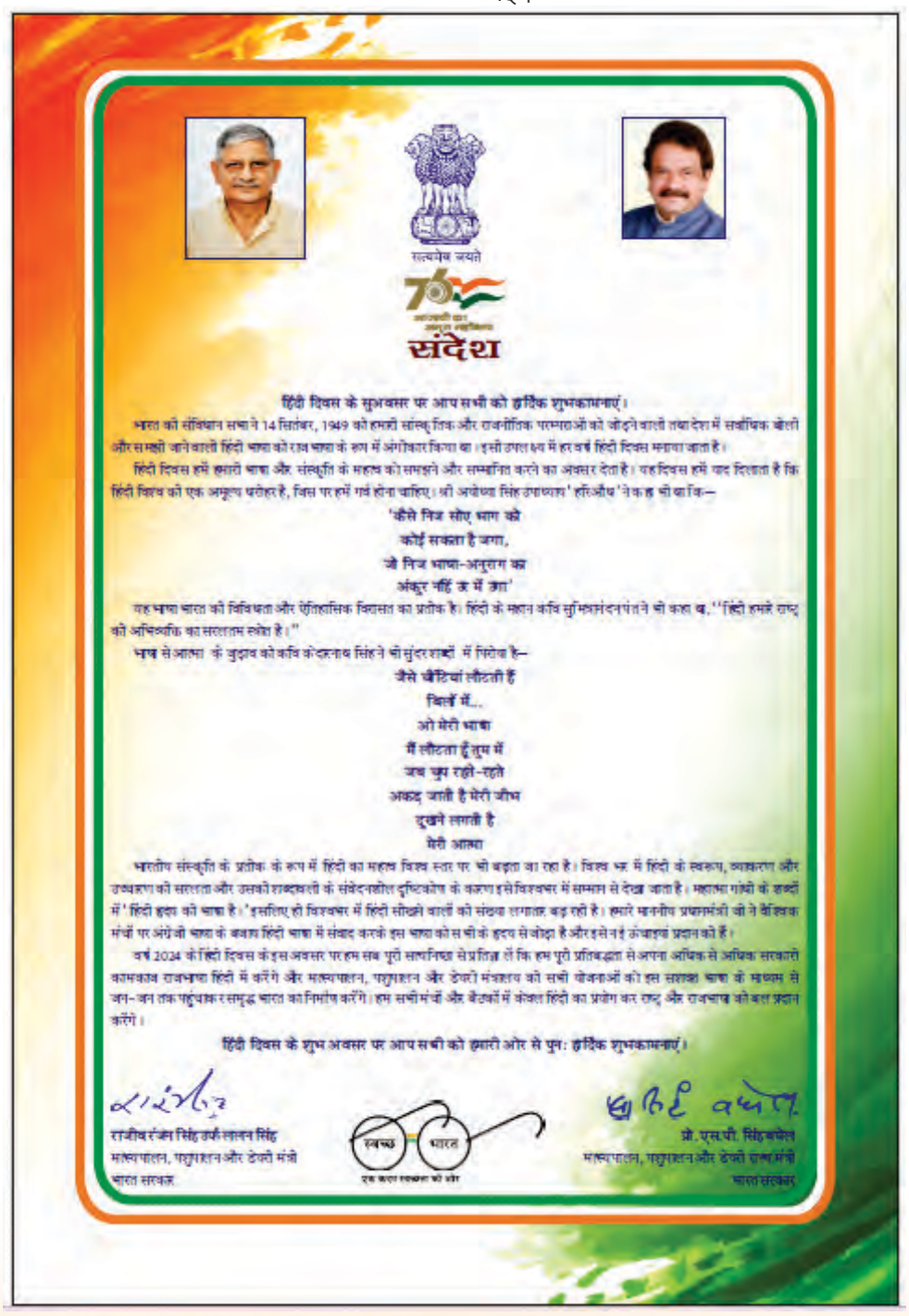

इस दौरान सचिव सुश्री अलका उपाध्याय के अनुमोदन से मुख्यालय में निबंध व काव्य–पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें विभाग के सभी वर्ग के कार्मिकों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। निबंध के लिए 'भविष्य दर्पण–भारत/2047 (मेरी दृष्टि से)' विषय का चयन किया गया और इसमें मुख्यालय के कुल 24 कार्मिकों ने भाग लिया। काव्य–पाठ प्रतियोगिता के लिए कार्मिकों में अति उत्साह देखा गया और इसकी अध्यक्षता संयुक्त सचिव (राजभाषा) द्वारा की गई। काव्य–पाठ में प्रतियोगियों को स्वरचित कविता और किसी भी कवि की कविता के पठन की छूट दी गई। इस बार के निर्णायक मंडल में राजभाषा से जुड़े गणमान्य व्यक्तियों की सहभागिता रही। काव्य–पाठ के निर्णायक मंडल के लिए राजभाषा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय और राजभाषा संवर्ग से सदस्यों को आमंत्रित किया गया। दोनों ही प्रतियोगिताओं में महिला कार्मिकों की सहभागिता उत्साहवर्धक रही। हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत विभाग के अधिकारियोंध कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया और इसमें अधीनस्थ कार्यालयों को भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जोड़ा गया।

इसके साथ–साथ देश के विभिन्न स्थानों में स्थित 33 अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इन कार्यालयों में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी के प्रति उत्साह देखा गया और सभी ने इसमें सउल्लास भाग लिया।

पशुपालन और डेयरी विभाग में सभी अधीनस्थ कार्यालयों के साथ मिलकर अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। सभी ने अधिक से अधिक काम हिंदी में करने और राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रण लिया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन शीघ्र ही किया जाएगा जिसमें केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह के कर कमलों से सभी विजयी प्रतियोगियों को प्रशस्ति पत्र एवं नकद पुरस्कार वितरित किए जाएंगे। इसी समारोह में विभागीय राजभाषा वार्षिक पत्रिका 'सुरभि' के द्वितीय अंक का विमोचन भी किया जाएगा।

★★★★

भू–लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला–स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

भारत भारती– मैथिलीशरण गुप्त

मुख्यालय के विभिन्न कार्यकलाप

अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण

'सुरभि' के प्रथम अंक का विमोचन एवं सलाहकार समिति की बैठक

दिनांक 8 नवंबर 2023 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में मंत्रालय की संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति की दूसरी बैठक आयोजित की गई।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024–25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **100%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **90%** के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **55%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	**75%**	**50%**	**30%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70%**	**60%**	**30%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**40%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**65%**	**55%**	**30%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	**50%**	**50%**	**50%**
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	**100%**	**100%**	**100%**
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	**100%**	**100%**	**100%**
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(कार्यालयों का प्रतिशत)			
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**40%**	**30%**	**20%**
		(न्यूनतम अनुभाग)		
		सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।		

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
पशुपालन और डेयरी विभाग
भारत सरकार